Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

(1)
जन्म जिला आरा शुभ सुन्दर चेनारी ग्राम,
सम्प्रति परिवार काशी धाम में आबाद है।
अग्रवाल कुल के दिवाकर प्रकाशक हैं,
भक्तों में जैसे सुन्दर भक्त प्रह्लाद हैं।
भोजपुरी भाषा के सच्चे समुद्धारक,
दर्शन से जिनके सदा मिटते विषाद हैं।
ऐसे धर्म-प्राण सहकारिता उदारता के,
अमर स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद हैं॥

(2)
धन्य हैं पिताजी बाबू श्रीरामधनी लाल,
जिनके प्रसाद-रूप ठाकुर प्रसाद हैं।
जिनकी प्रथम पत्नी से चार रत्न प्राप्त हुए,
गणेश, पुरुषोत्तम, मुकुन्द और कैलाश हैं।
पत्नी द्वितीया जिनकी उनसे भी चार पुत्र,
द्वारिका, कन्हैया, नारायण, दिनेश हैं।
छोड़ गये पीछे भरा-पूरा परिवार सुन्दर,
पिता के प्रशिक्षण निर्देशन में लीन हैं॥

(3)
ऐसे पितृ-भक्त सभी सेवा-परायण हैं,
ठाकुर प्रसादजी की महिमा दिखाई है।
बड़े-बड़े पण्डित मनीषियों का वरद हस्त,
जिनकी कृपा से आज कीर्ति छवि छायी है।
जब तक रहेंगे सूर्य-चन्द्र नभ-मण्डल में,
तब तक रहेगा नाम बजती बधाई है।
ठाकुर प्रसादजी का सुन्दर परिवार देखि,
हर्षित शिवदेवगण दुन्दुभि बजाई है॥

दोहा
अनुदिन नित बढ़ता रहे, श्री ठाकुर परिवार।
प्रभु से 'श्रीशिवदत्त' यह बिनवत बारहिं बार॥

■

स्व० बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

एक परिचय

धर्मप्राण स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

औद्योगिक संस्थानों की समुन्नति के सन्दर्भ में जिस प्रकार यशस्वी उद्योगपतियों के नाम अविस्मरणीय हैं, ठीक उसी प्रकार जन-साहित्य के प्रशस्त प्रकाशन से सम्बन्धित विमल व्यवसाय में स्व. बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त का नाम शिक्षित-समुदाय के हृदय-पटल पर अंकित है।

भोजपुरी भाषा के सरस प्रकाशन को जन-जन तक पहुँचाने का एक मात्र श्रेय बाबू साहब को ही है। इनके समान सम्पूर्ण भारत का कोई दूसरा भोजपुरी साहित्य का प्रकाशक दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः इस सन्दर्भ में स्व0 बाबू साहब को यदि भोजपुरी साहित्य का समुद्धारक कहा जाये, तो सम्भवतः कोई अति-शयोक्ति न होगी। व्यावहारिकता, उदारता एवं सौजन्यता की तो आप प्रतिमूर्ति ही थे।

आप अपने पीछे पुत्रों एवं पौत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। आप ही के पूर्व प्रशिक्षण एवं निर्देशानुसार आपके द्वारा संस्थापित व्यापारिक संस्थान को उत्तराधिकारी कुशलता के साथ संचालित कर रहे हैं। हम इस परिवार तथा संस्थान की सुख-समृद्धि हेतु जगज्जननी माँ से अनवरत प्रार्थना करते हैं।

-सम्पादक

■

वर्ष में पड़ने वाले विभिन्न योगों के फल

1. **सर्वार्थसिद्धि योग**–ये समस्त कार्यों के लिए सिद्ध माने गये हैं।
2. **अमृत सिद्धि योग**–ये वार और नक्षत्र के योग से बनते हैं, ये सभी कार्यों के लिए प्रशस्त हैं किंतु रविवार को पंचमी, सोमवार को षष्ठी, मंगल को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी से ये अमृत सिद्धि योग, "**विषयोग**" हो जाते हैं।
3. **द्विपुष्कर योग**–ये भी तिथि-नक्षत्र एवं वार के संयोग से बनते हैं, ये योग लाभ और हानि में दो गुना फल देते हैं।
4. **त्रिपुष्कर योग**–ये भी द्विपुष्कर के अनुसार बनते हैं तथा लाभ और हानि में तिगुना फल देते हैं।
5. **राजयोग**–ये भी वार, तिथि, नक्षत्र के योग से बनते हैं। ये धार्मिक, मांगलिक एवं पौष्टिक कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं।
6. **व्यतिपात योग**–ये सभी शुभ कार्यों के लिए वर्जित हैं।
7. **रवि योग**–यह समस्त कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं। ये सूर्य नक्षत्र एवं दैनिक नक्षत्र के योग से बनते हैं।

शुभ कार्यों में वर्जित समय विचार

देवशयन–आषाढ़ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते हैं। इन्हें देवशयन या चातुर्मास कहते हैं, इन दिनों में विवाह, उपनयन, गृहारम्भ, शान्ति, पौष्टिक कर्म, देव-स्थापना आदि का निषेध है।

होलाष्टक–होली से 8 दिन पूर्व (फाल्गुन शुक्ल अष्टमी) से होलाष्टक माना गया है। इसमें कुछ क्षेत्रों में (सतलज, रावी, व्यास नदियों के तथा पुष्कर सरोवर के तटवर्ती भाग में) विवाहादि मांगलिक कार्य वर्जित है। अन्य क्षेत्रों में वर्जित नहीं है।

गुरु एवं शुक्र के अस्त तथा खरमास में वर्जित कार्य–विवाह, मुण्डन (चौल), उपनयन, कर्णछेदन, दीक्षा ग्रहण, गृह प्रवेश, द्विरागमन, वधू प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, कुँआ, जलाशय खोदना, चातुर्मास उत्सर्ग इत्यादि कृत्य वर्जित हैं।

भद्रा दोष–विवाह, गृहारम्भ, गृह प्रवेश तथा मांगलिक कार्य वर्जित हैं, पूर्वार्ध दिन की भद्रा रात में तथा उत्तरार्ध की भद्रा दिन में शुभ कार्य के लिए मान्य है।

किस माला से जाप करें

रुद्राक्ष की माला–श्रीगायत्री, श्रीदुर्गा, श्रीशिव जी, श्रीगणेश जी, श्रीकार्तिकेय, पार्वती जी।

तुलसी की माला–श्रीराम, श्रीकृष्ण, सूर्यनारायण, वामन, श्रीनृसिंह जी।

स्फटिक की माला–श्रीदुर्गा जी, श्रीसर-स्वती, श्रीगणेश जी।

सफेद चन्दन की माला–सभी देवी-देवताओं का जाप कर सकते हैं।

लाल चन्दन–श्रीदुर्गा जी।

कमलगट्टे की माला–श्रीलक्ष्मी जी।

हल्दी माला–श्रीबगलामुखी जी।

- **भगवान् को चढ़ने वाला पूजा अवशेष सामान-गंगा, आदि पवित्र नदियों में नहीं डालना चाहिए। ऐसा करने से वे देवी देवता रुष्ट होते हैं।**
- **भगवती लक्ष्मी आदि देवताओं का वास वहीं होता है जहाँ स्वच्छता व श्रद्धा होती है, अतः अपनी उन्नति व सुख के लिये अपने आस-पास पेड़-पौधे लगाये व सफाई का ध्यान रखें।**
- **व्यापारिक उन्नति के लिये अपने व्यवसाय में कुछ नयापन व गुणवत्ता पर ध्यान दें।**
- **किसी भी प्रकार के सट्टा-जूआ व्यापार व बेइमानी से पूँजी, बुद्धि विवेक व व्यापार को नष्ट कर देता है।**

●

महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

1. पूजागृह में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालिग्राम का पूजन नहीं करना चाहिये।
2. घर में 9 इंच (22 सेंटीमीटर) से छोटी देव-प्रतिमा होनी चाहिये। इससे बड़ी प्रतिमा घर में शुभ नहीं होती है, उसे मंदिर में रखना चाहिये।
3. परिक्रमा देवी की एक बार, सूर्य की सात बार, गणेश की तीन बार, विष्णु की चार बार तथा शिव की आधी परिक्रमा करनी चाहिए।
4. आरती करते समय भगवान् विष्णु के समक्ष बारह बार, सूर्य के समक्ष सात, दुर्गा के समक्ष नौ, शंकर के समक्ष ग्यारह और गणेश के समक्ष चार बार आरती घुमानी चाहिए।
5. पूजा करते समय केवल भूमि पर न बैठें। आसन जरूर बिछावें।
6. शिलान्यास सर्वप्रथम आग्नेय दिशा में होना चाहिये। शेष निर्माण प्रदक्षिण-क्रम से करना चाहिये। मध्याह्न, मध्य रात्रि और सन्ध्याकाल में नींव न रखें।
7. पूर्व, उत्तर और ईशान दिशा में नीची भूमि सबके लिये अत्यंत लाभप्रद होती है। अन्य दिशाओं में नीची भूमि सबके लिये हानिकारक होती है।
8. घर के उत्तर प्लक्ष (पाकड़), पूर्व में वटवृक्ष, दक्षिण में गुलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष शुभप्रद होता है। पेड़ की छाया घर पर नहीं पड़नी चाहिये।
9. ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी-ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिये। एक मकान की सामग्री को दूसरे मकान में लगाना अत्यंत हानिकारक है।
10. सोने के समय सदा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर सिर रखना चाहिये।
11. प्रतिदिन माथे पर तिलक, चंदन लगाकर ही कार्य के लिये निकलें।

विक्रम संवत् के अनुसार बारह मासों के नाम

1. चैत्र, 2. वैशाख, 3. ज्येष्ठ, 4. आषाढ़, 5. श्रावण, 6. भाद्रपद (भादों), 7. आश्विन (कुवार), 8. कार्तिक, 9. मार्गशीर्ष (अगहन), 10. पौष, 11. माघ, 12. फाल्गुन।

पक्ष क्या है

विक्रम संवत् के हर मास (चंद्रमास) में दो पक्ष होते हैं—

(1) **शुक्ल पक्ष (सुदी)**–अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष कहते हैं। यानि अमावस्या के बाद बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष का सूचक है।

(2) **कृष्ण पक्ष (बदी)**–पूर्णिमा के बाद से अमावस्या तक की तिथियों को कृष्ण पक्ष कहते हैं। यानि पूर्णिमा के बाद घटता हुआ चन्द्रमा अमाव- स्या तक कृष्ण पक्ष का सूचक है।

पूरे मास की तिथियों के नाम

(1) प्रतिपदा, (2) द्वितीया, (3) तृतीया, (4) चतुर्थी, (5) पंचमी, (6) षष्ठी, (7) सप्तमी, (8) अष्टमी, (9) नवमी, (10) दशमी, (11) एकादशी, (12) द्वादशी, (13) त्रयोदशी, (14) चतुर्दशी, (15) पूर्णिमा एवं (30) अमावस्या।

नोट–पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से चतुर्दशी तक पूर्वानुसार तिथियों के नाम एवं अंक चलते हैं। अमावस्या को 30 लिखते हैं।

राशियों के आराध्य देव

मेष-श्री गजानन। **वृष**-कुलस्वामिनी।
मिथुन-कुबेर। **कर्क**-शंकर जी।
सिंह-सूर्य। **कन्या**-कुबेर।
तुला-कुलस्वामिनी। **वृश्चिक**-गणपति।
धनु-दत्तात्रेय। **मकर**-शनि, हनुमान्।
कुंभ-शनि, हनुमान्। **मीन**-दत्तात्रेय।

राशिबोधक चक्र

मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
वृष	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फ	ढ	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

नोट : जिसके नाम के पहले अक्षर जिन वर्गों में मिलेंगे वही उनकी राशि होगी।

स्मार्त एवं वैष्णव

स्मार्त कौन–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, गृहस्थ जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक हैं, ये सभी स्मार्त हैं। पंचदेव विष्णु, शिव, गणेश, शक्ति तथा सूर्य कहलाते हैं।

वैष्णव कौन–जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख, चक्र अंकित करवाये हैं, साधु संन्यासी, विधवा स्त्री, विष्णु उपासक को ही शास्त्र में वैष्णव कहा गया है।

चार अनबूझ मुहूर्त

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. अक्षय तृतीया, 3. दशहरा, 4. दीपावली (सायंकाल के बाद दीप प्रकाश में)। उपरोक्त मुहूर्तों को बोल चाल की भाषा में अनबूझ मुहूर्त कहते हैं। इन मुहूर्तों में कोई भी काम शुरू करने पर विजय प्राप्त होती है। लेकिन विवाह आदि कार्य के लिए पञ्चाङ्ग में दिये मुहूर्तों को ही स्वीकार करें।

●

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

नवग्रह पीड़ा (रोग) निवारणार्थ यन्त्र-मन्त्र-रत्न एवं जड़ी धारण तथा व्यावसायिक वस्तुएँ

सूर्य

6	1	8
7	5	3
2	9	4

सूर्य की पीड़ा से – बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बिमारियाँ, आँखों की बिमारी, चर्मरोग, घाव लगना, दौरे पड़ना तथा हिस्टीरिया आदि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
तान्त्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।
जप संख्या—7 हजार। कलियुग में जप संख्या—28 हजार।
मध्य भाग्य, वर्तुल मण्डल, अंगुल 12, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण सिंह राशि का स्वामी।
वाहन—सप्ताश्व। समिधा—मदार।
दान-द्रव्य—माणिक्य, सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूँगा लाल, गौ लाल तथा चन्दन लाल।
दान का समय—रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल।
धारण रत्न—माणिक्य 3 या 4 रत्ती।
उपरत्न—तामड़ा या कण्टकिज धारण करें। इसके अभाव में सूर्य का यन्त्र अथवा बिल्व वृक्ष की जड़ गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ—राज्य प्रशासनिक कार्य, इमारती लकड़ी, सोना, रूई, अनाज।
व्रत उपवास— सूर्यदेव की प्रसन्नता हेतु रविवार का व्रत करें तथा इसमें लाल फूल अर्पित करना चाहिए।
विशेष जानकारी के लिए 'रविवार व्रत कथा' मँगाकर पढ़ें।

चन्द्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

चन्द्र की पीड़ा से—अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंढक, बुखार, गठिया, मानसिक असन्तुलन, पेट की बिमारियाँ, जलघात तथा जानवरों का हमला इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र—ॐ इमं देवा ऽअसपत्न ऽं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रम मुष्यै विश एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ऽं राजा॥
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।
जप संख्या— 11 हजार। कलियुग में जप संख्या— 44 हजार।
अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल 4, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण। कर्क राशि का स्वामी। वाहन—हरिण। समिधा—पलास।
दान-द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, बांस की डलिया, सफेद बैल तथा सफेद चन्दन।
दान का समय— सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल।
धारण रत्न— मोती 4-5 रत्ती।
अभाव में उपरत्न— गोदन्ती या चन्द्रकान्त मणि धारण करें अथवा चन्द्रमा का यन्त्र तथा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बाँधकर बाहु या गले में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ— जल से सम्बन्धित व्यवसाय, कांच के बने सामान।
व्रत-उपवास- चन्द्रपीड़ा निवृत्ति हेतु सोमवार व्रत या बत्तीस पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। श्वेत पदार्थ, श्वेत पुष्प चढ़ावें।
विशेष जानकारी हेतु 'सोमवार व्रत कथा' एवं पूर्णिमा व्रत' मँगावें।

मंगल

8	3	10
9	7	5
4	11	6

मंगल की पीड़ा से—गले की बिमारी, कण्ठ रोग, फोड़ा, फुन्सी, रक्त विकार, गठिया के बुखार, आँखों की बिमारी, दौरे पड़ना, सिर दर्द तथा रक्त सम्बन्धी रोग इत्यादि।
वैदिक जप मंत्र— ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ऽं रेता ऽंसि जिन्वति॥
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं मङ्गलाय नमः।
जप संख्या- 10 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 40 हजार।
दक्षिण दिशा, त्रिकोण मण्डल, अंगुल 3, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण। मेष-वृश्चिक राशि का स्वामी।
वाहन— भेंड़ा। समिधा—खदिर (खैर)।
दान-द्रव्य— मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल बैल तथा लाल चन्दन।
दान का समय— मंगलवार को सबेरे 2 घटी तक।
धारण रत्न— मूँगा 6-7 रत्ती।
उपरत्न— विद्रुम मणि या संगमूँगी अथवा अकीक एवं मंगल का यंत्र या अनन्तमूल वृक्ष की जड़ को लाल कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ— औषधि, घड़ी, ईंट, गेहूँ, भूमि।
व्रत उपवास— मंगल देवता अथवा हनुमान्‌जी का व्रत करना शुभप्रद है। लाल फूल अर्पण करें। विशेष—'मंगलवार व्रत कथा' पढ़ें।

बुध

9	4	11
10	8	6
5	12	7

बुध की पीड़ा से— दिमागी फितूर, नाक-कान की बिमारी, वात सम्बन्धी बिमारी, पित्तभेद, चर्म रोग, कोढ़, विष तथा ऊँचाइयों से गिरना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ऽं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे- अध्युत्तरस्मिन्। विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
जप संख्या—9 हजार।
कलियुग में जप संख्या—36 हजार।
ईशान कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल 4, मगध देश, अत्रि गोत्र, हरित वर्ण। मिथुन-कन्या राशि का स्वामी।
वाहन— सिंह। समिधा— अपामार्ग।
दान-द्रव्य— पन्ना, सोना, काँसे का बर्तन, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र तथा फल।
दान का समय— बुधवार को सबेरे 5 घटी तक।
धारण रत्न— पन्ना 3 या 4 रत्ती।
उपरत्न— हरा मरगज अथवा बुध-यन्त्र या विधारा की जड़ हरे डोरे या कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— मूँग, रेशम, सूत, कापी, लेखन सामग्री (स्टेशनरी)।
व्रत उपवास— बुध देव की पीड़ा निवृत्ति हेतु 27 या 108 बुधवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प में हरा फुल ग्रहण करें। गौमाता की सेवा, हरा चारा (दूब, पालक आदि) खिलाना लाभदायक होता है।
विशेष जानकारी—'बुधवार व्रत कथा' पढ़िए।

गुरु

10	5	12
11	9	7
6	13	8

गुरु की पीड़ा से— पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना तथा वायुयान दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्योऽअर्हा- द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।
जप संख्या— 19 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 76 हजार।
उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल 6, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण। धनु-मीन राशि का स्वामी।
वाहन— हाथी। समिधा—पीपल।
दान-द्रव्य— पुखराज, सोना, काँसा, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, भूमि तथा पीला फल।
दान का समय— बृहस्पतिवार को संध्या काल।
धारण रत्न— पुखराज 5-6 रत्ती।
उपरत्न— सुनेहला धारण करें अथवा बृहस्पति का यन्त्र या बभनेठी (भारंगी) की जड़ पीले कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक सामग्री— किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा।
व्रत उपवास— गुरु (बृहस्पति) की पीड़ा निवृत्ति हेतु गुरुवार का व्रत करना चाहिए। इसमें पीली वस्तु, पुष्प से पूजन-अर्चन करना लाभदायक होता है। विशेष—'बृहस्पतिवार व्रत कथा' पढ़ें।

शुक्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शुक्र की पीड़ा— कोढ़, वात-पित्त-कफ सम्बन्धी, वीर्य विकार, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द तथा अण्डकोश की सूजन इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं ऽं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥
तांत्रिक मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।
जप संख्या—16 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 64 हजार।
पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अंगुल 9, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण। वृष-तुला राशि का स्वामी।
वाहन— अश्व। समिधा- उदुम्बर (गूलर)।
दान-द्रव्य— हीरा, सोना, चाँदी, मिश्री, दूध, चावल, सफेद एवं चित्रित कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, भूमि तथा सफेद चन्दन।
दान का समय—शुक्रवार को (सूर्योदयकाल)।
धारण रत्न— हीरा 4-5 रत्ती।
उपरत्न-सफेद पुखराज, स्फटिक या जरकन धारण करें। अथवा शुक्र का यन्त्र या मजीठ की जड़ को सफेद कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक सामग्री—प्रसाधन सामग्री,फूल,वाहनों की खरीद-बिक्री।
व्रत उपवास— शुक्र ग्रह पीड़ा निवारणार्थ शुक्रवार को व्रत रहना शुभ है। सफेद वस्तुएँ तथा सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिए।

शनि

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि की पीड़ा से— पेट और पैरों की बिमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट लगना, वाहन दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः॥
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
जप संख्या— 23 हजार।
कलियुग में जप संख्या—92 हजार।
पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अंगुल 2, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण। मकर-कुम्भ राशि का स्वामी।
वाहन— गीध। समिधा— शमी।
दान-द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, काला उड़द, काली तिल, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, कस्तूरी, महिषी, काली गौ तथा काला खड़ाऊ (जूता-चप्पल इत्यादि)।
दान का समय— शनिवार को मध्याह्नकाल।
धारण रत्न- नीलम 4-5 रत्ती।
उपरत्न-कटैला, काले घोड़े के नाल या नाव के कांटे की अँगूठी, शनि यंत्र काले कपड़े या धागे में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— लकड़ी, लोहा, जूता, कोयला।
व्रत-उपवास— शनि की पीड़ा निवृत्ति हेतु 33 तैंतीस शनिवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प काला अर्पण करें। नैवेद्य (प्रसाद) में काले तिल के लड्डू, उरद के बड़े आदि अर्पित करना चाहिए।
विशेष—हनुमानजी एवं शिवजी की उपासना से भी शनि-पीड़ा का शमन होता है।

राहु

13	8	15
14	12	10
9	16	11

राहु की पीड़ा से- दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर (विष) देना व लेना, आत्म-हत्या, पाचन संस्थान के रोग इत्यादि।
वैदिक जप मंत्र— ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया ऽवृता॥
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं राहवे नमः।
जप संख्या— 18 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 72 हजार।
नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अंगुल 12, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण। कन्या राशि का स्वामी।
वाहन— व्याघ्र। समिधा— दूर्वा।
दान-द्रव्य—गोमेद, सोना, रत्न, सीसा, तिल, सरसों का तेल, सप्त धान्य, उरद, कम्बल, नीला कपड़ा, तलवार, घोड़ा एवं सूप, काला फूल, लौह उपकरण, तिल भरा ताम्रपत्र।
दान-समय— रात्रि में।
धारण रत्न— गोमेद 6-7 रत्ती।
उपरत्न— तुरसावा धारण करें अथवा राहु का यन्त्र या सफेद चन्दन की जड़ काले कपड़े में बाँधकर धारण करें।
व्यावसायिक वस्तु— तेल, अलसी, चना, हड्डी के सामान।
व्रत उपवास— शनिवार को व्रत में नीला पुष्प अर्पण करना चाहिए।

केतु

14	9	16
15	13	11
10	17	12

केतु की पीड़ा से— घाव होना, दाँत का सड़ जाना, जल जाना और पसदायक सारी बिमारियाँ एवं गर्भपात केतु से ही होता है।
वैदिक जप मंत्र— ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः।
जप संख्या— 17 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 68 हजार।
वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल 6, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण। मीन राशि का स्वामी।
वाहन— कबूतर। समिधा— शमी या दूर्वा।
दान-द्रव्य— लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, काला कपड़ा, धूमिल तेल, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा।
दान का समय— रात्रि में।
धारण रत्न— लहसुनिया 7, 9 रत्ती।
उपरत्न- गोदन्ती या लाजावर्त धारण करें अथवा केतु का यन्त्र या असगन्ध वृक्ष की जड़ को काले कपड़े में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति।
व्रत उपवास— काला फूल अर्पित करें।

मेषादि राशियों के लिए रत्न धारण विधान

राशि	स्वामी	रत्न	उपरत्न	वजन	धारणदिन
मेष	मंगल	मूँगा	लाल अकीक	6 रत्ती	मंगलवार
वृष	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रत्ती	शुक्रवार
मिथुन	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रत्ती	बुधवार
कर्क	चन्द्रमा	मोती	गोदन्ती	4 रत्ती	सोमवार
सिंह	सूर्य	माणिक्य	तामड़ा, कंटकिज	3 रत्ती	रविवार
कन्या	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रत्ती	बुधवार
तुला	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रत्ती	शुक्रवार
वृश्चिक	मंगल	मूँगा	लाल अकीक	6 रत्ती	मंगलवार
धनु	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	5 रत्ती	गुरुवार
मकर	शनि	नीलम	कटैला या काले घोड़े के नाल की अंगूठी	4 रत्ती	शनिवार
कुम्भ	शनि	नीलम	–	4 रत्ती	शनिवार
मीन	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	3 रत्ती	गुरुवार
राहु	कन्या	गोमेद	तुरसावा	8 रत्ती	शनि बुध
केतु	मीन	लहसुनिया	गोदन्ती या लाजावर्त	4 रत्ती	शनि, बुध

राशियों के गुण

राशि	राशितत्व	दिशा	रंग	अंक	स्वरूप
मेष	अग्नि	पूर्व	लाल	9	चर
वृष	पृथ्वी	दक्षिण	श्वेत	6	स्थिर
मिथुन	वायु	पश्चिम	हरा	5	द्विस्वभाव
कर्क	जल	उत्तर	श्वेत	2	चर
सिंह	अग्नि	पूर्व	पीला	1	स्थिर
कन्या	पृथ्वी	दक्षिण	हरा	5	द्विस्वभाव
तुला	वायु	पश्चिम	श्वेत	6	चर
वृश्चिक	जल	उत्तर	लाल	9	स्थिर
धनु	अग्नि	पूर्व	पीला	3	द्विस्वभाव
मकर	पृथ्वी	दक्षिण	नीला	8	चर
कुम्भ	वायु	पश्चिम	नीला	8	स्थिर
मीन	जल	उत्तर	पीला	3	द्विस्वभाव

नक्षत्रों से कष्ट या पीड़ा

1. **अश्विनी**–सोमवार को होने से 21 दिन पीड़ा उपरांत आराम मिलेगा।
2. **भरणी**–बुधवार को भरणी नक्षत्र के समय रोगी होने पर 21 दिन पीड़ा एवं महाकष्ट होगा।
3. **कृत्तिका**–गुरुवार को यह नक्षत्र होने पर 18 दिन के बाद ही आराम प्राप्त होगा।
4. **रोहिणी**–शनिवार को होने से रोगी को 7 दिन पीड़ा होगी।
5. **मृगशिरा**–जब यह नक्षत्र शनि, रवि या सोमवार को पड़े तो अत्यधिक कष्ट एवं पीड़ा होती है। देर से आराम मिलता है। अतः नक्षत्र शांति करा लेना चाहिये।
6. **आर्द्रा**–मंगलवार या शुक्रवार को होने से महाकष्ट होता है। शांति करावें।
7. **पुनर्वसु**–बुधवार या शनिवार को होने से 25 दिन के बाद आराम होता है।
8. **पुष्य**–शनिवार को पुष्य रहने से 13 दिन कष्टप्रद होते हैं।
9. **श्लेषा**–सोमवार या शुक्रवार को पड़ने से अत्यन्त कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
10. **मघा**–रवि, बुध या शनि को पड़ने से 11 दिन पीड़ा के बाद ही आराम होता है।
11. **पूर्वा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के बाद लाभ होता है।
12. **उत्तरा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के उपरांत लाभ होता है।
13. **हस्त**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 15 दिन रोग पीड़ा रहेगी।
14. **चित्रा**–सोम या गुरु को पड़ने से 7 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
15. **स्वाती**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 20 दिन रोग रहेगा।
16. **विशाखा**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अति कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
17. **अनुराधा**–बुधवार को पड़ने से 8 दिन पीड़ादायक रहेंगे।
18. **ज्येष्ठा**–गुरुवार को पड़ने से 20 दिन रोगग्रस्त रहेंगे।
19. **मूल**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अतिकष्ट है। अतएव शांति करावें।
20. **पूर्वाषाढ़ा**–सोम या बुध को पड़ने से 8 दिन पीड़ा होगी।
21. **उत्तराषाढ़ा**–गुरु को पड़ने से 9 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
22. **श्रवण**–रवि या शनि को पड़ने से 5 दिन पीड़ा होगी।
23. **धनिष्ठा**–रवि या मंगलवार को पड़ने से कष्ट है। अतः शांति करावें।
24. **शतभिषा**–गुरु या शुक्र को पड़ने से 40 दिन रोग ग्रस्त रहेंगे।
25. **पूर्वा भाद्रपद**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अत्यन्त कष्टदायक है, शांति आवश्यक है।
26. **उत्तरा भाद्रपद**–सोम या बुध को होने से 10 दिन पीड़ादायक है।
27. **रेवती**–गुरु या शुक्रवार को पड़ने से 18 दिन बाद ही स्वास्थ्य लाभ होगा।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

विवाह के समय विचारणीय बातें

दैवज्ञ पं० रामनरेश त्रिपाठी 'ज्योतिष-सम्राट'

सुन्दर विचार, शिष्टाचारवाली स्त्री धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देनेवाली होती है। ऐसा आचरण जन्म-लग्न, नक्षत्र, ग्रह के वश में होता है। इसलिए विवाह-समय में इसका विचार कर लेना आवश्यक है। क्योंकि पुत्र (सन्तान), स्वभाव, आचरण, धर्म ये गृहलक्ष्मी पर निर्भर करता है।

विवाह-योग का प्रश्न-विचार :

स्वस्थ-चित्त बैठे ज्योतिषी की धनादि से पूजा करके प्रश्न करना चाहिए। प्रश्नकाल में यदि चन्द्रमा 10/11/3/7 या 5वें स्थान में-से किसी एक स्थान में हो और गुरु से देखा जाता हो अथवा प्रश्न-लग्न में वृष, तुला या कर्क लग्न हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो शीघ्र विवाह का योग समझना चाहिए। प्रश्नकाल में चन्द्रमा और शुक्र यदि विषम राशि या विषम राशि के नवांश में बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को स्त्री तथा कन्या को पति शीघ्र प्राप्त होगा शुक्र, चन्द्रमा यदि सम राशि नवांश में हो और बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को शीघ्र स्त्री-लाभ कराता है।

विवाह भंग योग : कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा यदि प्रश्न लग्न से समसंख्यक राशि में हो, पाप-ग्रह से देखा जाता हो अथवा छठें या आठवें स्थान में हो तो विवाह पक्का नहीं होने देता।

बाल-विधवा योग परिहार : जन्म-काल या प्रश्न-काल से विधवा-योग देखकर कन्या को सावित्री या पीपल व्रत कराकर, शुभ लग्न में विष्णु भगवान् की मूर्ति या पीपल वृक्ष, कदली या कुम्भ-विवाह कराकर किसी चिरंजीवि वर के साथ ब्याह दे। इसमें पुनर्विवाह का दोष नहीं लगता है। यह धर्मशास्त्र का कथन है। कुम्भादि विवाह गुप्त करना चाहिए।

सन्तान-भेद से जन्म-मासादि फल : जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि में प्रथम सन्तान (पुत्र, अथवा कन्या) का विवाह शुभ नहीं होता है। द्वितीय गर्भ से उत्पन्न सन्तान का विवाह उक्त समय में सन्तति देने वाला होता है। ऐसा विद्वानों का विचार है।

विवाह में विशेष विचार : लड़के के विवाह के बाद छः महीने के भीतर लड़की का विवाह नहीं करना चाहिए। लड़की के विवाह के बाद छः महीने तक अपने कुल में किसी का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। दो सहोदरों को, दो सहोदर कन्या नहीं ब्याहनी चाहिए। छः माह के भीतर दो सहोदर या दो सहोदर कन्याओं का विवाह शास्त्र वर्जित है।

गणना क्यों देखी जाती है ?

प्राचीन युग के लोग शास्त्र पर आँख मूँद कर विश्वास कर लेते थे। लेकिन आधुनिक युग में मेलापक विषय का वैज्ञानिक रहस्य बतलाना आवश्यक है। तभी इस पर संसार विश्वास कर सकता है। भारत आर्यों का निवास-स्थान और पुण्य-भूमि है। प्राचीनकाल में यहाँ का मानव-समाज ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास इन्हीं चार आश्रमों में विभक्त था। अन्य तीन आश्रम गृहस्थाश्रम पर ही निर्भर रहते थे। गृहस्थाश्रम का प्रथम सोपान विवाह ही है। यह विवाह मंगलदायक हो तो गृहस्थाश्रम सुखपूर्वक व्यतीत हो जाता है। दाम्पत्य-जीवन के सुखपूर्वक निर्वाह होने की जानकारी के लिए ही नक्षत्र और ग्रह मेलापक किया जाता है।

नवग्रह और दसवाँ ग्रह पृथ्वी एक-दूसरे के आकर्षण से शून्य में टिके हुए हैं। मनुष्य पृथ्वी पर है। अतः अन्य नवग्रहों के आकर्षण का प्रभाव मनुष्यों पर भिन्न-भिन्न रूप से पड़ता है। मनुष्य स्वयं कुछ भी नहीं करते हैं, वरन् यह ग्रहों के आकर्षण का प्रभाव ही उन्हें प्रभावित करता है और मनुष्य उसी के अनुसार कार्य भी करते हैं। मनुष्य का शरीर जिससे बना है उन तत्त्वों के साथ ग्रहों का सम्बन्ध है। अतः जो ग्रह बुरा प्रभाव वाला होता है तो मनुष्य भी बुरा काम कर बैठता है और उन तत्त्वों में बड़बड़ी हो जाती है। वर-वधू के नक्षत्र और ग्रहों में कैसा आकर्ष है तथा इसका प्रभाव क्या होता है, इसको जानने के लिए ही नक्षत्र और ग्रह मिलाये जाते हैं।

कुण्डली मिलाने की रीति :

स्त्री-नाशक या पति नाशक जो योग है, उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है। कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पाप-ग्रह का होना प्रायः पति-नाशक या पत्नी-नाशक है। इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते हैं। इसके लिए पण्डितों का अनुमत है कि, सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पाप-ग्रह होते हैं। इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय, सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम, अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश-अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश का सप्तमेश में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग भी प्रायः वैधव्य-सूचक होते हैं। एकादश या पञ्चम में भी विशेष पाप योग वैधव्यसूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो वह विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु, सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्तिसंगत है।

प्रश्न-लग्न या जन्म-लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या आठवें चन्द्रमा हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें पाप ग्रह हों, लग्न में चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो भी वैधव्य कारक योग होता है। यदि कन्या का प्रबल वैधव्य योग हो तो अश्वत्थ विवाह, कुम्भ विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवि वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्टप्रद होता है। सप्तमेश का पञ्चम भाव में होना भी अच्छा नहीं होता। ज्योतिष-फलित शास्त्र में दो ही वस्तुओं की अधिक प्रधानता है-लग्न और चन्द्रमा। लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्म-राशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्म नाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ाकरण (मुण्डन), गोचर-विचार, मंगल-कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म-नाम ही प्रधान है। जन्म-नाम न मिलने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हो तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हो और दूसरे का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म-नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म-नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर-कन्या यदि एक ही गोत्र के हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

विवाह के मास : मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष इन राशियों के सूर्य में विवाह शुभ होता है। मिथुन का सूर्य आषाढ़ शुक्ल 10 तक शुभ है। वृश्चिक के सूर्य होने पर कार्तिक में, मेष का सूर्य होने से चैत्र में, मकर का सूर्य होने पर पौष में विवाह शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त : **नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, मूल, अनुराधा, हस्त एवं स्वाती। **लग्न**—कन्या, तुला, और मिथुन। **मास**—फाल्गुन, माघ, मार्गशीर्ष, आषाढ़, ज्येष्ठ और वैशाख। **दिन**—भौम तथा शनि को छोड़कर शेष शुभ दिन। **तिथि**—रिक्ता तथा अमावस्या को छोड़कर विवाह शुभ है।

नौ ताराओं के नाम : जन्म-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक संख्या गिनकर 9 का भाग देने से शेष 1. जन्म, 2. सम्पत्, 3. विपत्, 4. क्षेम, 5. प्रत्यरि, 6. साधक, 7. वध, 8. मैत्र, 9. अतिमैत्र। ये नौ ताराओं के नाम हैं।

दुष्टतारा दान : वध में स्वर्ण तथा तिल, विपत् में गुड़, जन्म में शाक तथा प्रत्यरि में लवण (नमक) दान करना चाहिए।

नोट : प्रत्येक तारा की तीन आवृति होती है। पहली आवृत्ति में विपत् का प्रथम, प्रत्यरि का चतुर्थ, वध का तृतीय चरण शुभ होता है, बाकी सब अशुभ। तीसरी आवृत्ति में सभी ताराएँ शुभ होती है।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि

रवि : जन्म राशि से 3/6/10/11वें रवि शुभ हैं। यदि रवि 13 अंश से अधिक हो तो 2/5/9 राशि में भी शुभ है।

चन्द्र : 1/3/6/7/10/11 वें स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। 2/5/9 शुक्लपक्ष में शुभ होता है। 4/8/12 अशुभ है।

गुरु : 2/5/7/9/11 वें स्थान में शुभ होता है। 10/6/3/1 इनमें शान्ति करने पर शुभ तथा 4/8/12 में अशुभ होता है। बालक का यज्ञोपवीत, कन्या तथा वर के विवाह में शुभ-अशुभ विचार करना आवश्यक है। गुरु अपने उच्च राशि, मित्र गृह तथा अपने नवांश में रहे तो अशुभ भी शुभ होता है। नीच राशि या शत्रु गृह में शुभ भी अशुभ होता है। बाकी सब ग्रह रवि, चन्द्र आदि अपने उच्च स्थान पर रहने पर अनिष्ट स्थान में भी शुभ फल देते हैं।

वर्ण-विचार : कर्क, मीन, वृश्चिक, ब्राह्मण वर्ण। मेष, सिंह, धनु, क्षत्रिय। कन्या, वृष, मकर वैश्य। मिथुन, तुला, कुम्भ शूद्र वर्ण होते हैं। वर-कन्या का वर्ण एक होवे या वर का वर्ण कन्या के वर्ण से हमेशा श्रेष्ठ होना चाहिए।

गणादि-दोष-परिहार : राशि स्वामियों में मैत्री हो या अंश-स्वामी में मैत्री हो, तो गणादि दुष्ट रहने पर विवाह पुत्र-पौत्र को बढ़ाने वाला होता है।

राशि-कूट : वर की राशि से कन्या की राशि तक और कन्या की राशि से वर की राशि तक गिनने पर 6/8 में दोनों की मृत्यु, 9/5 में सन्तान-हानि और 2/12 में दरिद्रता होती है।

दुष्ट-भकूट-परिहार : वर कन्या की राशि के स्वामी एक ही ग्रह हों अथवा दोनों राशियों में मैत्री हो, नाड़ी, नक्षत्र शुद्ध होने पर दुष्ट भकूट ग्रह नहीं होता है।

नाड़ी-विचार : वर-कन्या की एक नाड़ी में विवाह वर्जित है। मध्य नाड़ी मृत्यु तथा भिन्न नाड़ी शुभ होता है।

विशेष : ब्राह्मण को नाड़ी-दोष, क्षत्रियों को वर्णदोष, वैश्यों को गण-दोष और शूद्रों को योनि-दोष विचार करना चाहिए।

किसी आचार्य ने नक्षत्र-मेलापक के दस, किसी ने बारह और किसी अठारह भेद माने हैं, परन्तु सर्व-प्रसिद्ध निम्नलिखित ये ही आठ भेद हैं—1. वर्ण, 2. वश्य, 3. तारा नक्षत्र, 4. योनि, 5. ग्रहमैत्री, 6. गण, 7. भकूट या राशिकूट, 8. नाड़ी। इन आठों में शास्त्रकारों ने नाड़ी पर अधिक जोर दिया है। इस तथ्य का पता आगे नाड़ी-विवेचन में लगेगा।

वर्ण : सामाजिक वर्णों की तरह इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ही चार वर्ण होते हैं। उच्च वर्ण में ऊँचे होने का भाव रहता है जैसे, क्षत्रिय वर्ण के मनुष्य पर यदि शूद्र वर्ण का मनुष्य प्रभाव दिखाना चाहे तो वह क्षत्रिय उसका शीघ्र शमन कर देगा। इसी प्रकार यदि ब्राह्मण या क्षत्रिय वर्ण की कन्या हो और शूद्र वर्ण का वर हो तो वह कन्या उच्च वर्ण की होने से सदा वर को दबाती रहेगी। इस तरह स्त्री-पुरुष का जीवन गृहस्थाश्रम में सुखपूर्वक व्यतीत नहीं हो सकता। इसी झगड़े से बचने के लिए 'वर्ण' का विचार किया जाता है।

वश्य : वश्य से विचार किया जाता है कि, स्त्री पति के अधीन में रहने वाली है या नहीं। वास्तव में स्त्री का पति के अधीन रहना भी आवश्यक है। शास्त्र में लिखा है कि बचपन में देख-रेख पिता, यौवन में पति और वृद्धावस्था में पति के जीवित न रहने पर पुत्र ही करे। क्योंकि स्वतन्त्र स्त्री को अनर्थ से बचने तथा सुखपूर्वक गृहस्थाश्रम व्यतीत करने के लिए 'वश्य' का विचार किया जाना आवश्यक है।

तारा : पूर्व वर्णित ग्रहों की तरह तारा का प्रभाव होता है। चन्द्र-ग्रह शास्त्रानुसार मनुष्य का मन है। इसका विचार भकूट या राशि के नाम से होता है। चन्द्र तारा पति कहलाता है। जब चन्द्रमा का विचार होता है तो ताराओं का भी विचार आवश्यक है। कृष्णपक्ष में चन्द्र की क्षीणावस्था का विचार किया जाता है।

योनि : योनि शब्द का अर्थ तो सरल ही है। इससे स्त्री-पुरुष की प्रीति की जानकारी की जाती है। जैसे-गज और गज योनि में परस्पर प्रेम एवं गज और सिंह योनि में परस्पर वैर होता है। अन्य योनियों में भी इसी तरह प्रीति और वैर होता है। अतः दम्पति में प्रेम रहने की जानकारी के लिए वैर-योनि को छोड़कर प्रीति योनि को ही ग्रहण करना चाहिए।

ग्रह-मैत्री : ग्रहों में भी परस्पर स्वाभाविक मित्रता, समता और शत्रुता होती है। इसी तरह वर-वधू के राशि स्वामियों में भी मित्रता हो तो दोनों का जीवन मित्रवत् बीत जाता है। यदि समता हुई तो कभी प्रसन्नता और कभी लड़ाई होती है और शत्रुता होने से दोनों में शत्रुता उत्पन्न होती है। अतः मित्रवत् जीवन व्यतीत होने की जानकारी होने के लिए ग्रह-मैत्री देखनी आवश्यक है।

गण : गण तीन होते हैं-देव, मनुष्य और राक्षस। मनुष्य को यह पता लग जाय कि वर मनुष्य और कन्या राक्षस गण की है, तो वह अनायास ही राक्षस प्रकृति वाद कर बोल उठेगा कि तब तो कन्या वर को निगल जायेगी अर्थात् लड़का काल के गाल में चला जायेगा। यदि देव और राक्षस गण हों तो देव और राक्षस की लड़ाई होती रहेगी। मनुष्य को देवता में जिस तरह की प्रीति होती है, वैसी ही प्रीति इन गणों में भी होगी और समान गण हों, तो प्रेम होता ही है। इसलिए राक्षस गण की दृष्टि से बचने और प्रीति के लिए गण का विचार होता है।

भकूट या राशिकूट : वर-वधू के जन्म-समय में चन्द्रमा जिन राशियों पर होता है, वे ही उनकी राशियाँ होती हैं। ग्रहों की तरह इन राशियों में भी मित्रता, शत्रुता आदि होती है। इनमें मित्रता होने से दम्पति प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं। शत्रु षडष्टक और विषम सप्तम में मृत्यु, नव-पञ्चम में अनपत्यता, अशुभ द्विर्द्वादश में निर्धनता एवं अशुभ, दशम-चतुर्थ में दौर्भाग्य और दैन्य होता है। राशियों के विचार करने से ही मनुष्य के मन में चन्द्रमा का विचार हो जाता है। इसलिए दोनों की राशियों का विचार कर लेना चाहिए।

नाड़ी : 'नाड़ी' के नाम से समझना चाहिए कि यह वह नाड़ी है जिसे देखकर वैद्य, हकीम या डॉक्टर रोग का पता लगाते हैं। इसी नाड़ी को अंग्रेजी में 'पुल्स' भी कहते हैं। ज्योतिष में तीन नाड़ियाँ मानी गयी हैं—आदि, मध्य, अन्त्य। ये तीन नाड़ियाँ वैद्यक के अनुसार क्रम से वात, पित्त और कफ की नाड़ियाँ हैं। यदि वर-वधू दोनों की आदि (वायु) नाड़ी हो तो दोनों के संयोग से वात का आधिक्य होने से पति की हानि होगी। यदि दोनों के मध्य (पित्त) नाड़ी हो, तो दोनों के संयोग से पित्त का आधिक्य होने से पति की हानि होगी। और यदि दोनों की अन्त्य (कफ) नाड़ी होगी तो कफ का आधिक्य दोनों की मृत्यु करा देगा। शरीर की क्रिया नाड़ी पर अवलम्बित है। इसलिए शास्त्रकारों ने नाड़ी पर अधिक जोर देकर कहा है—

'सदा नाशयत्येकनाड़ी समाजो
भकूटादिकान् सप्तभेदास्तथा च।'

अर्थ : वर्णादि सातों ठीक हों और नाड़ी एक हो तो भी विवाह नहीं करना चाहिये। परन्तु साथ-साथ उन्होंने सूक्ष्म विचार करके परिहार भी लिखे हैं।

अब मंगल ग्रह की विशेषता पर विचार किया जाता है। सभी ग्रहों के अंशों के मेल से यह शरीर बनता है। और रक्त संचालन क्रिया पर निर्भर करता है। यह रक्त ज्योतिष का मंगल ग्रह माना गया है। यदि दोनों का मंगल (रक्त) ठीक मिल गया अर्थात् दोनों का रक्त एक-दूसरे के उपयुक्त हुआ तो उनका जीवन आधी-व्याधि से व्यथित नहीं होगा। इसके विपरीत दोनों का मंगल (रक्त) उपयुक्त नहीं है तो जिस तरह दूध में विकार हो जाने से वह फट जाता है और बरबाद हो जाता है। इसी तरह एक-दूसरे के रक्त भी अनुपयोगी हो जाता है और रक्त पर निर्भर करने वाला मनुष्य का शरीर टिक नहीं सकता। इसलिए रक्त की उपयुक्तता जानने के लिए मंगल मिलाना आवश्यक है।

इन सब बातों पर विचार करने से यही पता लगता है नक्षत्र और ग्रह गणना न करने से मनुष्य की, समाज और देश की बड़ी हानि होती है।

सिंहस्थ-गुरु व्यवस्था :

सामान्य रूप से गुरु की राशि पर सूर्य और सूर्य की राशि में गुरु के आने पर गुर्वादित्य नामक दोष होता है।

गुरुक्षेत्रगते भानौ भानुक्षेत्रगते गुरौ।
गुर्वादित्यः स विज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु॥

इसी प्रकार सामान्य रूप से लगभग 12 वर्षों के बाद सिंह राशि पर गुरु के आने से गुर्वादित्य दोष, विवाहादि शुभ कार्य में वर्जित है।

'अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे।
गुर्वादित्ये विश्वपक्षेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम्॥1॥
सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्।
भागीरथी-याम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे॥2॥
मघादि-पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः।
गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥3॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहो गंगा-गोदान्तरेऽपि च।
सर्वः सिंहे गुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे॥4॥

(मुहूर्त चिन्तामणि, शु०प्र०)

'सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः।
सर्वदेशे स्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः॥

(राज० मा०)

श्रीलल्ल के वचनानुसार सिंह राशि के गुरु में गोदावरी के उत्तर तट से भागीरथी के दक्षिण के स्थलों में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित हैं।

यथा- **'गोदावर्युत्तरतो यावद् भागीरथीतटं याम्यं, यत्र विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देव पतिं पूज्यः'॥**
'भागीरथ्युत्तरे कुले गौतम्याः दक्षिणे तथा। विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति॥' (व.सं.)

सबका सारांश अधोलिखित है—

1. सिंह राशि का गुरु कलिंग, गौड़ और गुर्जर देशों में शुभ कार्य के लिए वर्जित है। 2. सिंह राशि में सिंह नवांश का, गौतमी के दक्षिण तटवासी नगरों में सिंहस्थ गुरु होने पर व्रतबन्ध, विवाहादि शुभ होता है। अतः मेष के सूर्य में समस्त देश में विवाहादि शुभ कार्य नहीं किये जा सकेंगे।

*

कर्मकाण्ड की सर्वोत्तम पुस्तक

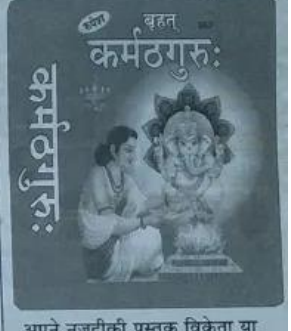

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता या
On Line खरीदें।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

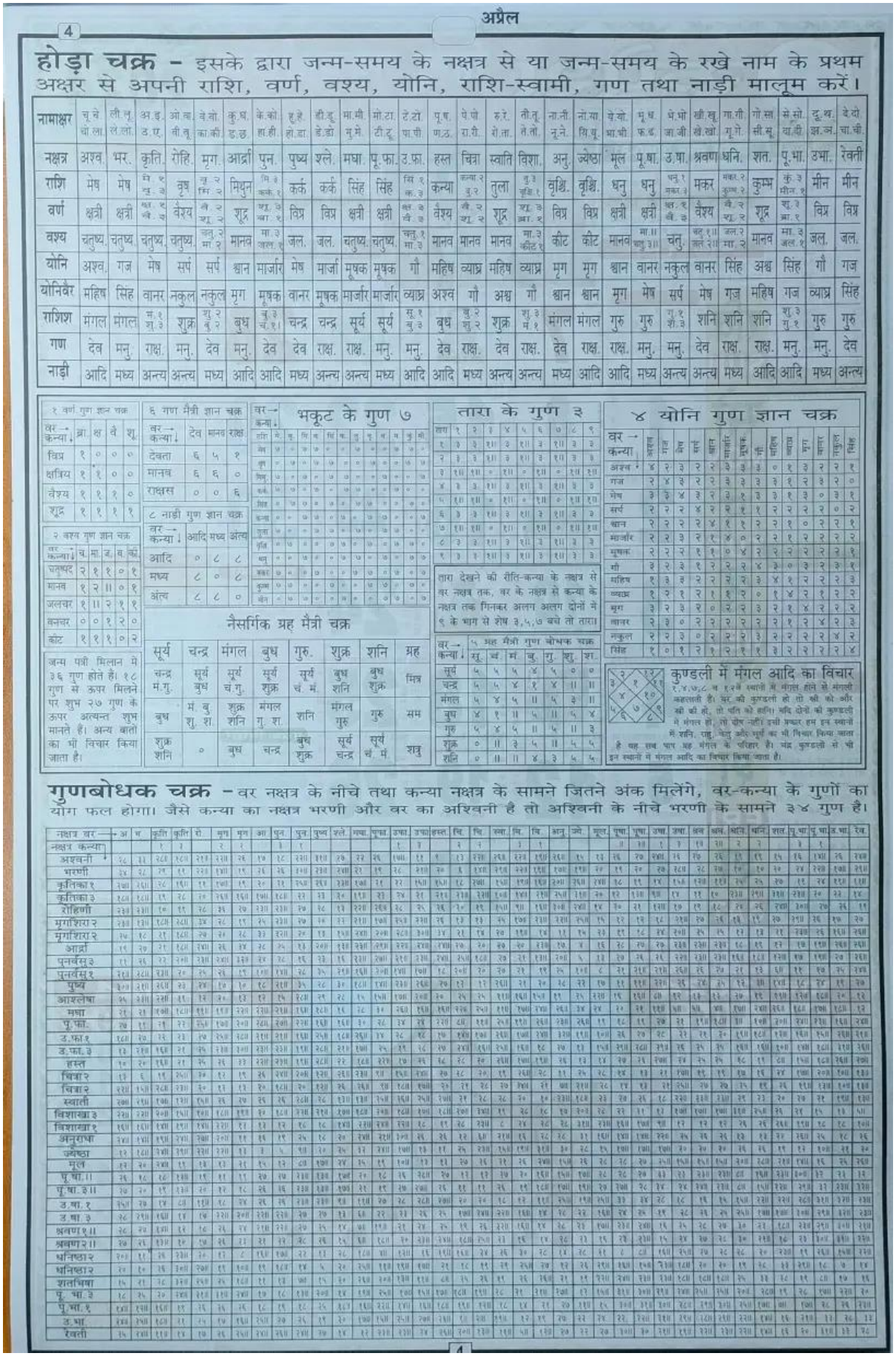

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

यात्रा मुहूर्त विचार

यात्रा मुहूर्त के लिए दिशाशूल, नक्षत्रशूल, भद्रा, योगिनी, चन्द्रमा, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र इत्यादि का विचार किया जाता है।

शुभ-तिथि—भद्रादि दोष रहित 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा।

शुभनक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

मध्यम नक्षत्र—रोहिणी, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, शतभिषा।

दिशाशूल

सोम शनिचर पूरब न चालू। मंगल बुध उत्तर दिशि कालू॥
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
बीफे दक्खिन करे पयाना। फिर नहिं समझो ताको आना॥

दिशाशूल नक्षत्र तथा योगिनी-वास चक्र

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं को सब जानते हैं, लेकिन इनके बीच की अन्य चार दिशायें सबको स्मरण नहीं रहतीं। अतः आठों दिशाओं तथा उनके नक्षत्र-शूल, दिशाशूल और योगिनीवास, जो तिथियों को सरलतापूर्वक तत्काल जान लेने के लिए हम ऊपर चक्र दे रहे हैं। इसमें प्रत्येक दिशा के नीचे पहले नक्षत्र का नाम है, फिर वार तथा वारों के अन्त में वे तिथियाँ दी हुई हैं, जिन तिथियों को उस दिशा में योगिनी का वास होता है, उन तिथियों को उस दिशा में जाने से स्वभावतः यात्री के सम्मुख पड़ेगी और सम्मुख तथा दाहिने की योगिनी अशुभ होती है। अतः जिन तिथियों की योगिनी सम्मुख तथा दाहिने पड़े, उन तिथियों को तथा जिस दिशा के नीचे जो नक्षत्र और वार लिखे हैं, उन नक्षत्र तथा वारों में उस दिशा की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए।

समयशूल—उषाकाल में पूरब की, गोधूलि में पश्चिम की, अर्धरात्रि में उत्तर की, मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

दक्षिण यात्रा का निषेध—कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में अर्थात् पंचक में कदापि न जाय। पंचक तथा चन्द्रमा की राशि का उल्लेख प्रतिमास की तिथि, नक्षत्र के साथ ही किया गया है। वहाँ देख लें।

चन्द्रमा की दिशा और उसका शुभाशुभ फल—
मेष, सिंह, धनु, पूरब चन्दा, दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा।
पश्चिम कुम्भ, तुलायां मिथुना, उत्तर कर्क, वृश्चिक, मीना॥

अर्थात् मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या और मकर राशि का दक्षिण में, मिथुन, तुला और कुम्भ का पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तर में रहता है। यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख या दाहिने शुभ होता है। पीछे होने से मृत्यु तुल्य कष्ट, अल्प कष्ट और बायी ओर होने से हानि होती है।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है, जिसमें 1,4,5,7,9,10, स्थानों में शुभ ग्रह और 3,6,10,11 में पाप-ग्रह हों। अशुभ लग्न वह है, जिसमें 1,6,8,12वें चन्द्रमा, 10वें शनि, 7वें शुक्र, 7,12,6,8 वें लग्नेश हों।

प्रस्थान विधान—यदि किन्हीं जरूरी कारणों से यात्रा के मुहूर्त में न जा सके, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ-माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद, घी, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बाँधकर किसी के घर या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रखें। उपर्युक्त चीजों के बजाय मन की सबसे प्यारी वस्तु को भी प्रस्थान में रख सकते हैं।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तुयें—यात्रा के तीन दिन पहले दूध, पाँच दिन पहले हजामत, तीन दिन पहले तेल, सात दिन पहले मैथुन त्याग देना चाहिए। यदि इतना न हो सके, तो कम से कम एक दिन पहले तो ऊपर की सब वस्तुओं को अवश्य ही छोड़ देना चाहिए।

यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुयें—

रवि को पान, सोम को दर्पन,
मंगल को गुड़ करिये अर्पन।
बुध को धनिया, बीफै जीरा,
शुक्र कहे मोहिं दधि का पीरा।
कहें शनी मैं अदरख पावा,
सुख-सम्पत्ति निश्चय घर लावा।

रवि को पान खाकर, सोम को शीशे में मुँह देखकर, मंगल को गुड़, बुध को धनियाँ, गुरु को जीरा, शुक्र को दही और शनि को अदरख खाकर यात्रा करने से कार्य सफल होता है।

चौघड़िया मुहूर्त

शीघ्रता में कोई भी यात्रा मुहूर्त न बनता हो या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो विशेषरूप से चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग है। लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यक शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन-रात बराबर, यानी 12 घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात्रि होती है, तब एक चौघड़िया $1\frac{1}{2}$ घण्टा यानी पौने चार घड़ी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार, सोमवार आदि प्रत्येक वार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है एवं उसी समय से अगला वार आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस 'वार' का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान न्यूनाधिक भी (यानी दिन-रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं। 'वार' हमेशा 24 घण्टे यानी 60 घटी का होता है। अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, तो उस रोज के दिनमान को 60 घटी में-से घटा देने पर रात्रिमान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो, तो उस रोज दिनमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय में जोड़ते जायें तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़िया में-से कौन-सा ग्राह्य और कौन-सा त्याज्य है, यह 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उस दिन के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात की चौघड़िया के चक्र में उस रोज के वार के सामने खाने में देखकर जान लें।

श्रेष्ठ समय—शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का है।

अशुभ समय—उद्वेग, रोग और काल का होता है। इसको त्याग देना चाहिए। $2\frac{1}{2}$ घटी का एक घण्टा तथा $2\frac{1}{2}$ पल का 1 मिनट होता है। अतः घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाने के लिए उसमें 5 का भाग देकर लब्धि को दूना कर लें।

दिन की चौघड़िया

दिन	पहली चौघ.	दूसरी चौघ.	तीसरी चौघ.	चौथी चौघ.	पाँचवीं चौघ.	छठवीं चौघ.	सातवीं चौघ.	आठवीं चौघ.
रवि	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंगल	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरु	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

रात की चौघड़िया

दिन	पहली चौघ.	दूसरी चौघ.	तीसरी चौघ.	चौथी चौघ.	पाँचवीं चौघ.	छठवीं चौघ.	सातवीं चौघ.	आठवीं चौघ.
रवि	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	शुभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	चर	अमृत	चर
मंगल	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	काल	रोग	काल
बुध	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	उद्वेग	लाभ	उद्वेग
गुरु	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	अमृत	शुभ	अमृत
शुक्र	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	रोग	चर	रोग
शनि	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	लाभ	काल	लाभ

गुरु-शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म

बावड़ी, बगीचा, कुआँ, मकान का प्रारम्भ और प्रतिमा, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन), देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देवतीर्थ-दर्शन, संन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्य, यज्ञ, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये कर्म गुरु, शुक्र के अस्त, बाल वृद्धत्व तथा मलमास में करना निषिद्ध है।

गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती ये 6 नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता-पिता, कुल और अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन, वैभव, ऐश्वर्य तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का मुख 27 दिन तक पिता न देखे। प्रसूति-स्नान के पश्चात् शुभ वेला में बालक का मुख देखना चाहिए। उपरोक्त गण्डमूल के चारों चरणों में-से जिस चरण में बच्चा पैदा हो, उसका विशेष फल निम्न चक्र से मालूम कर लें।

अश्विनी चरण फल		आश्लेषा चरण फल	
चरण	फल	चरण	फल
1	पिता को भय	1	शान्ति से शुभ
2	सुख, ऐश्वर्य	2	धननाश
3	मन्त्री पद	3	मातृनाश
4	राजसम्मान	4	पितृनाश
मघा चरण फल		**ज्येष्ठा चरण फल**	
चरण	फल	चरण	फल
1	माता को कष्ट	1	बड़े भ्राता को कष्ट
2	पितृ-भय	2	छोटे भ्राता को कष्ट
3	सुख	3	मातृ-नाश
4	अनेक कष्ट	4	पितृ-नाश
मूल चरण फल		**रेवती चरण फल**	
चरण	फल	चरण	फल
1	पितृ-नाश	1	राजसम्मान, सुख
2	धननाश	2	मंत्रित्व-प्राप्ति
3	मातृनाश	3	धन-सुख
4	शान्ति से सुख	4	अनेक कष्ट

अभुक्त मूल—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी, किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र के आदि की आठ घटी, किसी के मत से चार घटी, दो घटी, आधी घटी का समय अभुक्त मूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष तक बच्चे का पिता उसका मुख न देखे। शान्ति करके मुख देखने में शास्त्रीय बाधा नहीं है।

मूल नक्षत्र में गर्भाधान करना उचित नहीं है तथा उक्त नक्षत्रों में रजस्वला स्त्री को स्नान करना वर्जित है।

त्रिखल (तेंतर) जन्म फल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो या तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है। शान्ति के लिए त्रिखल करावें।

दाँत निकालने का फल—बालक के जन्मते ही दाँत निकले हुए हों तो माता-पिता को अरिष्ट, ऊपर पंक्ति में दाँत जमे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दाँत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। पहले मास में दाँत निकले तो शरीर नष्ट, दूसरे में छोटा भ्राता नष्ट, तीसरे में बहन नष्ट, चौथे में भाई नष्ट, पाँचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठें में भोग, सातवें में पिता-सुख, आठवें में पुष्टता, नौवें में धनी, दसवें में सुखी, ग्यारहवें में धनी।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र व कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में-से एक को मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। सोना दान, शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

छींक-विचार

छींक प्रायः सभी दिशाओं की खराब होती है। अपनी छींक महा-अशुभ है। गौ की छींक मरण करती है। बायीं ओर छींक हो तो दोषकारक नहीं है।

'सम्मुख छींक लड़ाई भाखे।
छींक दाहिने द्रव्य विनाशे॥
ऊँची छींक कहे जयकारी।
नीची छींक होय भयकारी॥'

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, वेश्या, रजस्वला स्त्री और अन्त्यज की छींक विशेष अशुभ होती है। आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषधि-सेवन, विद्यारम्भ और बीज बोने के समय, युद्ध या विवाह, सर्दी से होने वाली छींक, बच्चे और बूढ़े की छींक तथा हठ से छींकना विफल होता है, कोशिश करने पर भी यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस काम के लिए जा रहा हो उसमें विघ्न अवश्य होगा। **'एक नाक दो छींक,** काम बने सब ठीक' यह भी लोकोक्ति है।

स्वप्न देखने का शुभाशुभ फल

स्वप्न	फल
आकाश की ओर उड़ना	लम्बी यात्रा हो
सूर्य को देखना	किसी महात्मा के दर्शन हो
बादल देखना	तरक्की हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति हो
शीशा में मुँह देखना	स्त्री से प्रेम हो
ऊँचे से गिरना	हानि हो, कष्ट हो
बाग-फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो
बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखे तो दुःखी हो
पानी बरसता देखना	अनाज मन्दा
सिर के कटे बाल देखना	कर्ज से छुटकारा मिले
पाखाना देखना	धन का लाभ हो
सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
पहाड़ पर चढ़ना	उन्नति प्राप्त हो
शरीर में पाखाना लगना	काफी धन मिले
पाखाना खाना	पूर्ण धनवान् हो, खजाना पावे
पाखाना करना	धन प्राप्त हो
फूल देखना	प्रेमी मिले
छाती देखना	स्त्री वश हो
पानी पीना	व्यापार में लाभ हो
पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले
पानी में डूबना	अच्छे काम करे
हरी तरकारी देखना	प्रसन्नता प्राप्त हो
हँसता देखना	रंज प्राप्त हो
रोते देखना	प्रसन्नता प्राप्त हो
जहाज देखना	दूर की यात्रा हो
झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो
जवाहरात देखना	आशाएँ पूर्ण हों
स्त्री-प्रसंग	धन की प्राप्ति हो
लड़ाई करना	प्रसन्नता प्राप्त हो
जुआ खेलना	व्यापार में लाभ हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नदी में तैरते देखना	कष्ट दूर हो।

शरीर में तिल होने का शुभाशुभ फल

स्थान	फल
माथे पर	बलवान हो
ठुड्डी में	स्त्री से प्रेम न रहे
दोनों भौंह के बीच	यात्रा होती रहे
दाहिनी आँख पर	स्त्री से प्रेम रहे
बायीं आँख पर	स्त्री से कलह रहे
दाहिने गाल पर	धनवान् हो
बाँयें गाल पर	खर्च बढ़ता जाय
होंठ पर	विषय-वासना में रत रहे
कान पर	दीर्घायु हो
गर्दन पर	आराम मिले
दाहिनी भुजा पर	मान-प्रतिष्ठा मिले
बाँयी भुजा पर	झगड़ालू हो
नाक पर	यात्रा होती रहे
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे
बाँयी छाती पर	स्त्री से झगड़ा रहे
कमर में	आयु परेशानी से गुजरे
दोनों छाती के बीच	जीवन सुखी रहे
पेट पर	उत्तम भोजन का इच्छुक
पीठ पर	प्रायः यात्रा में रहा करे
दाहिनी हथेली पर	बलवान हो
बाँयी हथेली पर	खूब खर्च करे
दाहिने हाथ की पीठ पर	धनवान हो
बाँयें हाथ की पीठ पर	कम खर्च करे
दाहिने पैर में	बड़ा बुद्धिमान् हो
बाँयें पैर में	खर्च अधिक हो।

•

शरीर पर छिपकली तथा गिरगिट गिरने का फल

सिर पर छिपकली गिरने से राज्य लाभ, ललाट पर बन्धु दर्शन, दोनों भौंहों पर बड़े लोगों से मित्रता, ऊपर के ओठ पर धनहानि, नीचे के ओठ पर ऐश्वर्य प्राप्ति, नाक पर रोग, दाहिने कान पर आयु-वृद्धि, बाँये कान पर धन-प्राप्ति, दोनों आँख पर धन लाभ, दाहिनी भुजा पर नृपतुल्यता, बाँयी भुजा पर राज्यभय, कण्ठ पर शत्रुनाश, दोनों स्तनों पर दुर्भाग्य, पेट पर भूषण-लाभ, पीठ पर बुद्धिनाश, घुटने पर शुभ-आगमन, जँघा पर शुभ, दोनों हाथों पर वस्त्रलाभ, कन्धों पर विजय, नासिका (नाक) छिद्रों पर धनप्राप्ति, कमर पर हाथी-घोड़ा आदि की सवारी का लाभ, दायें मणिबन्ध पर कीर्ति-विनाश, हृदय पर धनलाभ, मुख पर मिष्ठान्नभोजन, गुल्फ पर बन्धन-प्राप्ति, दाढ़ी पर मृत्यु, दहिने पैर पर गमन, बाँये पैर पर नाश, पैर के तलवे पर मृत्यु तुल्य कष्ट।

विशेष : सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार को, प्रतिपदा, द्वितीया, पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी तथा द्वादशी तिथियों में, पुष्य, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिष और रेवती नक्षत्रों में पुरुषों के दाहिने अंग तथा स्त्रियों के बाँयें अंग पर छिपकली का गिरना शुभप्रद होता है। जन्म-नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध योग तथा भद्रा में, पापग्रह युक्त लग्न हो तथा चन्द्रमा आठवें हों तो छिपकली का गिरना अशुभ फलदायक होता है। इसकी शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर तिल, उड़द का दान, शिव मन्दिर में दीपदान एवं स्वर्ण-दान अथवा मृत्युञ्जय मन्त्र 'ॐ ह्रौं जूं सः' तथा शिव का षडक्षर मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का जप एक हजार लाभदायक सिद्ध होता है।

नोट—छिपकली गिरने का जो फल होता है, वही फल शरीर पर गिरगिट चढ़ने का भी होता है।

वनस्पति-विज्ञान

रोग निवारण, ग्रहबाधा से मुक्ति, धनलाभ, व्यापार-वृद्धि, सुख-समृद्धि, शान्ति तथा सभी प्रकार के कष्टों के निवारण हेतु घर के बाहर या किसी खुले स्थान पर एक फलदार वृक्ष लगायें और प्रतिदिन या सप्ताह में किसी एक दिन जल चढ़ायें। जिससे शीघ्र ही शुभ फल की प्राप्ति होगी। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति जगत् के प्रत्यक्ष देवी-देवता हैं।

विधि—प्रातः स्नान करके एक लोटे में जल लेकर '**ॐ वनस्पतये नमः**' का ग्यारह बार उच्चारण करते हुए जल चढ़ायें। जैसे आप अपने मित्र से अपना सुख-दुःख खुले मन से कहते हैं, उसी प्रकार आप वृक्ष देवता के सामने सच्ची श्रद्धा से अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना करें। इस प्रार्थना से आपका सभी कष्ट-रोग, चिन्ता, ग्रह-बाधा जरूर दूर हो जायेगा। साथ ही व्यापार में लाभ, धन की प्राप्ति और सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होकर सुख-समृद्धि बढ़ती है तथा मनुष्य का जीवन सुखमय व्यतीत होता है।

•

ज्योतिष की सर्वोत्तम पुस्तक

अपने नजदीकी पुस्तक विक्रेता या
On Line खरीदें।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

सर्वार्थसिद्धि एवं विविध योग सन् 2024 ई.

सभी प्रकार के शुभ कार्यों को सर्वार्थसिद्धि व सर्वार्थामृतसिद्धि योग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर योग, स्थायी जय योग, यायीजय योग, यमघण्ट योग एवं रवियोग—इन योगों में प्रारम्भ करने से कार्य में सफलता की पूर्ण संभावना होती है।

सर्वार्थ व सर्वार्थामृत सिद्धि योग

ता. वार योग

जनवरी
3.बुध-दिन 12:26 से।
6.शनि-सायं 6:11 तक।
8.सोम-रात 7:41 तक।
12.शुक्र-सायं 5:19 से।
13.शनि-दिन 3:56 तक।
16.मंगल-दिन 11:2 से।
18.गुरु-प्रातः 7:59 तक।
19.शुक्र-प्रातः 6:47 तक।
20.शनि-रा.शे. 5:21 से (अमृत.)।
22.सोम-रा.शे 5:36 तक (अमृत.)।
24.बुध-रात 4:10 से
25.गुरु-प्रातः 7:51 तक।
31.बुध-रात 9:55 तक।

फरवरी
9.शुक्र-रात 11:57 तक।

अप्रैल
9.मंगल-प्रातः 8:8 से।
22.सोम-सायं 5:12 तक। पुनः सा. 5:12 से (अमृत.)।
25.गुरु-रात 1:42 से
26.शुक्र-रात 2:1 तक।
28.रवि-रात 2:41 तक।

मई
5.रवि-सायं 5:53 तक।
7.मंगल-दिन 2:53 तक (अमृत.)।
8.बुध-दिन 1:43 से।
13.सोम-दिन 1:43 से।
14.मंगल-दिन 3:10 से।
23.गुरु-दिन 8:55 से।
24.शुक्र-दिन 9:59 तक।
26.रवि-दिन 10:37 तक।

जून
2.रवि-रात 12:37 तक।
4.मंगल-रात 9:52 से।
5.बुध-रात 8:59 तक।
9.रवि-रात 9:24 से
10.सोम-रा. 10:44 तक।
11.मंगल-रा. 12:31 तक।
16.रवि-दिन 10:23 तक (अमृत.)।
19.बुध-सायं 4:30 से (अमृत.)।
23.रवि-सायं 6:15 से।
24.सोम-सायं 5:33 से।
30.रवि-दिन 8:46 से।

जुलाई
2.मंगल-प्रातः 6:0 से
3.बुध-रात 4:20 तक।
7.रवि-समस्त।
8.सोम-प्रातः 6:17 तक पुनः प्रातः 6:17 से
9.मंगल-प्रातः 7:57 तक।
17.बुध-रात 1:22 तक (अमृत.)।
21.गुरु-रात 1:37 तक।
22.सोम-रात 12:42 तक।
26.शुक्र-सायं 6:42 से (अमृत.)।
28.रवि-दिन 3:30 तक।
30.मंगल-दिन 1:6 तक।
31.बुध-दिन 12:22 तक।

अगस्त
2.शुक्र-दिन 12:7 से।
4.रवि-दिन 1:50 तक।
10.शनि-रात 3:30 से।
14.बुध-दि.9:0 तक (अमृत.)।
18.गुरु-दिन 9:41 तक।
19.सोम-दिन 8:50 तक।
27.सोम-रात 9:10 से।
28.मंगल-रात 7:54 तक।
29.गुरु-रात 7:53 से।
30.गुरु-रात 8:21 तक।

सितम्बर
7.शनि-दिन 10:43 से।
9.सोम-दिन 2:58 से।
14.शनि-सायं 5:37 से।
19.गुरु-दिन 11:6 से।
20.शुक्र-दिन 9:26 तक (अमृत.)।
23.सोम-रात 4:15 तक।
27.गुरु-रात 3:57 तक।

अक्टूबर
2.बुध-दिन 12:41 से।
5.शनि-रात 8:15 तक।
6.रवि-रात 11:55 तक।
12.शनि-रात 12:52 तक।
15.मंगल-रात 8:58 तक।
17.गुरु-सायं 5:39 तक।
18.शुक्र-सायं 4:1 तक।
21.सोम-दिन 12:16 तक।
24.गुरु-दिन 11:38 तक।
30.बुध-रात 10:27 तक।

नवम्बर
4.सोम-प्रातः 7:21 तक।
9.शनि-दिन 8:49 तक।
12.मंगल-रात 3:28 तक।
14.गुरु-रात 12:9 तक।
16.शनि-रात 9:16 से (अमृत.)।
18.सोम-रात 7:27 तक।

दिसम्बर
6.शुक्र-सायं 4:39 तक।
10.मंगल-दि. 11:30 तक।
12.गुरु-दिन 8:10 तक।
14.शनि-रात 4:1 तक (अमृत.)।
22.रवि-प्रातः 7:42 से।
27.शुक्र-रात 7:59 से।

त्रिपुष्कर योग

जनवरी
2.मंगल-दिन 2:31 से।

फरवरी
11.रवि-रात 8:47 से।
20.मंगल-दिन 1:56 से।
25.रवि-रात 12:7 से।

मार्च
2.शनि-दिन 10:12 तक।

अप्रैल
20.शनि-दिन 2:34 से।
30.मंगल-रात 1:23 तक।

मई
5.रवि-दिन 3:10 तक।

जून
18.मंगल-दिन 2:52 से।
23.रवि-सायं 6:15 से।

जुलाई
2.मंगल-दिन 8:27 से।

अगस्त
25.रवि-रात 10:19 से।

अक्टूबर
29.मंगल-दिन 11:0 तक।

दिसम्बर
17.मंगल-दिन 12:23 तक।
22.रवि-प्रातः 7:42 से।

द्विपुष्कर योग

जनवरी
21.रवि-रा.शे. 5:14 से।

मार्च
16.शनि-रात 8:40 से।
26.मंगल-दिन 2:24 से।

जून
23.मंगल-दिन 12:26 तक।

सितम्बर
24.मंगल-सायं 5:57 तक।

नवम्बर
17.रवि-रात 8:11 से।
27.मंगल-रात 3:54 से।

संधिकर योग

जून
27.बुध-रात 10:32 से।

अगस्त
21.बुध-प्रातः 6:13 तक।
28.बुध-रात 7:54 से।

अक्टूबर
9.बुध-प्रातः 7:36 तक।
23.बुध-प्रातः 6:39 तक।

यमघण्ट योग

जनवरी
10.बुध-रात 7:15 तक।
28.रवि-दिन 2:22 तक।

अप्रैल
11.गुरु-रात 4:54 तक।
12.शुक्र-रात 4:31 तक।

मई
9.गुरु-दिन 25:53 तक।
10.शुक्र-दिन 12:23 तक।
18.शनि-रात 12:29 से।

जून
15.शनि-प्रातः 7:48 से।

जुलाई
13.शनि-सायं 5:42 तक।
15.सोम-रात 10:19 से।

सितम्बर
1.रवि-रात 10:53 से।
9.सोम-दिन 2:58 से।
11.बुध-सायं 5:31 से।
24.मंगल-रात 3:42 से।

अक्टूबर
9.बुध-रात 1:44 से।
22.मंगल-दिन 11:37 से।
27.रवि-दिन 3:19 से।

नवम्बर
6.बुध-दिन 9:24 से।
19.मंगल-रात 7:6 से।

दिसम्बर
13.शुक्र-रा.शे. 5:11 से।

यायीजय योग

जनवरी
7.रवि-रात 7:12 तक।
13.शनि-दिन 3:56 से।
21.रवि-रात 8:52 तक।
25.गुरु-प्रातः 7:51 तक।
29.सोम-रा.शे. 6:5 से।

फरवरी
1.गुरु-रात 11:58 से।
3.शनि-रात 2:21 से।
4.रवि-दिन 12:27 तक।
8.गुरु-दिन 9:1 तक।
10.शनि-रात 10:24 तक।
12.सोम-रात 7:5 से।
15.गुरु-दिन 3:43 से।
17.शनि-दिन 1:8 से।
18.रवि-दिन 11:56 तक।
26.सोम-रात 9:11 से।
29.गुरु-प्रातः 7:15 से।

मार्च
2.शनि-दिन 10:12 से।
11.सोम-दिन 12:34 तक।
14.गुरु-प्रातः 6:7 से
16.शनि-रात 8:40 तक।
18.सोम-रात 9:30 से।
28.गुरु-सायं 4:19 तक।
30.शनि-सायं 5:22 तक।

अप्रैल
4.गुरु-सायं 4:5 से।
15.सोम-दिन 3:38 से।
20.शनि-रात 10:50 से।
21.रवि-सायं 5:12 तक।
29.सोम-रा.शे.4:11 से।

मई
2.गुरु-रात 10:25 तक।
6.सोम-दिन 12:48 तक।
10.शुक्र-प्रातः 5:41 से।
12.रवि-दिन 12:46 से।
18.शनि-दिन 11:16 से।
19.रवि-दिन 1:29 तक।
23.गुरु-दिन 8:55 से।
28.मंगल-सायं 4:31 से।
30.गुरु-प्रातः 7:0 तक।

जून
1.शनि-प्रातः 5:52 तक।
2.रवि-रात 12:37 तक।
4.मंगल-रात 11:5 से।
8.शनि-रात 8:34 से।
9.रवि-रात 9:24 तक।
10.सोम-रात 10:44 से।
15.शनि-प्रातः 7:48 तक।
17.सोम-दिन 12:48 से
20.गुरु-प्रातः 6:26 तक।
24.सोम-सायं 5:33 तक।
30.रवि-दिन 8:46 तक।

जुलाई
1.सोम-दिन 10:30 से।
7.शनि-रात 3:44 तक।
8.सोम-प्रातः 6:17 से।
13.शनि-दिन 12:25 तक।
15.सोम-दिन 3:56 तक।
21.रवि-दिन 3:56 तक।
25.गुरु-रात 8:21 से।
27.शनि-सायं 5:3 तक।
29.सोम-दिन 2:11 से।

अगस्त
5.सोम-दिन 3:25 तक।
8.गुरु-रात 9:56 से।
11.रवि-समस्त।
17.शनि-दिन 10:15 से।
19.सोम-दिन 8:50 से।
22.गुरु-सायं 5:33 तक।
25.रवि-दिन 10:24 से।
29.गुरु-रात 7:53 से।
31.शनि-रात 9:20 से।

सितम्बर
5.गुरु-दिन 10:6 से।
8.रवि-दिन 1:0 तक।
9.सोम-सायं 5:7 से।
14.शनि-सायं 4:27 तक।
16.सोम-दिन 1:6 तक।
19.गुरु-प्रातः 6:17 तक।
22.रवि-प्रातः 6:22 तक।
27.गुरु-सायं 4:25 तक।
28.शनि-समस्त।

अक्टूबर
3.गुरु-दिन 3:18 तक।
5.शनि-रात 8:15 तक।
7.सोम-प्रातः 6:16 से।
11.शुक्र-प्रातः 6:52 से।
13.रवि-रात 11:49 तक।
17.गुरु-सायं 5:24 तक।
19.रात-दिन 12:47 से।
21.शनि-प्रातः 6:41 तक।

नवम्बर
3.रवि-रात 8:22 से।
4.सोम-प्रातः 7:21 तक।
7.गुरु-रात्रि-9:2 से।
10.रवि-प्रातः 7:52 से।
16.शनि-रात 9:16 से।
21.गुरु-रात 8:45 से।
25.सोम-रात 1:48 से।
28.गुरु-दिन 8:6 से।

दिसम्बर
5.गुरु-दिन 11:53 से।
14.शुक्र-सायं 4:14 से।
19.गुरु-दिन 12:4 से।
22.रवि-प्रातः 7:42 से।
23.सोम-सायं 5:17 से।
26.गुरु-सायं 5:41 तक।
28.शनि-रात 9:55 तक।

स्थायीजय योग

फरवरी
2.शुक्र-रात 1:33 से
6.मंगल-रात 3:6 से
9.शुक्र-प्रातः 7:11 तक।
16.शुक्र-दिन 2:5 से।
27.मंगल-रा.शे. 5:9 से।

मार्च
29.शुक्र-सायं 5:8 तक।

अप्रैल
2.मंगल-दिन 3:2 तक।
16.मंगल-प्रातः 6:9 से।
19.मंगल-दिन 12:0 से।
30.मंगल-रात 2:33 से।

मई
7.मंगल-दिन 10:34 तक।
31.शुक्र-प्रातः 5:27 से।

जून
4.मंगल-रात 9:52 से।
21.शुक्र-प्रातः 6:38 तक।
25.मंगल-सायं 4:31 तक।

जुलाई
2.मंगल-दिन 8:27 से।
9.मंगल-प्रातः 7:57 से।

अगस्त
16.शुक्र-दिन 10:17 से।
30.शुक्र-रात 8:21 से।

सितम्बर
6.शुक्र-दिन 12:9 से।
10.मंगल-सायं 6:1 से।
20.बुध-रात 1:26 से।
24.गुरु-सायं 5:57 से।

अक्टूबर
1.मंगल-दिन 10:13 तक।

नवम्बर
4.सोम-दिन 8:37 तक।
8.शुक्र-रात 7:58 से।
14.गुरु-प्रातः 7:43 से।
22.शुक्र-रात 9:21 से।
29.शुक्र-दिन 10:35 से।

दिसम्बर
13.शुक्र-सायं 6:11 से।
27.शुक्र-रात 7:59 तक।

रवियोग

जनवरी
2.मंगल-दिन 9:53 से।
3.बुध-दिन 12:26 तक।
14.रवि-दिन 2:23 से।
15.सोम-दिन 12:42 तक।
16.मंगल-दिन 11:2 से।
17.बुध-दिन 9:26 तक।
19.शुक्र-प्रातः 6:47 से।
20.शनि-रा.शे.5:21 तक।
22.सोम-रा.शे.5:36 से।
23.मंगल-रा.शे.6:29 तक।
25.गुरु-प्रातः 7:51 तक।
31.बुध-रात 9:55 से।

फरवरी
1.गुरु-रात 11:58 तक।
12.सोम-रात 7:5 से।
13.मंगल-सायं 5:28 तक।
14.बुध-सायं 4:0 से।
15.गुरु-दिन 2:43 तक।
17.शनि-दिन 1:8 से।
18.रवि-समस्त।
19.सोम-दिन 1:11 तक।
20.मंगल-दिन 9:59 से दिन 1:56 तक।
22.गुरु-सायं 4:56 से।
23.शुक्र-रात 7:5 से।

मार्च
2.शनि-दिन 10:12 से।
3.रवि-दिन 10:56 तक।
12.मंगल-रात 12:2 से।
13.बुध-रात 10:44 तक।
14.गुरु-रात 9:40 से।
15.शुक्र-रात 8:58 तक।
18.सोम-रात 9:30 से।
19.मंगल-समस्त।
20.बुध-रात 12:16 तक।
22.शुक्र-रा.शे. 4:44 से।
23.शनि-समस्त।
30.शनि-सायं 6:36 से।
31.रवि-समस्त।

अप्रैल
1.सोम-सायं 6:47 तक।
10.बुध-रा.शे. 5:40 से।
11.गुरु-रात 4:54 तक।
12.शुक्र-रा.शे.4:31 से।
13.शनि-समस्त।
14.रवि-रा.शे.5:2 तक।
17.बुध-प्रातः 7:42 से।
18.गुरु-समस्त।
19.शुक्र-दिन 12:0 तक।
21.रवि-सायं 5:12 से
22.सोम-रात 7:43 तक।
29.सोम-रात 2:12 से।
30.मंगल-रात 1:23 तक।

मई
10.शुक्र-दिन 12:23 से।
11.शनि-समस्त।
12.रवि-दिन 12:46 तक।
13.सोम-दिन 1:43 से।
14.मंगल-दि.3:10 तक।
16.गुरु-रात 7:19 से।
17.शुक्र-समस्त।
18.शनि-रा.12:29 तक।
20.सोम-समस्त।
21.मंगल-प्रातः 5:22 से।
22.बुध-प्रातः 7:22 तक।
29.बुध-रात 8:23 से।
30.गुरु-प्रातः 7:0 तक।

जून
9.रवि-रात 9:24 से।
10.सोम-रा.10:44 तक।
11.मंगल-रात 12:31 से।
12.बुध-रात 2:43 तक।
14.शुक्र-समस्त।
15.शनि-दिन 7:48 से।
16.रवि-समस्त।
17.सोम-दि.12:48 तक।
19.बुध-सायं 4:30 से।
20.गुरु-सायं 5:41 से।
27.गुरु-दिन 1:42 से।
28.शुक्र-दिन 12:4 तक।

जुलाई
9.मंगल-प्रातः 7:57 से।
10.बुध-दिन 10:4 तक।
11.गुरु-दिन 12:29 से।
12.शुक्र-दिन 3:5 तक।
14.रवि-रात 8:9 से।
15.सोम-समस्त।
16.मंगल-रा.12:3 तक।
18.गुरु-रात 2:9 से।
19.शुक्र-रात 2:26 तक।
25.गुरु-रात 8:21 से।
26.शुक्र-सायं 6:42 तक।

अगस्त
7.बुध-रात 7:48 से।
8.गुरु-रात 10:21 तक।
9.शुक्र-रात 12:59 से।
10.शनि-रात 3:30 तक।
13.मंगल-प्रातः 7:35 से।
14.बुध-समस्त।
15.गुरु-दिन 9:55 तक।
18.रवि-दिन 9:41 से।
19.सोम-दिन 8:50 तक।
24.शनि-रात 11:43 से।
25.रवि-रात 10:19 तक।

सितम्बर
5.गुरु-समस्त दिन
6.शुक्र-प्रातः 8:10 से।
7.शनि-दिन 10:43 तक।
8.रवि-दिन 1:0 से।
9.सोम-दिन 2:58 तक।
11.बुध-सायं 5:31 से
12.गुरु-समस्त दिन
13.शुक्र-सायं 6:3 तक। पुनः रात 1:0 से।
14.शनि-सायं 5:37 तक।
16.सोम-दिन 3:43 से।
17.मंगल-दि.2:20 तक।
22.रवि-रा.शे. 5:8 से।
23.सोम-रात 4:15 तक।

अक्टूबर
5.शनि-रात 8:15 से।
6.रवि-रात 10:20 तक।
7.सोम-रात 11:55 से।
8.मंगल-रात 1:5 तक।
10.गुरु-रात 1:53 से।
11.शुक्र-रात 1:34 से।
12.शनि-समस्त दिन
13.रवि-रात 1:49 तक।
15.मंगल-रात 8:58 से।
16.बुध-रात 7:20 तक।
22.मंगल-दि.11:37 से।
23.बुध-समस्त।
24.गुरु-दिन 11:38 तक।

नवम्बर
3.रवि-समस्त।
4.सोम-प्रातः 7:21 से।
5.मंगल-दिन 8:36 तक।
7.गुरु-दिन 9:40 से।
8.शुक्र-दिन 9:26 तक।
10.रवि-प्रातः 7:52 से।
11.सोम-समस्त। पुनः रा.शे. 5:6 तक।
13.बुध-रात 1:47 से।
14.गुरु-रात 12:9 तक।
21.गुरु-रात 7:49 से।
22.शुक्र-रात 8:57 तक।

दिसम्बर
4.बुध-सायं 5:18 से।
5.गुरु-सायं 5:11 तक।
6.शुक्र-सायं 4:39 से।
7.शनि-दिन 3:46 तक।
9.सोम-दिन 1:7 से।
10.मंगल-समस्त।
11.बुध-दिन 9:50 तक।
12.गुरु-प्रातः 6:35 से।
13.शुक्र-रा.शे. 5:11 तक।
20.शुक्र-रात 5:45 से।
21.शनि-समस्त।
22.रवि-प्रातः 7:42 तक।

वास्तु सम्बन्धी आवश्यक जानकारी

1. भूमि का आकार आयताकार, वर्गाकार एवं गोमुख सर्वोत्तम होता है। उत्तर-दक्षिण लम्बी भूमि ज्यादा लाभदायक होती है। भूमि पश्चिम-दक्षिण ऊँचा व पूरब-उत्तर नीचा होने पर ज्यादा लाभदायक होती है। छत की ढलान ईशान में शुभ होती है। वृत्ताकार भूखण्ड में निर्माण भी वृत्ताकार ही होना चाहिये।
2. पूरब-उत्तर का कोना (ईशान कोण) में मन्दिर, जलस्रोत, कुआँ, हैण्डपम्प, जलाशय रखना चाहिये। ऐसा नहीं है तो लोहे की पाइप में नल लगा दें या लोटे में जल भरकर रख दें।
3. सिंहमुखी भूखण्ड व्यावसायिक भवन हेतु शुभ होता है।
4. भूखण्ड का उत्तर या पूर्व या ईशान कोण में विस्तार शुभ होता है।
5. भूखण्ड के उत्तर या पूर्व में मार्ग शुभ होता है। दक्षिण या पश्चिम में मार्ग व्यापारिक स्थल के लिये शुभ होते हैं।
6. पूरब-दक्षिण के कोने (अग्निकोण) में रसोई घर, जनरेटर, बिजली का मीटर व गर्म सारी चीजें रख सकते हैं।
7. दक्षिण-पश्चिम के कोने (नैर्ऋत्यकोण) में भवन स्वामी का शयन कक्ष होना चाहिये।
8. उत्तर-पश्चिम के कोने (वायव्य कोण) में कुँवारी कन्या का कमरा होना चाहिये।
9. सीढ़ी (घड़ी अनुसार दाईं तरफ घुमते हुये) पर पहला कदम पूरब या उत्तर चढ़ना उत्तम माना जाता है। एकदम ईशान या अग्नि कोण पर सीढ़ी नहीं बनाना चाहिये। पश्चिम-दक्षिण में सीढ़ी बनाने पर यह दिशा अपने आप भारी हो जाती है। इसलिये सीढ़ी के नीचे शौचालय, स्नानघर स्टोर, मन्दिर नहीं बनाना चाहिये। यह रोग व कष्ट कारक होता है। सीढ़ियों की संख्या विषम (1,3,5,7) होनी चाहिये।
10. हर दिशा में खिड़कियों की संख्या विषम (1,3,5,7) होनी चाहिये। पूरब और उत्तर में खिड़की बनाना व खुला रखना सर्वोत्तम होता है। चूँकि इस दिशा से हल्की धूप व हवा प्राप्त होती रहती है। जो हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होती है। दक्षिण और पश्चिम दिशा में खिड़की व खुलापन कम होना चाहिये। क्योंकि इस दिशा में सूर्य में तेजी व गर्म हवा आती है।
11. यदि आवासीय परिसर में बेसमेन्ट का निर्माण कराना हो तो उसे उत्तर या पूर्व में ब्रह्मस्थान को बचाते हुये बनाना चाहिये। बेसमेन्ट की ऊँचाई कम से कम 9 फीट होनी चाहिये तथा वह तल से 3 फीट ऊपर होना चाहिये, जिससे उसमें प्रकाश व हवा का निर्बाध रूप से आवागमन हो सके।
12. भवन के प्रत्येक मंजिल के छत की ऊँचाई 12 फीट होनी चाहिये, किन्तु यह 10 फीट से कम कदापि नहीं होनी चाहिये।
13. भवन का दक्षिणी भाग हमेशा उत्तरी भाग से ऊँचा होना चाहिये एवं पश्चिमी भाग हमेशा पूर्वी भाग से ऊँचा होना चाहिये। भवन में नैर्ऋत्य सबसे ऊँचा व ईशान सबसे नीचा होना चाहिये।
14. घर में सारे कार्य मनुष्यों को पूरब व उत्तर मुँह होकर करना सर्वोत्तम है। जैसे—आइना देखना, खाना पकाना, बच्चों का पढ़ना, पूजा करना इत्यादि। सोफे पर बैठते समय मुँह पूरब व उत्तर सर्वोत्तम माना जाता है।
15. सोते समय शिर दक्षिण या पूरब होना चाहिये, क्योंकि पूरब में मन्दिर व प्रत्यक्ष देवता सूर्य उदय होते हैं, इसलिये पुरब पैर करके नहीं सोना चाहिये। यदि व्यक्ति पूरब या दक्षिण दिशा में पैर करके सोते हैं तो मन में नकरात्मक विचार और डरावने सपने आते हैं। इसके अलावा व्यक्ति निराशा और भय का शिकार हो जाता है।
16. शौच करते समय आपका मुँह दक्षिण या उत्तर दिशा में होना चाहिये।
17. पूरब या उत्तर दिशा में ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम व बच्चों की पढ़ाई के लिये उत्तम स्थान है तथा पूरब-उत्तर दिशा सबसे हल्का होना चाहिये। इस दिशा में छोटे पेड़ तुलसी जी, बेला, चम्पा, चमेली, गुड़हल इत्यादि लगाना चाहिये। बड़े पेड़ इस दिशा में नहीं लगाने चाहिये।
18. नवनिर्मित मकान में पीलरों की संख्या सम (4,6,8,12) होनी चाहिये।
19. मकान में प्रवेशद्वार पूरब व उत्तर दिशा सर्वोत्तम होती है।
20. मकान के एकदम मध्य में पीलर या भारी चीज नहीं रखनी चाहिये। ऐसा होने पर पेट के रोग का कारण बनता है।
21. स्टोर में आलमारी का मुँह पूरब या उत्तर खुलना सर्वोत्तम माना जाता है। दक्षिण पश्चिम के कोने (नैर्ऋत्यकोण) में शौचालय-स्नानगृह व नाली नहीं होना चाहिये। अग्निकोण, ईशानकोण, नैर्ऋत्यकोण में नाली नहीं होनी चाहिये। ये कोण धन व मालिक का स्थान होता है।
22. प्रवेश द्वार के लिये चारो दिशाओं में भूमि की लम्बाई में 9 भाग करके प्रवेश करते समय पाँच भाग दायें एवं तीन भाग दायें छोड़कर शेष भाग में प्रवेश द्वार बनवाये।
23. घर के उत्तर दिशा में कुआँ, तालाब, बगीचा, पूजाघर, तहखाना, स्वागतकक्ष, कोषागार व लिविंग रूम बनाये जा सकते हैं।
24. भवन के द्वार के सामने मन्दिर, खम्भा व गड्ढा अशुभ होते हैं।
25. घर के पूजा स्थान में 7 इंच से बड़ी मूर्तियाँ स्थापित नहीं करनी चाहिये। यदि मूर्ति पहले से है। तो उसकी विधि-विधान से पूजा करते रहें।
26. घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यदेव की प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमतीचक्र व दो शालिग्राम नहीं रखना चाहिये।

* वास्तु शास्त्र का यथा सम्भव पालन करें।

वास्तुचक्र

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

विवाह मुहूर्त एवं विविध मुहूर्त-सन् 2024 ई.

ता. दिन नक्षत्र

विवाह मुहूर्त

जनवरी

16.मंगल-पौष शुक्ल 5 दिन 11:2 से उ.भा. में मृत्युबाण।

17.बुध-पौष शुक्ल 7 प्रातः 8:10 मृत्युबाण बाद उ.भा. में रे.8 दिन में ल.11 (दिन 8:21 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.15।

18.गुरु-पौष शुक्ल 8 रेवती में राहुयुति।

20.शनि-पौष शुक्ल 10 रा.शे. 5:21 से रोहिणी में रे.8 रात्रि में पञ्चेष्टलग्न का अभाव है।

21.रवि-पौष शुक्ल 11 दिन 9:18 भद्रा पूर्व रोहिणी में रे.8 दिन में ल.11 (दिन 8:5 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 10। रात 8:52 भद्रा बाद ल.5 (रात 8:52 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (7स्थ शनि दान) या ल. 8 (रात 1:52 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.12 (7मस्थ चन्द्र अशुभ)।

22.सोम-पौष शुक्ल 12 मृगशिरा में सूर्यवेध।

27.शनि-माघ कृष्ण 2 दिन 11:54 से मघा में सूर्यवेध।

28.रवि-माघ कृष्ण 3 मघा में पूर्वदोष।

29.सोम-माघ कृष्ण 4 सायं 5:0 से उ.फा. में राहुवेध।

30.मंगल-माघ कृष्ण 5 उ.फा. में पूर्वदोष। रात 7:33 से हस्त में रे.7 ल.5 (रात 7:33 से) इष्ट 6 प्र.व.वि. 17 (7मस्थ शनि दान) या ल.8 (रात 1:14 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.17।

31.बुध-माघ कृष्ण 5 हस्त में रे.7 दिन में ल.11 (प्रातः 7:23 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.10 (8मस्थ चन्द्र अशुभ) या ल.1 (दिन 10:22 से) इष्ट 5 प्र.व. वि. 10 (6स्थ चन्द्र अशुभ) या ल.4 (सायं 4:9 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.15 (6स्थ शुक्र अशुभ)।

फरवरी

1.गुरु-माघ कृष्ण 6 रात 11:58 से स्वाती में शनिवेध।

2.शुक्र-माघ कृष्ण 7 स्वाती में पूर्वदोष।

3.शनि-माघ कृष्ण 8 रात 2:41 मृत्युबाण बाद अनुराधा में रे.9 ल.8 (रात 2:41 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (लग्नस्थ चन्द्र दान)।

4.रवि-माघ कृष्ण 9 रात 12:22 भद्रापूर्व अनुराधा रे.9 ल.1 (दिन 10:5 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.10 (8वां चन्द्र अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.5 (सायं 6:10 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (7मस्थ शनि दान)।

5.सोम-माघ कृष्ण 10 रात 3:25 से मूल में रे.6 रात्रि में पञ्चेष्टलग्न अभाव है।

6.मंगल-माघ कृष्ण 11 रात 3:6 तक मूल रे.6 दिन में ल.12 (दिन 8:29 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.12 (12मस्थ शनि अशुभ) या ल.गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.5 सायं 6:2 से) इष्ट 6 प्र.व.वि. 13।। (7मस्थ शनि दान) या ल.8 (रा.12:45 से) इष्ट 7 प्र.व.वि.16।।।

12.सोम-माघ शुक्ल 3 रात 8:18 मृत्युबाण बाद उ.भा. में रे.8 ल.8 (रात 12:19 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.11।। (3स्थ शुक्र अशुभ)।

13.मंगल-माघ शु.4 दिन 8:57 भद्रा पूर्व उ.भा. में रे.8 दिन में ल.10 (प्रातः 6:28 तक) इष्ट 5प्र.व.वि.13।। (लग्नस्थ सूर्य दान) या ल.12 (प्रातः 7:59 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (12स्थ शनि अशुभ)।

14.बुध-माघ शुक्ल 5 रेवती में राहुयुति।

17.शनि-माघ शुक्ल 8 सायं 5:51 वैधृति पूर्व दिन 1:8 से रोहिणी रे.9 ल.4 (दिन 2:59 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.14।। (7मस्थ भौमदान) या ल.गोधूलि (सूर्यास्त-काल)।

18.रवि-माघ शुक्ल 9 रोहिणी में वैधृति है।

19.सोम-माघ शुक्ल 10 मृगशिरा में भौमवेध है किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है।

24.शनि-माघ शुक्ल 15 मघा में भौमवेध।

25.रवि-फाल्गुन कृष्ण 1 रात 12:7 से उ.फा. में राहुवेध।

26.सोम-फाल्गुन कृष्ण 2 उ.फा. में पूर्वदोष।

27.मंगल-फाल्गुन कृष्ण 3 हस्त में केतुभोग्य।

29.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 5 प्रातः 7:15 से स्वाती में शनिवेध।

मार्च

1.शुक्र-फाल्गुन कृष्ण 6 स्वाती में पूर्वदोष।

2.शनि-फाल्गुन कृष्ण 7 दिन 3:9 भद्रा बाद अनुराधा में रे.9 ल. गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.6 (सायं 6:38 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.14 (7मस्थ राहु दान) या ल.8 (रात 11:7 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.10 (लग्नस्थ चन्द्र दान) या ल.9 (रात 1:24 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 या ल.10 (रात 3:30 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 13।।

3.रवि-फाल्गुन कृष्ण 8 दिन 10:56 तक अनुराधा में रे.9 दिन में ल.1 (दिन 8:15 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.13।। (8मस्थ चन्द्र अशुभ)।

4.सोम-फाल्गुन कृष्ण 9 दिन 3:32 मृत्युबाण बाद मूल में रे.8 ल. गोधूलि (सूर्यास्तकाल) या ल.8 (रात 10:59 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.13 (3स्थ शुक्र अशुभ) या ल.9 (रात 1:16 से) इष्ट 5 प्र. व.वि.12 (लग्नस्थ चन्द्र दान)।

5.मंगल-फाल्गुन कृष्ण 10 दिन 9:34 व्यतिपात पूर्व मूल में रे.9 दिन में ल.1 (दिन 8:7 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.13।। (10मस्थ भौम अशुभ)।

6.बुध-फाल्गुन कृष्ण 11 दिन 10:16 से उ.षा. में भौमभुक्त किन्तु चंद्र से अभुक्त होने से अशुभ है। रात 12:8 से (चन्द्रशुद्धि उपरान्त) उ.षा. में रे.8 ल.9 (रात 1:9 से) इष्ट 6 प्र.व. वि.17 या ल.10 (रात 3:15 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 13।।।

7.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 12 दिन 9:17 तक उ.षा. में रे.8 दिन में ल.1 (दिन 8:0 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.16।। (10मस्थ भौम अशुभ)।

11.गुरु-फाल्गुन शुक्ल 1 उ.भा. में सूर्यभोग्य।

12.मंगल-फाल्गुन शुक्ल 2 रेवती में राहुयुति।

पश्चात् मीन में सूर्य।

अप्रैल

18.गुरु-चैत्र शुक्ल 10 दिन 9:41 से मघा रे.8 दिन ल. 3 (दिन 9:41 से) इष्ट प्रह 5 प्र.व. वि.15।। या दिन ल. 4 (दिन 11:13 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.15 (8वां भौम अशुभ) या ल. गोधूलि या ल.8 (रात 8:14 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 12 या ल.9 (रात 10:31 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 10 या ल. 11 (रात 2:24 से) इष्ट 5 प्र.व. वि.12 (7मस्थ चन्द्र अशुभ)।

19.शुक्र-चैत्र शुक्ल 11 दिन 12:0 तक मघा में रे 6 दिन ल.3 (दिन 8:56 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.15।। दिन ल.4 (दिन 11:10 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.15 (8वां भौम अशुभ)।

20.शनि-चैत्र शुक्ल 12 दिन 2:34 से उ.फा. में सूर्य वेध है किन्तु चन्द्र से अभुक्त होने से अशुभ है।

21.रवि-चैत्र शुक्ल 13 उ.फा. में पूर्वदोष।

22.सोम-चैत्र शुक्ल 14 हस्त में केतुयुति।

23.मंगल-चैत्र शुक्ल 15 रात 9:59 से स्वाती में शनि वेध।

24.बुध-वैशाख कृष्ण 1 स्वाती में शनिवेध।

25.गुरु-वैशाख कृष्ण 1 रा.शे. 4:4 व्यतीपात बाद अनुराधा में रे 10 पंचेष्ट लग्न का अभाव है।

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा में रे 10 दिन ल.4 (दिन 10:43 से) इष्ट 5 प्र.व. वि. 10। पश्चात् शुक्रास्त दोष है।

जुलाई

9.मंगल-आषाढ़ शुक्ल 4 रात 3:10 व्यतीपात पूर्व प्रातः 7:57 से मघा में रे.9 दि.ल. 4 (प्रातः 7:57 से) इष्ट 6 प्र.व. वि.15 (10वां भौम अशुभ है) या दिन ल.8 (दिन 2:48 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 10।। (7वां गुरु दान) या ल. गोधूलि या ल.1 (रात 11:57 से) इष्ट 6 प्र.व. वि.13।।

10.बुध-आषाढ़ शुक्ल 4 मघा में व्यतिपात है।

11.गुरु-आषाढ़ शुक्ल 5 दिन 12:29 से उ.फा. में राहुवेध है किन्तु चन्द से अभुक्त होने से अशुभ है।

12.शुक्र-आषाढ़ शुक्ल 6 उ.फा. में पूर्वदोष।

13.शनि-आषाढ़ शुक्ल 7 हस्त में केतुयुति।

14.रवि-आषाढ़ शुक्ल 8 रा.8:9 से स्वाती में मृत्युबाण है।

15.सोम-आषाढ़ शुक्ल 9 रात 9:26 से मृत्युबाण के बाद रात 10:19 तक स्वाती में रे.9 रात्रि में पंचेष्ट लग्न का अभाव है।

16.मंगल-आषाढ़ शुक्ल 10 रात 12:3 से अनुराधा में भौमवेध है किन्तु चन्द्र द्वारा अभुक्त होने से अशुभ है।

17.बुध-आषाढ़ शुक्ल 11 अनुराधा में पूर्वदोष है।

पश्चात हरिशयन है।

नवम्बर

17.रवि-मार्गशीर्ष कृष्ण 2 रात 7:19 मृत्युबाण पूर्व रोहिणी में रे.8 दिन ल.11 (दिन 12:45 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 10 या ल.1 (दिन 3:44 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.15।। (8वां बुध दान) या ल. गोधूलि।

18.सोम-मार्गशीर्ष कृष्ण 3 रात 7:2 मृत्युबाण के बाद मृगशिरा में रे.9 ल. गोधूलि।

22.शुक्र-मार्गशीर्ष कृष्ण 7 रात 8:57 से मघा में रे.7 ल.4 (रात 9:10 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.13 (6ठा शुक्र अशुभ) या ल.6 (रा.1:42 से) इष्ट 6 प्र.व. वि.12।। (7वां राहुदान)।

23.शनि-मार्गशीर्ष कृष्ण 8 दिन 3:30 वैधृति पूर्व मघा में रे.8 दिन ल.11 (दिन 12:20 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 10 (7मस्थ चन्द्र दान) या दिन ल.1 (दिन 3:19 से) इष्ट 5 प्र.व.वि. 11।। (8वां बुध दान)।

24.रवि-मार्गशीर्ष कृष्ण 9 रात 12:24 से उ.फा. में केतुयुति।

25.सोम-मार्गशीर्ष कृष्ण 10 उ.फा. में पूर्वदोष।

दिसम्बर

2.सोम-मार्गशीर्ष शुक्ल 1 सायं 4:3 से मूल भौमवेध है किन्तु चन्द्र से अभुक्त होने से अशुभ है।

3.मंगल-मार्गशीर्ष शुक्ल 2 मूल में पूर्वदोष।

4.बुध-मार्गशीर्ष शुक्ल 3 सायं 5:18 से उ.षा. में रे.10 ल. गोधूलि या ल.6 (रात 12:51 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.13।। (7वां राहु दान)।

5.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 4 दिन 12:49 मृत्युबाण पूर्व उ.षा. में रे.10 दिन ल.10 (दिन 9:41 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (7वां भौम अशुभ)।

9.सोम-मार्गशीर्ष शुक्ल 9 दिन 1:7 से उ.भा. में राहुयुति है।

10.मंगल-मार्गशीर्ष शुक्ल 10 उ.भा. में पूर्वदोष है। रात 8:48 व्यतिपात बाद रेवती में केतु-वेध है।

11.बुध-मार्गशीर्ष शुक्ल 11 रेवती में पूर्व दोष।

13.शुक्र-मार्गशीर्ष शुक्ल 13 रा.शे. 5:11 से रोहिणी में पाँच लग्न का अभाव है।

14.शनि-मार्गशीर्ष शुक्ल 14 दिन 8:38 मृत्युबाण पूर्व रोहिणी में दिन में पंचेष्ट लग्न का अभाव है।

15.रवि-मार्गशीर्ष शुक्ल 15 दिन 8:9 मृत्युबाण के बाद मृगशिरा में रे.8 दिन ल. (दिन 8:58 से) इष्ट 5 प्र.व.वि.12 (7वाँ भौम अशुभ) या दिन ल. (दिन 1:44 से) इष्ट 6 प्र.व.वि. 16।। (8वां बुध दान) या ल. गोधूलि या ल.6 (रात 12:3 से) इष्ट 6 प्र.व.वि.13।। (7वां राहुदान)। आगे खरमास दोष है।

वधू प्रवेश व द्विरागमन मुहूर्त

फरवरी

14.बुध-माघ शुक्ल 5 रेवती ल.7 द्विरागमन।

15.गुरु-माघ शु.6 अश्विनी ल.2 वधू/द्विरागमन।

21.बुध-माघ शुक्ल 12 पुन. ल.12,2,7 द्विरा.।

22.गुरु-माघ शुक्ल 13 पुष्य ल.2 वधू प्र. ल.12,2 द्विरा.।

मार्च

7.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 12 उ.षा. ल.2 व.प्र.।

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी द्विरा.ल.12।

अप्रैल

15.सोम-चैत्र शुक्ल 7 पुनर्वसु (ल.2 प्रातः 7:15 से) या (ल.3 दिन 9:11 से) द्विरा.।

18.गुरु-चैत्र शुक्ल 10 मघा (ल.8 रात 8:14 से) व.प्र.।

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा ल.2 प्रातः 6:33 से या ल. 3 दिन 8:29 से या ल.6 सायं 5:28 से द्विरा.।

नवम्बर

18.सोम-मार्गशीर्ष कृष्ण 3 मृग. (ल.8 प्रातः7:50 तक) व.प्र.।

27.बुध-मार्गशीर्ष कृष्ण 12 चित्रा (ल.12 दिन 1:34 से) या (ल.2 सा.4:39 से) या (ल.3 सायं 6:35 से) द्विरा.।

दिसम्बर

6.शुक्र-मार्गशीर्ष शुक्ल 5 श्रवण ल.8 प्रातः 6:31 तक व.प्र.।

12.गुरु-मार्ग शुक्ल 12 अश्विनी (ल.8 प्रातः 7:5 तक) व.प्र.।

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त

जनवरी

21.रवि-पौष शुक्ल 11 रोहिणी।

फरवरी

21.बुध-माघ शुक्ल 12 पुन. ल.2।

मार्च

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी ल.11।

अप्रैल

18.गुरु-चैत्र शुक्ल 10 श्लेषा ल.3 दिन 8:59 से।

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा ल.4 दिन 10:43 से 8वाँ शनिदान।

जुलाई

8.सोम-आषाढ़ शुक्ल 3 श्लेषा (ल.4 प्रातः 6:17 से) 8वाँ शनिदान।

11.गुरु-आषाढ़ शुक्ल 5 पू.फा. ल.4 प्रातः 5:39 से 8वाँ शनिदान।

चौल (मुण्डन) एवं कर्णवेध मुहूर्त

जनवरी

21.रवि-पौष शुक्ल 11 रोहिणी, मुंडन।

25.गुरु-पौष शुक्ल 15 पुष्य, मुंडन।

26.शुक्र-माघ कृष्ण 1 पुष्य, कर्णविध।

फरवरी

4.रवि-माघ कृष्ण 9 अनुराधा।

15.गुरु-माघ शुक्ल 6 अश्विनी।

21.बुध-माघ शुक्ल 12 पुनर्वसु, ल.12,2 चौल., ल.12 कर्ण-वेध।

22.गुरु-माघ शुक्ल 13 पुष्य।

मार्च

3.रवि-फाल्गुन कृष्ण 8 अनुराधा।

4.सोम-फाल्गुन कृष्ण 9 मूल।

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी।

अप्रैल

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा ल.2।

गृहारम्भ मुहूर्त

जनवरी

25.गुरु-पौष शुक्ल 15 पुष्य ल. 12,6।

फरवरी

21.बुध-माघ शुक्ल 12 पुन. ल.8।

22.गुरु-माघ शुक्ल 13 पुष्य ल.2।

अप्रैल

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा ल.3 दिन 8:29 से।

जुलाई

22.सोम-श्रावण कृष्ण 1 धनिष्ठा ल.2 रात 12:44 से।

अगस्त

14.सोम-श्रावण शुक्ल 15 धनिष्ठा ल.8 दिन 1:25 से या ल.2 रात 10:56 से, केतुदान-जीर्ण गृ.प्र.।

सितम्बर

14.शनि-भाद्रपद शुक्ल 11 श्रवण ल.12 सायं 6:7 से) 12वां शनिदान या ल.2 रात 9:22 से।

16.सोम-भाद्रपद शुक्ल 13 धनिष्ठा ल.9 दिन 12:46 से।

नवम्बर

18.सोम-मार्ग.कृष्ण 3 मृग. ल.8 दिन 8:47 तक 8वाँ चन्द्रदान।

गृहप्रवेश मुहूर्त

जनवरी

17.बुध-पौष शुक्ल 7 उ.भा.।

20.शनि-पौष शु.10 रोहिणी ल.9।

मार्च

7.गुरु-फाल्गुन कृ.12 उ.षा. ल.12।

अगस्त

1.गुरु-श्रावण कृष्ण 12 मृग. ल.6 दिन 8:49 से केतुदान, जीर्ण गृहप्रवेश।

नवम्बर

27.बुध-मार्गशीर्ष कृष्ण 12 चित्रा (ल.12 दिन 1:34 उ.)लग्नस्थ राहुदान (ल.2 सायं 4:39 से) 8वाँ शुक्रदान।

दिसम्बर

7.शनि-मार्गशीर्ष शुक्ल 6 धनिष्ठा (ल.12 दिन 12:51 से)लग्नस्थ राहुदान।

विपणि -दुकान मुहूर्त

जनवरी

3.बुध-पौष कृष्ण 7 उ.फा.।

4.गुरु-पौष कृष्ण 8 हस्त।

6.शनि-पौष कृष्ण 10 स्वाती।

8.सोम-पौष कृष्ण 12 अनुराधा।

17.बुध-पौष शुक्ल 7 उ.भा.।

21.रवि-पौष शुक्ल 11 रोहिणी।

25.गुरु-पौष शुक्ल 15 पुष्य।

26.शुक्र-माघ कृष्ण 1 पुष्य।

31.बुध-माघ कृष्ण 5 हस्त।

फरवरी

4.रवि-माघ कृष्ण 9 अनुराधा।

12.सोम-माघ शुक्ल 3 उ.भा.।

15.गुरु-माघ शुक्ल 6 अश्विनी।

22.गुरु-माघ शुक्ल 13 पुष्य।

मार्च

2.शनि-फाल्गुन कृष्ण 7 अनु.।

3.रवि-फाल्गुन कृष्ण 8 अनु.।

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी।

17.रवि-फाल्गुन शुक्ल 8 मृग.।

20.बुध-फाल्गुन शुक्ल 11 पुष्य।

30.शनि-चैत्र कृष्ण 5 अनु.।

अप्रैल

1.सोम-चैत्र कृष्ण 7 मूल।

12.शुक्र-चैत्र शुक्ल 4 रोहिणी।

17.बुध-चैत्र शुक्ल 9 पुष्य।

मई

9.गुरु-वैशाख शु.1 कृत्तिका।

10.शुक्र-वैशाख शु.2 रोहिणी।

13.सोम-वैशाख शु.6 पुनर्वसु।

20.सोम-वैशाख शु.12 चित्रा।

23.गुरु-वैशाख शु.15 विशाखा।

24.शुक्र-ज्येष्ठ कृ.1 अनुराधा।

26.रवि-ज्येष्ठ कृष्ण 3 मूल।

जून

10.सोम-ज्येष्ठ शु.4 पुष्य।

19.बुध-ज्येष्ठ शु.12 अनुराधा।

20.गुरु-ज्येष्ठ शु.13 अनुराधा।

21.शुक्र-ज्येष्ठ शु.14 मूल।

जुलाई

3.बुध-आषाढ़ कृ.12 रोहिणी।

15.सोम-आषाढ़ शु.9 स्वाती।

17.बुध-आषाढ़ शु.11 अनु.।

27.शनि-श्रावण कृ.7 रेवती।

28.रवि-श्रावण कृ.8 अश्विनी।

31.बुध-श्रावण कृ.11 रोहिणी।

अगस्त

1.गुरु-श्रावण कृ.12 मृगशिरा।

7.बुध-श्रावण शु.3 पू.फा.।

15.गुरु-श्रावण शु.10 मूल।

16.शुक्र-श्रावण शु.11 मूल।

23.शुक्र-भाद्रपद कृ.4 रेवती।

24.शनि-भाद्रपद कृ.5 अश्विनी।

सितम्बर

22.रवि-आश्विन कृ.5 कृत्तिका।

23.सोम-आश्विन कृ.6 रोहिणी।

27.शुक्र-आश्विन कृ.10 पुष्य।

अक्टूबर

7.सोम-आश्विन शु.4 अनुराधा।

17.गुरु-आश्विन शु.15 रेवती।

18.शुक्र-कार्तिक कृ.1 अश्विनी।

21.सोम-कार्तिक कृ.4 रोहिणी।

नवम्बर

2.रवि-कार्तिक शु.2 अनुराधा।

14.गुरु-कार्तिक शु.13 अश्विनी।

17.रवि-मार्गशीर्ष कृ.2 रोहिणी।

27.बुध-मार्ग.कृ.12 चित्रा।

दिसम्बर

11.बुध-मार्ग.शु.11 रेवती।

12.गुरु-मार्ग.शु.12 अश्विनी।

15.रवि-मार्ग.शु.15 मृगशिरा।

25.बुध-पौष कृ.10 चित्रा।

जलाशयारम्भ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

जनवरी

26.शुक्र-माघ कृ.1 पुष्य ल.12।

फरवरी

12.सोम-माघ शु. 3 उ.भा. ल.6।

14.बुध-माघ शु. 5 अश्विनी ल.7।

15.गुरु-माघ शु. 6 अश्विनी ल.2।

21.बुध-माघ शु.12 पुन. ल.7।

22.गुरु-माघ शु. 13 पुष्य ल.2।

मार्च

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी ल.2।

अप्रैल

15.सोम-चैत्र शु.7 पुनर्वसु ल.3।

26.शुक्र-वैशाख कृष्ण 2 अनुराधा ल.3।

जुलाई

15.सोम-आषाढ़ शु.9 स्वाती ल.9।

विद्यारम्भ व अक्षरारम्भ मुहूर्त

फरवरी

15.गुरु-माघ शुक्ल 6 अश्विनी।

21.बुध-माघ शुक्ल 12 पुन. ल.12,2।

मार्च

13.बुध-फाल्गुन शुक्ल 3 अश्विनी ल.12।

अप्रैल

14.रवि-चैत्र शु.6 आर्द्रा ल.2।

18.गुरु-चैत्र शु.10 श्लेषा ल.3।

26.शुक्र-वैशाख कृ.2 अनुराधा ल.2,3।

28.रवि-वैशाख कृ.4 मूल ल.3।

जुलाई

11.गुरु-आषाढ़ शु.5 पू.फा. ल.3।

सूतिका स्नान मुहूर्त

जनवरी

7.रवि-पौष कृष्ण 11 अनुराधा।

21.रवि-पौष शुक्ल 11 रोहिणी।

30.मंगल-माघ कृष्ण 5 उ.फा.।

मार्च

7.गुरु-फाल्गुन कृष्ण 12 उ.षा.।

अप्रैल

4.गुरु-चैत्र कृष्ण 10 श्रवण।

30.मंगल-वैशाख कृ.7 उ.षा.।

मई

9.गुरु-वैशाख शु.1 कृत्तिका।

24.शुक्र-ज्येष्ठ कृ.1 अनुराधा।

28.मंगल-ज्येष्ठ कृ.5 उ.षा.।

जून

19.बुध-ज्येष्ठ शु.12 अनुराधा।

20.बुध-ज्येष्ठ शु.13 अनुराधा।

जुलाई

21.रवि-आषाढ़ शु.15 उ.षा.।

31.बुध-श्रावण कृ.11 रोहिणी।

अगस्त

1.गुरु-श्रावण कृ.12 मृगशिरा।

सितम्बर

10.मंगल-भाद्रपद शुक्ल 7 अनुराधा।

अक्टूबर

17.गुरु-आश्विन शु.15 रेवती।

22.मंगल-कार्तिक कृ.5 मृग.।

28.सोम-कार्तिक कृ.11 पू.फा.।

नवम्बर

3.रवि-कार्तिक शुक्ल 2 अनुराधा।

4.सोम-कार्तिक शुक्ल 3 अनुराधा।

14.गुरु-कार्तिक शु.13 अश्विनी।

17.रवि-मार्गशीर्ष कृ. 2 रोहिणी।

दिसम्बर

5.गुरु-मार्गशीर्ष शुक्ल 4 उ.षा.।

12.गुरु-मार्ग. शु.12 रेवती।

15.रवि-मार्गशीर्ष शुक्ल 15 मृगशिरा।

●

मुस्लिम शादी की मुबारक तारीखें

चन्द्रदर्शन के अनुसार अंग्रेजी तारीख में शादियाँ दी गयी हैं।

जनवरी 2024

(जमादि उस्सानी 18 से रज्जब 19 तक)
ता.2 से 5, 7 से 10, 12 से 14, 16 से 19, 21 से 24, 26 से 29, 31।

फरवरी

(रज्जब 20 से शाबान 18 तक)
ता.1 से 3, 5 से 8, 10 से 13, 15 से 18, 20 से 23, 25 से 28।

मार्च

(शाबान 19 से रमजान 20 तक)
ता. 1 से 4, 6 से 9, 11 ता 12 से 31 तक (रमजान महिने) में शादियाँ नहीं होंगी।

अप्रैल

(रमजान 21 से शव्वाल 20 तक)
ता.1 से 15 तक (रमजान व शव्वाल महिने में) शादियाँ नहीं होंगी। ता.16, 17, 19 से 22, 24 से 27, 29, 30।

मई

(शव्वाल 21 से जिल्काद 22 तक)
ता.1, 2, 4 से 7, 9 से 11, 13 से 16, 18 से 21, 23 से 26, 28 से 31।

जून

(जिल्काद 23 से जिलहिज 23 तक)
ता.2 से 5, 7 से 9, 11 से 14, 16 से 19, 21 से 24, 26 से 29।

जुलाई

(जिलहिज 24 से मुहर्रम 24 तक)
ता.1 से 4, 6 व 7 (ता.8 से 17 (मोहर्रम महिना) तक शादियाँ नहीं होंगी। जिल्हाइ रस्म से ता. बाद ता.18, 19, 21 से 24, 26 से 29 तथा 31।

अगस्त

(मुहर्रम 25 से सफर 26 तक)
जिल्हाइ रस्म से-
ता.1 से 3, 5 व 6 (सफर माह में ता.19 तक शादियाँ नहीं होंगी। ता.20 से 23, 25 से 28, 30 व 31।

सितम्बर

(सफर 27 से रबिउल अव्वल 26 तक)
ता.1, 2 व 4 से 16 तक (रबि उल अव्वल महिने में शादियाँ नहीं होंगी। ता.18 से 21, 23 से 26, 28 व 30।

अक्टूबर

(रबिउल अव्वल 27 से रबि उस्सानी 27 तक)
ता.1, 2, 4 से 6, 8 से 11, 13 से 16, 18 से 21, 23 से 26, 28 से 31।

नवम्बर

(रबि उस्सानी 28 से जमादि उलअव्वल 27 तक)
ता.2 से 5, 7 से 10, 12 से 15, 17 से 20, 22 से 25, 27 से 30।

दिसम्बर

(जमादि उलअव्वल 28 से जमादि उस्सानी 29 तक)
ता.2 से 4, 6 से 9, 11 से 14, 16 से 19, 21 से 24, 26 से 29 व 31।

तलाक का शरियत

मुस्लिम समुदाय में मर्द किसी वजह से तीन बार तलाक दे सकता है। पूर्व शरियत के अनुसार जायज माना जाता है। परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने पारित नये अध्यादेश में स्पष्ट कर दिया गया है कि अब तलाक लड़की और लड़का दोनों की रजामन्दी से जायज माना जायेगा। अपने न्याय के लिए लड़की न्यायालय में जा सकती है।

●

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

संवत्सर का फल-सन् 2024 ई.

स जयति सिन्दुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम्।।

नूतन वर्ष आरम्भ होने पर घर को पवित्र करके कलश-स्थापन तथा ध्वजारोहण करना चाहिए तथा विद्वान् ब्राह्मण को बुलाकर उसका उचित पूजन कर पंचांग-फल सुनना चाहिए। इससे गंगास्नान एवं सूर्यग्रहण समान फल प्राप्त होता है।

इस दिन नीम की मुलायम पत्ती व फल, जीरा, काली मिर्च, हींग, नमक पीसकर खाने से वर्षभर शरीर निरोग रहता है।

वर्षफल सन् 2024 ई.

वर्तमान वर्ष से सृष्टयाब्द 1955885125 वर्षगत होकर कृत- युग-त्रेतायुग द्वापर युग गत होकर कलियुग का 5125 वर्ष गत होकर भोग्यादि 426875 वर्ष शेष रह जायेगा। श्री विक्रमादित्य संवत् 2081 वर्ष, शालिवाहन शाके का 1946 वर्ष गत हो जायेगा।

वर्ष के आरम्भ से 8 अप्रैल सन् 2024, संवत् 2080 तक 'नल' नामक संवत्सर तथा 9 अप्रैल सन् 2024 संवत् 2081 से बार्हस्पत्य मान से 60 संवत्सरों में 51वाँ ''पिंगल'' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा।

मेषादि गतमासादि 1/14/26/53/48 गत होकर 10/15/33/6/12 से ''काल'' नामक संवत्सर का प्रवेश होगा, परन्तु वर्षभर ''पिंगल'' नामक संवत्सर का ही संकल्पादि में प्रयोग होगा। वर्तमान वर्ष के राजा भौम, मंत्री-शनि, सस्येश-भौम, धान्येश-सोम, मेघेश-शनि, रसेश-गुरु, नीरसेश-भौम, फलेश-शुक्र, धनेश-भौम, दुर्गेश-शनि। ये दस ग्रह (अधिकारी) भूमण्डल पर शासन करेंगे।

विंशोपक फल-सं.2081 सन् 2024 ई.

अग्निदैवतयुग वर्ष नाम-आश्विन, मेघनाम-आवर्त। रोहिणी निवास-समुद्र तट। संवत्सर निवास रजक (धोबी) घर, समय वाहन-वृषभ (मतान्तर से नौका), समयविश्वा-8, स्तम्भ-3 (अन्न-जल-वायु), सोमवती अमावस्या-एक, सोमवती पंचमी-एक, अंगारकी चतुर्थी-2, बुधाष्टमी- 3, भानु सप्तमी-2, रविदशमी-3, समयमुहूर्त 390, समय दिन-355, तिथिक्षय-16 तिथिवृद्धि-11, उत्पत्तिविश्वा-96, खपतविश्वा-108, वर्षा विश्वा-5, धान्य-14, तृण-5, शीत-13, तेज-17, वायु-13, वृद्धि-15, क्षय-15, विग्रह-11, ऐक्य-105, सत्य-आधा, धर्म-डेढ़, पाप-18, शनि दृष्टि-उत्तर में।

संवत्सर फल

पिंगल संवत्सर फल—चौपायों तथा कलाकारों को कष्ट तथा क्षति होगी। वर्षा की हानि होगी।

काल संवत्सर फल—शासकों में मतभेद तथा युद्ध होगा तथा रोगों में वृद्धि तथा अतिवृष्टि से कष्ट होगा।

दस अधिकारी फल

1. **राजा भौम**—तीव्र वायु प्रकोप, अग्नि भय, दुर्घटनायें, आतंक का भय हो। चोरों व तस्करों का उत्पात, मेघ अल्प वर्षा करें।

2. **मंत्री शनि**—शासकों द्वारा लोक व नीति विरुद्ध व्यवहार होता है। वर्षा की कमी तथा आर्थिक समृद्धि बाधित होती है किन्तु किसी-किसी वर्ग में समृद्धि होती है।

3. **सस्येश भौम**—चौपायों तथा दुधारू पशुओं में रोग की सम्भावना, अल्प वर्षा, सौख्य का अभाव तथा भूसी वाले अन्न की क्षति होगी।

4. **रसेश गुरु**—गुरु रसेश हो तो फल-फूलों की उत्तम पैदावार होती है। शासक व प्रशासन उच्चकोटि के वाहन से सम्पन्न तथा विप्रों का सत्कार होता है।

5. **नीरसेश भौम**—भौम नीरसेश हो तो मूँगा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, ताँबा आदि के भावों में प्रतिदिन वृद्धि होती है।

6. **मेघेश शनि**—यदि शनि मेघेश हो तो पृथ्वी पर अल्प वर्षा, राजकीय नीतियों से प्रजा को कष्ट तथा क्षोभ होगा। रोगों का प्रसार अधिक होगा।

7. **धान्येश सोम**—पृथ्वी जल से परिपूर्ण, सभी फसलों की उत्तम पैदावार तथा लोगों में उत्साह और विविध उत्सवों का आयोजन होगा।

8. **दुर्गेश शनि**—समस्त देशों में विग्रह तथा जनता में व्याकुलता, आपसी मतभेद और विरोधभाव होगा। कृषि पदार्थों का अभाव होगा।

9. **धनेश भौम**—काले पदार्थों का भाव महँगा होगा, शरद ऋतु में सूखा तथा भूसी वाले अन्न का नाश होगा, सर्वत्र अस्थिरता का वातावरण होता है। शासकों की नीतियाँ दमनकारी होती हैं।

10. **फलेश शुक्र**—वृक्षों में सुन्दर फल-फूल, शासन की लोकप्रियता होती है, लोगों का नीति व धर्म के अनुकूल आचरण रहता है।

नवमेघ वरुण—अत्यधिक वर्षा।

द्वादश मेघ पृथुश्रवा—अल्प जल, कृषि को क्षति।

रोहिणी निवास पर्वत शृंग—अत्यल्प वृष्टि।

संवत्सर निवास कुम्भकार गृह—मध्यम फल।

समयवाहन नौका फल—जनता में भ्रम, चौपायों को पीड़ा तथा सम्पूर्ण पृथ्वी फलरहित होगी।

वृष्टि प्रमाणक—50, पर्वत पर-25 समुद्र में-12।।, भूमि पर 12।।।

आर्द्रा प्रवेश—ज्येष्ठ शुक्ल।

प्रतिपदा तिथि—शुभ।

शनिवार फल—मन्द (मन्ददायी)।

मूल नक्षत्र—सर्वत्र भय।

शुक्ल योग—सस्यवृद्धि (कृषि उपज की वृद्धि)।

दिवा वेला फल—जगतो विपत्तिः (विपत्ति कारक)।

प्रभवादि द्विगुणमित्यादि के अनुसार शेष (1) फल दुर्भिक्ष। त्रिघ्न संवत्सर इत्यादिनुसार शेष (4) फल सुभिक्ष। द्विघ्नसंवत्सर इत्यादिनुसार शेष (1) फल दुर्भिक्ष। शक से शेष (5) फल सामान्य। सर्वसंक्रान्ति मुहूर्तो का योग (355) तथा चन्द्रदर्शन (390)। अतः इस वर्ष सस्ती कारक है। अष्टोत्तरी आययोग (96), व्यययोग (108)। अतः विन्ध्य से दक्षिणनिवासियों को दुख होंगे। विंशोत्तरी आययोग (99), व्यययोग (84)। अतः विन्ध्य से उत्तरनिवासी सुखी होंगे।

मासफल-तेजी-मंदी

जनवरी

धार्मिक व साम्प्रदायिक उपद्रवों से आतंक में वृद्धि होगी। शासकों में आपसी कलह होकर मंत्रिमंडल में विवाद व हंगामों का वातावरण बार-बार होगा। जिससे विकास जन्य कामों में रुकावटें रहेंगी। उत्तरी पूर्वी प्रान्तों में तेज हवा के साथ हिमपात तथा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में कहीं वर्षा होगी। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिल में सामान्य वर्षा होगी। शीत का प्रकोप रहेगा।

तेजी मंदी—चीनी, चावल, गुड़ में तेजी रहेगी, शेयर बाजार, मशीनरी सामान, सोना-चाँदी, ताँबा आदि धातुओं में मंदी रहेगी। कपास, रुई, सूत, अफीम, काफी इत्यादि में तेजी होगी। गेहूँ, मोठ, सोयाबीन, अरण्ड, मूंगफली, तुरई के तेलों में तेजी होगी। 14 जनवरी के बाद चीनी, घी आदि रस पदार्थों तथा मेवा सामान, काजू, बादाम किसमिस में तेजी होगी। शेयर बाजार, केमिकल सामान और प्लास्टिक सामान में तेजी होगी। चाँदी-सोना में अत्यधिक तेजी बनेगी।

फरवरी

विश्व के पश्चिम भूभाग में रोग वृद्धि एवं प्रकृति से प्रजा में भय रहेगा। केन्द्र में शासक नीति की सफलता का देश में सम्मान बढ़ेगा। समुद्र तट के क्षेत्रों में तूफान, चक्रवात का उत्पात होगा। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश पूर्वोत्तर, राजस्थान में सामान्य ओस की धुन्ध का वातावरण रहेगा। हिमपात, ओला, ठिठुरन तेज होगी।

तेजी मंदी—गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोठ, मक्का, तिलहन, अलसी, मटर, सोना-चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। कपास, बिनौला, वस्त्र, फल, सब्जी में तेजी होगी। जीरा, धनियां, मसाले के सामान तथा केमिकल सामान में तेजी रहेगी। शेयर बाजार में उछाल आयेगी। प्लास्टिक सामान, स्टील सामान में तेजी होगी। शेयर बाजार तथा सोना चाँदी में मंदी का झटका लगेगा। लोहे के सामान वाहन इत्यादि महंगे होंगे।

मार्च

बम विस्फोट, यान दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि के संकेत हैं। विभिन्न देशों में राजनैतिक सम्बन्ध अकस्मात बिगड़ सकते हैं। कहीं घोर दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। काश्मीर, हिमांचल प्रदेश, भूटान के क्षेत्रों में हिमपात व वर्षा होगी, शीतलहर चलेगी। मासान्त में मौसम परिवर्तन के लक्षण उभरेंगे। शुक्रवारी प्रतिपदा से पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात तथा तूफानी हवाओं से रोग होगा। आकाशीय स्थिति प्रायः धूमिल रहेगी।

तेजी मंदी—चीनी, दवा, औषधि में तेजी आयेगी, चावल, चना में मंदी, सोना-चाँदी, ताँबा आदि धातु तेज होंगे। मशीनरी सामान एवं लोहे के सामान में अस्थिरता बनकर तेजी होगी। सरसो, एरण्ड, मूंगफली, सोयाबीन तेलो में तेजी, गुड़, शक्कर, रसपदार्थ में मंदी होगी। गेहूँ, चावल, ज्वार, मूंग, मोठ आदि धान्य भावों में गिरावट आयेगी। पीली वस्तु में या धातु में तेजी आयेगी। प्लास्टिक, रबड़ के सामान में, शेयर में अस्थिरता रहेगी।

अप्रैल

देश की सीमाओं पर शान्ति को भंग करने वाले देश से भारत को स्वयं निपटना होगा। प्रधान शासक की गरिमा (प्रतिष्ठा) बढ़ेगी। भारतीय जनता पार्टी का पड़ला भारी रहेगा। तापमान में तेजी आयेगी। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। हि.प्र., मणिपुर, बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक के कुछ स्थानों में वर्षा होगी। बिहार, उत्तर प्रदेश में बादल व बूंदाबाँदी हो सकती है।

तेजी मंदी—सोना-चाँदी, ताँबा, मशीन, लोहे के सामान में तेजी आयेगी। सभी तेल, तिलहन के भाव में अस्थिरता रहेगी। सभी प्रकार के अनाज में तेजी आयेगी। रासायनिक पदार्थ, औषधि एवं शेयर बाजारों में उछाल आयेगी। सभी प्रकार के दलहन के भाव अस्थिर रहेंगे।

मई

चीन, बंगला देश, पाकिस्तान की गतिविध पर ध्यान रखना पड़ेगा। कुछ मुस्लिम राष्ट्र पर भयंकर युद्ध के समाचार मिलेंगे। किसी भी देश में युद्ध अवश्य होगा। लू व गर्मी का प्रकोप बहुत ज्यादा रहेगा। आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब के क्षेत्रों में ज्यादा गर्म रहेगा। उत्तरार्ध में सामान्य वर्षा के योग हैं।

तेजी मंदी—सभी प्रकार के धान्य महँगे होंगे। चना, सरसों, मूंगफली तथा पीली वस्तुओं में तेजी आयेगी। मेवा के सामान, प्लास्टिक, रबड़ एवं शेयर के बाजार में अस्थिरता रहेगी।

जून

पूर्वी गोलार्ध में युद्ध का भय बनेगा। रुस, जापान, चीन, वर्मा, पूर्वी भारत एवं आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में तूफान, भूकम्प, भूस्खलन एवं हिमपात से जन-धन की हानि होगी। बादल चाल रहकर भी वर्षा नहीं होगी। तापमान अधिक रहेगा, महाराष्ट्र, उड़ीसा के पूर्वी क्षेत्र, बंगाल व असम में वर्षा तथा हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश में वर्षा अवरोध रहेगा। दक्षिण प्रान्तों में एवं उत्तर प्रान्त में प्रलयकारी वर्षा के योग हैं।

तेजी मंदी—अनाज के भावों में उतार-चढ़ाव रहेगा। शेयर बाजारों में तेजी आयेगी। सोना-चाँदी आदि में गिरावट आयेगी। ईंधन, पेट्रोल, डीजल आदि में तेजी रहेगी। तिलहन एवं दलहन के भाव स्थिर रहेंगे।

जुलाई

पर्वतीय क्षेत्र में भयंकर आपदा आ सकती है। एवं विकृति जन्य अनेक प्रकार के रोगों से जनता परेशान होगी। चीन में बाढ़, तूफान से विशेष हानि हो सकती है। दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश में वर्षा सामान्य होगी। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश में वायु के साथ अच्छी वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, बिहार, कर्नाटक में अतिवृष्टि से लोग परेशान होंगे। काश्मीर में या हिमाचल में बादल फटने जैसी घटना हो सकती है।

तेजी मंदी—सभी अनाजों में तेजी होगी। पीली वस्तु में तेजी, शेयर के भाव नीचे गिर सकते हैं। रस पदार्थ में मंदी होगी। लोहा सामान, चाय, काफी, अफीम, रेशमी वस्त्र में तेजी आयेगी। सभी प्रकार के तेल, घी आदि में घटाबढ़ी चलेगी।

अगस्त

पर्वतीय प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि होगी। बिहार में भयंकर बाढ़ की स्थिति एवं भारत के कुछ प्रान्तों में सूखा रहेगा। कृषकों के लिये कठिन परिस्थिति हो सकती है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश में आकाश साफ रहेगा। बंगाल, बिहार, मणिपुर, असम, अरुणाचल में भारी तूफान आने की संभावना है। दक्षिण पश्चिम के प्रान्तों में जोरदार वर्षा हो सकती है। बाढ़ से लोग परेशान हो जायेंगे।

तेजी मंदी—प्लास्टिक, केमिकल सामान, सभी मसाले के सामान में स्थिरता रहेगी। शेयर के भावों में आगे पीछे होकर जोरदार तेजी आयेगी। मशीन ,कल पुर्जे, वाहन, लोहे के सामान, स्टील में अच्छी तेजी आयेगी। केमिकल सामान, रंगरोगन, औषधियों में घटाबढ़ी चलेगी।

सितम्बर

भारत नये-नये कायदे कानून बनाने की प्रेरणा देगा। देश में औद्योगिक प्रगति विशेष होगी। विश्व व्यापार जन्य कुप्रभावों का उपाकरण जनहितार्थ उपायों से पुनः चेतना प्राप्त करेगी। इस मास में कहीं-कहीं वर्षा सामान्य होगी। वायुवेग का प्रकोप रहेगा। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर व बिहार के क्षेत्रों में वर्षा होगी। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, उत्तर प्रदेश में खण्ड वृष्टि के योग है। तापमान में गिरावट के साथ मौसम में परिवर्तन हो सकता है।

तेजी मंदी—शेयर बाजारों में अस्थिरता रहेगी। चना, मूंग, मोठ, उड़द आदि दलहन व धान्यों में तेजी होगी। गुड़, शक्कर, चीनी, अलसी, मूंगफली, सरसो, सोयाबीन तेलों में तेजी होगी। मासान्त में शेयर नीचे आ सकते हैं।

अक्टूबर

केन्द्र सरकार के अथक प्रयासोपरान्त भी निर्वाचन जन्य स्थिति उभरेगी। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। पूर्वी प्रान्तों बंगाल, आसाम, बिहार, अरुणाचल, मेघालय आदि में तथा समुद्र तटीय नगरों में तूफान के साथ वर्षा होगी। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में खण्ड वर्षा होगी। उत्तरी क्षेत्रों में तापमान में गिरावट आयेगी।

तेजी मंदी—सभी तेलों के भावों में तेजी होगी। चावल, जौ, गेहूँ, चना में मंदी आयेगी। सोना, चाँदी, मूंग, मोठ में तेजी, रसायनिक वस्तु, प्लास्टिक की वस्तुयें तथा रेशमी कपड़े में तेजी, शेयर बाजारों में घटाबढ़ी चलती रहेगी, मेवा के सभी सामान में अस्थिरता रहेगी।

नवम्बर

आयात निर्यात के नये कानूनों में जनता को श्रेष्ठ लाभ होगा। शासकीय कर्मचारियों के लिये अच्छी खबर आयेगी। बादल चाल के साथ शीत वायु का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात अथवा ओला वृष्टि हो सकती है। मध्य भारत में वायु वेग रहेगा। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में वर्षा हो सकती है।

तेजी मंदी—अनाजों में मंदी रहेगी। गुड़, शक्कर, चीनी, घी आदि रस पदार्थों में तथा मेवा सामान काजू बादाम, किसमिस में तेजी रहेगी। शेयर बाजार, केमिकल सामान, प्लास्टिक सामान, सोना-चाँदी में झटके की तेजी बनेगी। चाय, अफीम, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थ में तेजी आयेगी।

दिसम्बर

शांति भंग होगी। उत्तर में खड़ी फसलों को हानि, राजनीत के नये नये समीकरण बनेंगे। भारत की सेना का मनोबल बढ़ेगा। आसमान में धुन्ध हो सकती है। कई जगहों पर वर्षा भी हो सकती है। राजस्थान, गुजरात, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में लगातार बादल दिखाई देंगे। खण्ड वर्षा के साथ शीत प्रकोप बढ़ेगा।

तेजी मंदी—मसाले की वस्तुओं एवं किराना वस्तुओं में तेजी आयेगी। सभी प्रकार के अनाजों में घटाबढ़ी चलेगी। सोने-चाँदी में उछाल तथा शेयर बाजारों में तेजी रहेगी। ऊनी वस्त्रों में तेजी रहेगी। सभी प्रकार के तेल तिलहन एवं वनस्पति घी में तेजी रहेगी।

नं. 1 विन्ध्योत्तर निवासियों के लिए विंशोत्तरी मत से लाभ-खर्च

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृश्चि.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
लाभ	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14	99
खर्च	14	5	5	14	11	5	5	11	2	5	5	2	84

नं. 2 विन्ध्य से दक्षिण निवासियों के लिए अष्टोत्तरी मत से लाभ-खर्च

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृश्चि.	ध.	म.	कु.	मी.	योग
लाभ	8	2	5	14	2	5	2	8	11	14	14	11	96
खर्च	14	8	5	2	14	5	8	14	5	14	14	5	108

लाभ-खर्च देखने की विधि—जिस राशि का फल देखना हो उस राशि के कोष्टक का लाभ तथा खर्च अंकों को जोड़कर, उसमें एक घटाकर आठ (8) का भाग देने पर जो शेष बचे उसका फल इस प्रकार है—

यदि 1 शेष बचे तो लाभ, 2 शेष हो तो सौख्य, 3 शेष हो तो क्लेश, 4 शेष हो तो रोग, 5 शेष हो तो लोकापवाद, 6 शेष हो तो सम्मान, 7 शेष हो तो विजय, 8 या 0 शून्य शेष हो तो हानिकारक होगा।

मतान्तर से—दोनों चक्रों का लाभ संख्या जोड़कर लाभ तथा दोनों के व्यय को जोड़कर व्यय समझना चाहिए। यदि लाभ योग अधिक हो तो शुभ तथा व्यय संख्या अधिक हो तो अशुभ समझना चाहिए।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

व्रत-पर्व-त्योहार, जयन्ती एवं अवकाश-सन् 2024 ई.

ता.वार विवरण

जनवरी-व्रत त्यौहार

1.**सोम**-ईसाई नव वर्ष आरम्भ।
4.**गुरु**-अष्टका श्राद्ध, कालाष्टमी।
6.**शनि**-पौष दशमी।
7.**रवि**-सफला एकादशी व्रत सबका।
9.**मंगल**-भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
11.**गुरु**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, बकुल अमावस्या (उड़ीसा), कपिलधारा तीर्थ श्राद्ध, उ.षा. के सूर्य रात 3:1।
12.**शुक्र**-चन्द्रदर्शन।
13.**शनि**-मु.म. रज्जब हि.1445।
14.**रवि**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, लोहड़ी-पंजाब, भोगी-द.भा.।
15.**सोम**-मकर संक्रान्ति दिन 9:13, खिचड़ी पर्व पुण्यकाल, खरमास समाप्त, पोंगल (द.भा.), मघा बिहु (असम)।
16.**मंगल**-अन्नरूपा षष्ठी-बंगाल।
20.**शनि**-शाम्ब दशमी-उड़ीसा।
21.**रवि**-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका, अभिजित् के सूर्य रात 9:48 से।
22.**सोम**-कूर्म द्वादशी व्रत।
23.**मंगल**-भौम प्रदोष व्रत।
24.**बुध**-श्रवण के सूर्य रात 4:10।
25.**गुरु**-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, अभिजित् के सूर्य रात 11:36 तक।
28.**रवि**-सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत।
29.**सोम**-संकष्टी माघ गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात 8:48।

जनवरी जयन्ती

4.**गुरु**-लुई ब्रेल जयन्ती।
5.**शुक्र**-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (न.मत)।
6.**शनि**-पार्श्वनाथ जयन्ती-जैन।
7.**रवि**-राजिम भक्तिन माता जयन्ती।
12.**शुक्र**-स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (अं.ता.)।
13.**शनि**-उर्स-मोइनुद्दीन चिश्ती-अजमेर।
15.**सोम**-गिन्दीमेला-गबाकोट, डाडामंडी-नयाघाटी, माघ मेला-काशी, रुद्रमहादेव मेला (कालीमठ), उत्तरायणी मेला-गंगोली रामेश्वर, बागेश्वर, थल सेना दिवस।
17.**बुध**-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (प्रा.मत)।
21.**रवि**-तैलंग स्वामी जयन्ती (काशी), वीर हेमू कालाणी शहीद दिवस।
23.**मंगल**-सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
25.**गुरु**-शाकम्भरी प्राकट्योत्सव।
26.**शुक्र**-गणतन्त्र दिवस, प्रयाग माघ मेला प्रारम्भ, अन्तर्राष्ट्रीय कस्टम दिवस।
28.**रवि**-लाला लाजपतराय जयन्ती।
30.**मंगल**-गाँधी स्मृति दिवस, शहीद दिवस।

फरवरी-व्रत त्यौहार

2.**शुक्र**-कालाष्टमी व्रत, अष्टका श्राद्ध।
6.**मंगल**-षट्तिला एकादशी व्रत-सबका, धनिष्ठा के सूर्य रा.शे. 6:22।
7.**बुध**-तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत।
8.**गुरु**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
9.**शुक्र**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या, रटन्ती कालिका पूजा, त्रिवेणी अमावस, मकर वावु-केरल।
10.**शनि**-गुप्त नवरात्रारम्भ।
11.**रवि**-चन्द्रदर्शन।
12.**सोम**-मु.म.सावान हि.1445।
13.**मंगल**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, कुन्द चतुर्थी व्रत, वरद चतुर्थी, तिल चौथ, कुम्भ संक्रान्ति रात 7:58।
14.**बुध**-वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, श्रीपंचमी, लेखनी पूजा-बंगाल।
15.**गुरु**-शीतला षष्ठी-बंगाल।
16.**शुक्र**-अचला सप्तमी व्रत, आरोग्य सप्तमी, रथसप्तमी, सूर्य पूजा।
17.**शनि**-भीष्माष्टमी पर्व।
18.**रवि**-महानन्दा नवमी।
20.**मंगल**-जया एकादशी व्रत-सबका, भैमी एकादशी-बंगाल, शतभिषा के सूर्य दिन 9:59।
21.**बुध**-प्रदोष व्रत, आमलकी द्वादशी, भीष्म द्वादशी, वाराह द्वादशी, तिल द्वादशी।
23.**शुक्र**-व्रत की पूर्णिमा।
24.**शनि**-स्नान-दान की माघी पूर्णिमा, माघ मासीय यम-नियम समाप्त।
28.**बुध**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:14।

फरवरी जयन्ती

2.**शुक्र**-श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (प्रा.मत)।
8.**गुरु**-मु. पर्व शबे मिराज।
10.**शनि**-श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।
14.**बुध**-वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव।
18.**रवि**-हरसू ब्रह्मदेव जयन्ती चैनपुर-बिहार।
21.**बुध**-गुरु गोरखनाथ जयन्ती।

22.**गुरु**-मरुस्थल मेला-राजस्थान 3 दिन।
23.**शुक्र**-स्वामी करपात्रीजी पुण्य तिथि।
24.**शनि**-श्रीललितादेवी प्राकट्योत्सव, संत रविदास जयन्ती।
26.**सोम**-मु.पर्व शबेबरात।
28.**बुध**-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस।

मार्च व्रत-त्यौहार

3.**रवि**-सीताष्टमी व्रत, अष्टका श्राद्ध।
4.**सोम**-पूर्वा भाद्रपद के सूर्य दिन 3:32।
6.**बुध**-विजया एकादशी व्रत-सबका।
7.**गुरु**-वंजुली द्वादशी।
8.**शुक्र**-प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
10.**रवि**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।
11.**सोम**-चन्द्रदर्शन।
12.**मंगल**-फुलहरा दूज, मु.म. रमजान हि.1445, रोजा शुरू।
13.**बुध**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, संत चतुर्थी-उड़ीसा, मनोरथ चतुर्थी।
14.**गुरु**-मीन संक्रान्ति दि.3:12, खरमास आरम्भ।
15.**शुक्र**-गोरूपणी षष्ठी-बंगाल।
16.**शनि**-कामदा सप्तमी व्रत।
17.**रवि**-होलाष्टक आरम्भ, उत्तराभाद्रपद के सूर्य रात 11:23।
18.**सोम**-आनन्द नवमी।
19.**मंगल**-फगुदशमी।
20.**बुध**-आमलकी-रंगभरी एकादशी व्रत-सबका, श्रीकाशी विश्वनाथ शृंगार दिवस।
21.**गुरु**-गोविन्द द्वादशी, राष्ट्रीय नववर्ष चैत्र शक 1946 आरम्भ।
22.**शुक्र**-प्रदोष व्रत।
24.**रवि**-व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन रात 10:27 बाद, चौमासी चौदस-जैन।
25.**सोम**-स्नान-दान की पूर्णिमा, होली काशी में।
26.**मंगल**-होली काशी से अन्यत्र, वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव।
28.**गुरु**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रा.9:0।
30.**शनि**-रंग पंचमी।
31.**रवि**-रेवती के सूर्य दिन 9:54।

मार्च जयन्ती

3.**रवि**-जानकी प्राकट्योत्सव।
5.**मंगल**-स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती।
8.**शुक्र**-वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव, कृत्तिवासेश्वर व काशी विश्वनाथ पूजन-दर्शन, महिला दिवस।
12.**मंगल**-रामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
15.**शुक्र**-उपभोक्ता दिवस।
18.**सोम**-लट्ठमार होली बरसाना।
19.**मंगल**-लट्ठमार होली-नन्दगाँव।
20.**बुध**-लट्ठमार होली -जन्मस्थान-मथुरा।
21.**गुरु**-मेला-खाटू श्यामदेव-राजस्थान।
25.**सोम**-चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, चौसट्ठी देवी दर्शन-पूजन।
26.**मंगल**-डोलयात्रा, होला मेला-पंजाब।
27.**बुध**-संत तुकाराम जयन्ती।
29.**शुक्र**-गुड फ्राइडे।
30.**शनि**-विजय गोविन्द हलकार जयंती (मणिपुर), इस्टर सटरडे।
31.**रवि**-इस्टर सन्डे।

अप्रैल व्रत-त्यौहार

1.**सोम**-शीतला सप्तमी व्रत, कालाष्टमी पर्व।
2.**मंगल**-शीतलाष्टमी (बसिअउरा), वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्व।
5.**शुक्र**-पापमोचिनी एकादशी व्रत-सबका।
6.**शनि**-शनि प्रदोष व्रत, महावारुणी पर्व।
7.**रवि**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
8.**सोम**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, सोमवती अमावस्या, चान्द्रवर्ष समाप्ति 2080।
9.**मंगल**-वासंतीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश-स्थापन, हिन्दू नववर्ष आरम्भ, वि.सं.2081, बैठकी, गुड़ी-पड़वा, उगादि-द.भा.।
10.**बुध**-चैती चांद, चन्द्रदर्शन।
11.**गुरु**-मु.सव्वाल हि.1445, ईद।
12.**शुक्र**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रीगणेश दमनकोत्सव।
13.**शनि**-रामराज्य महोत्सव, श्री लक्ष्मी पंचमी, अश्विनी-मेष संक्रान्ति रात 11:17, पुण्यकाल अगले दिन, वैशाखी पर्व।
14.**रवि**-स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत-बिहार, मेष-सतुआ संक्रान्ति पुण्यकाल, बंगला नववर्ष, वैशाख सं.1431 आरम्भ।
15.**सोम**-महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा दिन 3:38 से।
16.**मंगल**-दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा सायं 4:17 तक, अशोकाष्टमी -बं.।
17.**बुध**-महानवमी व्रत, दुर्गानवमी, श्रीरामनवमी व्रत।
18.**गुरु**-नवरात्र व्रत पारण, जवारे विसर्जन।
19.**शुक्र**-कामदा एकादशी व्रत-सबका।
20.**शनि**-[illegible]

21.**रवि**-प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी-जैन।
23.**मंगल**-स्नान-दान-व्रत की चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान-दान आरंभ।
27.**शनि**-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:49, भरणी के सूर्य दिन 3:31।
29.**सोम**-शुक्र अस्त पूर्व में रात 11:13 से।

अप्रैल जयन्ती

1.**सोम**-मूर्ख दिवस, मु.पर्व शहादते हजरत अली।
5.**शुक्र**-मु.आखिरी जुमा।
9.**मंगल**-शैलपुत्री देवी दर्शन, सिन्धी नववर्ष दिवस, गौतम ऋषि जयंती, श्रीकुंजबिहारी मेला-टिहरी, सुरकण्डा देवी मेला-उ.काशी, विश्व बनारा दिवस।
10.**बुध**-ब्रह्मचारिणी देवी दर्शन, श्रीझूलेलाल जयंती।
11.**गुरु**-मत्स्यावतार, चित्रघण्टा देवी दर्शन, सरहुल-बिहार।
12.**शुक्र**-कूष्माण्डा (दुर्गा) देवी दर्शन।
13.**शनि**-स्कन्दमाता देवी दर्शन।
14.**रवि**-कात्यायनी देवी दर्शन, अम्बेडकर जयंती।
15.**सोम**-कालरात्रि देवी दर्शन।
16.**मंगल**-महागौरी देवी दर्शन, मेला बहुफोर्ट-ज.क., मेला मनसा देवी-हरिद्वार।
17.**बुध**-सिद्धिदात्री देवी दर्शन, अयोध्या परिक्रमा, श्रीरामचरित मानस जयन्ती, स्वामी नारायण जयन्ती, साईं बाबा उत्सव प्रारंभ, श्रीराज-राजेश्वरी मेला-तालतोली-गुप्तकाशी।
21.**रवि**-महावीर जयन्ती-जैन।
23.**मंगल**-हनुमान प्राकट्योत्सव, अखोहा मेला, धरती पूजा, खद्दी पर्व-छत्तीसगढ़, मेला-सालासर बालाजी-राजस्थान।
28.**रवि**-सती अनसूईया जयन्ती।

मई व्रत-त्यौहार

1.**बुध**-श्रीशीतलाष्टमी व्रत।
4.**शनि**-वरूथिनी एकादशी व्रत सबका।
5.**रवि**-प्रदोष व्रत।
6.**सोम**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, गुरु अस्त पश्चिम में रात 11:1 से।
7.**मंगल**-श्राद्ध की अमावस्या।
8.**बुध**-स्नान-दान की अमावस्या।
9.**गुरु**-चन्द्रदर्शन।
10.**शुक्र**-अक्षय तृतीया, मु.जिल्काद हि.1445।
11.**शनि**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, कृत्तिका के सूर्य दिन 10:31।
13.**सोम**-स्कन्दषष्ठी व्रत, चन्दन षष्ठी-बंगाल।
14.**मंगल**-श्रीगंगा सप्तमी, कमला सप्तमी, वृष संक्रान्ति रात 9:39।
16.**गुरु**-सीता नवमी व्रत।
19.**रवि**-मोहिनी एकादशी व्रत सबका, लक्ष्मी-नारायण एकादशी-उड़ीसा।
20.**सोम**-सोम प्रदोष व्रत, रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी।
21.**मंगल**-श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत।
23.**गुरु**-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गन्धेश्वरी पूजा-बंगाल, वैशाख व्रत-नियम समाप्त।
25.**शनि**-रोहिणी के सूर्य प्रातः 7:54।
26.**रवि**-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात 9:39।
28.**मंगल**-ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)।
31.**शुक्र**-श्रीशीतलाष्टमी व्रत, त्रिलोचनाष्टमी-बं.।

मई-जयन्ती

1.**बुध**-श्रमिक दिवस, महाराष्ट्र-गुजरात स्थापना दिवस।
3.**शुक्र**-प्रेस स्वतन्त्रता दिवस।
4.**शनि**-वल्लभाचार्य जयंती।
7.**मंगल**-रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती।
8.**बुध**-विश्व रेडक्रास दिवस।
9.**गुरु**-देव दामोदर तिथि-असम।
10.**शुक्र**-परशुराम जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती-तिथि मत, चन्दन यात्रा, चार धाम यात्रा।
12.**रवि**-आद्य शंकराचार्य जयंती, संत सूरदास जयंती।
13.**सोम**-श्रीरामानुजाचार्य जयंती।
16.**गुरु**-श्रीजानकीजी प्राकट्योत्सव (वैष्णव मतानुसार), बगलामुखी देवी प्राकट्योत्सव।
21.**मंगल**-श्रीनृसिंह प्राकट्योत्सव, छिन्नमस्ता देवी प्राकट्योत्सव।
23.**गुरु**-बुद्ध जयंती, कूर्म प्राकट्योत्सव, पुष्करा देवी प्राकट्योत्सव, अखोहा मेला, अबार माता मेला।
25.**शनि**-देवर्षि नारद जयन्ती।
31.**शुक्र**-धूम्रपान निषेध दिवस।

जून व्रत-त्यौहार

2.**रवि**-अचला एकादशी व्रत-सबका, भद्रकाली ग्यारस-पंजाब, जलक्रीड़ा एकादशी-उड़ीसा।
3.**सोम**-गुरु उदय पूरब में प्रातः 7:0।
4.**मंगल**-भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, वटसावित्री व्रतारंभ-उ.भा.,
6.**गुरु**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, वट-सावित्री व्रत-उ.भा., भठका अमावस्या, सावित्री अमावस्या-उड़ीसा।
7.**शुक्र**-करवीर व्रत, चन्द्रदर्शन।
8.**शनि**-मृगशिरा के सूर्य प्रातः 7:12, मु.म. जिलहिज हि.1445।
9.**रवि**-रम्भा तीज व्रत।
10.**सोम**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, उमा चतुर्थी-बंगाल।
11.**मंगल**-ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)।
12.**बुध**-श्रीस्कन्दषष्ठी व्रत, अरण्य षष्ठी, शीतला-षष्ठी-उड़ीसा, जमाई षष्ठी-बंगाल।
15.**शनि**-मिथुन संक्रान्ति प्रातः 7:20, राजस संक्रान्ति।
16.**रवि**-गंगा दशहरा, श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस।
17.**सोम**-भीमसेनी-निर्जला एकादशी व्रत-स्मार्त।
18.**मंगल**-निर्जला एकादशी व्रत-वैष्णव, ज्येष्ठ भौम (बड़का मंगल)।
19.**बुध**-प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ-द.भा.।
21.**शुक्र**-व्रत की पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत-द.भा.।
22.**शनि**-स्नान-दान की पूर्णिमा, जलयात्रा, आर्द्रा के सूर्य दिन 8:0।
25.**मंगल**-अंगारकी संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:58।
28.**शुक्र**-शुक्र उदय पश्चिम में सायं 5:4।
29.**शनि**-शीतलाष्टमी व्रत, इन्द्राणी पूजा, त्रिलोचन पूजा।

जून जयन्ती

1.**शनि**-बाल सुरक्षा दिवस।
5.**बुध**-विश्व पर्यावरण दिवस।
6.**गुरु**-शनिदेव प्राकट्योत्सव।
9.**रवि**-महाराणा प्रताप जयन्ती।
10.**सोम**-गुरु अर्जुनदेव शहीद दिवस।
14.**शुक्र**-धूमावती देवी प्राकट्योत्सव, मेला क्षीर भवानी-क.।
16.**रवि**-श्रीवटुकभैरव प्राकट्योत्सव।
17.**सोम**-रुक्मिणी विवाह-उड़ीसा, गायत्री माता प्राकट्योत्सव, मेला-खाटू श्यामजी-राजस्थान, काशी विश्वेश्वर कलश यात्रा, मु.बकरीद।
21.**शुक्र**-योग दिवस।
22.**शनि**-अम्बुवाची पर्व-श्रीकामाख्या देवी महोत्सव 3 दिनात्मक प्रारम्भ-असम, संत कबीरदास जयंती।
23.**रवि**-गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती।
26.**बुध**-नशा निरोधक दिवस।
27.**गुरु**-मधुमेह दिवस-डायबीटिज-डे।

जुलाई व्रत-त्यौहार

2.**मंगल**-योगिनी एकादशी व्रत सबका।
3.**बुध**-प्रदोष व्रत।
4.**गुरु**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
5.**शुक्र**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या।
6.**शनि**-गुप्त नवरात्रारम्भ, पुनर्वसु के सूर्य दिन 9:34।
7.**रवि**-रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया-बंगाल, चन्द्रदर्शन।
8.**सोम**-मु.नववर्ष मुहर्रम हि.1446 शुरू।
9.**मंगल**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
12.**शुक्र**-स्कन्द-षष्ठी व्रत, कुमार षष्ठी व्रत।
14.**रवि**-परशुरामाष्टमी-उड़ीसा, खर्ची पूजा-त्रिपुरा।
16.**मंगल**-गुप्त नवरात्र समाप्त, गिरिजा पूजा, कर्क संक्रा.रात 10:43, पुनर्यात्रा-उल्टा रथ।
17.**बुध**-हरिशयनी एकादशी व्रत, रवि नारायण एकादशी-उड़ीसा।
18.**गुरु**-प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, श्रीकृष्ण द्वादशी, चातुर्मास आरम्भ।
20.**शनि**-व्रत की पूर्णिमा, पुष्य के सूर्य दिन 11:1, चौमासी चौदस-जैन।
21.**रवि**-स्नान-दान की आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा।
22.**सोम**-श्रावण सोमवार व्रत, पार्थिव पूजन व काशी विश्वनाथ दर्शन-पूजन आरम्भ, मैथिल नववर्ष सं.1432 आरम्भ, अशून्य शयन व्रत।
23.**मंगल**-मंगलागौरी व्रत, भौम व्रत, दुर्गा यात्रा, हनुमान दर्शन।
24.**बुध**-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चंद्रोदय रा.9:12।
26.**शुक्र**-नाग पंचमी-बंगाल।
27.**शनि**-शीतला सप्तमी-उड़ीसा।
28.**रवि**-शीतलाष्टमी व्रत।
29.**सोम**-श्रावण सोमवार व्रत।
30.**मंगल**-दुर्गायात्रा, मंगलागौरी व्रत, भौम व्रत, हनुमान दर्शन।
31.**बुध**-कामदा एकादशी व्रत सबका।

जुलाई जयन्ती

1.**सोम**-डाक्टर्स-डे।
2.**मंगल**-देवरहा बाबा पुण्य तिथि।
7.**रवि**-श्रीराम-बलराम रथोत्सव।
11.**गुरु**-विश्व जनसंख्या दिवस।
16.**मंगल**-मेला शरीक भगवती-कश्मीर।
19.**शुक्र**-मेला ज्वालामुखी देवी-कश्मीर।
21.**रवि**-श्रीसाईं बाबा उत्सव-शिरडी, ओशो पूर्णिमा।
31.**बुध**-मुन्शी प्रेमचन्द जयन्ती।

अगस्त व्रत-त्यौहार

1.**गुरु**-प्रदोष व्रत।
2.**शुक्र**-मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशी व्रत।
3.**शनि**-श्लेषा के सूर्य दिन 11:23।
4.**रवि**-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, हरियाली अमावस।
5.**सोम**-श्रावण सोमवार व्रत, चन्द्रदर्शन।
6.**मंगल**-भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमान दर्शन, मु.सफर हि.1446।
7.**बुध**-हरियाली तीज व्रत, मधुश्रवा तीज व्रत, स्वर्ण गौरी व्रत।
8.**गुरु**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, दुर्वा-गणपति व्रत।
9.**शुक्र**-नागपंचमी, तक्षक पूजा।
10.**शनि**-लुण्ठन षष्ठी-बंगाल।
12.**सोम**-श्रावण सोमवार व्रत।
13.**मंगल**-भौमव्रत, मंगलागौरी व्रत, दुर्गायात्रा, हनुमान दर्शन।
15.**गुरु**-पुत्रदा एकादशी व्रत-स्मार्त।
16.**शुक्र**-पुत्रदा एकादशी व्रत-वैष्णव, दामोदर द्वादशी व्रत।
17.**शनि**-शनि प्रदोष व्रत, आखेट त्रयोदशी-उड़ीसा, मघा-सिंह संक्रान्ति दिन 10:9।
19.**सोम**-स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, श्रावण सोमवार व्रत, श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबन्धन दि.1:25 से, ओणम-केरल, नारोली पूर्णिमा।
21.**बुध**-रजजगा, कजलियाँ-मध्य प्रदेश।
22.**गुरु**-कजली तीज व्रत, सतुआ तीज, तिजड़ी-सिन्धी, सं.गणेश चतुर्थी व्रत, बहुला गणेश चौथ व्रत चन्द्रोदय रात 8:20।
24.**शनि**-कोकिला पंचमी, भातृभगिनी पंचमी, रक्षा पंचमी-जैन, हलषष्ठी-ललही छठ व्रत।
25.**रवि**-शीतल षष्ठी, मनसा पूजा समाप्त-ब.।
26.**सोम**-शीतला सप्तमी पूजा, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत सबका।
27.**मंगल**-गोकुलाष्टमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (उदया रोहिणी मत), गुग्गा नवमी।
29.**गुरु**-जया एकादशी व्रत-स्मार्त।
30.**शुक्र**-जया एकादशी व्रत-वैष्णव, अघोर द्वादशी।
31.**शनि**-शनिप्रदोष व्रत, पू.फा. के सूर्य प्रातः 6:51।

अगस्त जयन्ती

1.**गुरु**-लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि।
3.**शनि**-मैथिलीशरण गुप्त जयंती।
6.**मंगल**-धर्मसम्राट् स्वामी करपात्रीजी जयंती।
7.**बुध**-ठकुराईन जयन्ती।
9.**शुक्र**-युवक दिवस।
10.**शनि**-कल्कि अवतार।
11.**रवि**-गो.तुलसीदास जयंती।
12.**सोम**-मेला-नैनादेवी-चिन्तपूर्णी देवी-हि.प्र.।
15.**गुरु**-स्वतन्त्रता दिवस।
19.**सोम**-हयग्रीव प्राकट्योत्सव, संस्कृत दिवस, अमरनाथ यात्रा, विश्व छायांकन दिवस।
20.**मंगल**-सद्भावना दिवस, विश्व मच्छर दिवस।
21.**बुध**-विंध्याचल-भीमचण्डी देवी प्राकट्यो.।
22.**गुरु**-विशालाक्षी देवी यात्रा।
24.**शनि**-श्रीबलराम प्राकट्योत्सव
25.**रवि**-महापुरुष तिथि-असम, मु.पर्व चेहल्लुम।
30.**शुक्र**-भारतेन्दु जयन्ती।

सितम्बर व्रत-त्यौहार

1.**रवि**-मास शिवरात्रि व्रत, शिव-चतुर्दशी व्रत, अघोर चतुर्दशी।
2.**सोम**-स्नान-दान-श्राद्ध की सोमवती अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या, पिठौरी अमावस।
3.**मंगल**-स्नान-दान की भौमवती अमावस्या।
4.**बुध**-चन्द्रदर्शन।
5.**गुरु**-मु. रबिउल अव्वल हि.1446।
6.**शुक्र**-हरितालिका तीज व्रत, डेला चौथ-चन्द्रदर्शन निषेध (चन्द्रास्त रात 7:55)।
7.**शनि**-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, गणेशोत्सव प्रारंभ।
8.**रवि**-ऋषि पंचमी व्रत, अरुन्धती सहित सप्तऋषि पूजन, रक्षा पंचमी-बंगाल।
9.**सोम**-सूर्य षष्ठी व्रत, लोलार्क कुण्ड स्नान पर्व, भदैनी-वाराणसी।
10.**मंगल**-मुक्ताभरण संतान सप्तमी व्रत, अपराजिता सप्तमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ च.उ.रा.11:48, सोरहिया मेला-16 दिन प्रारम्भ, अनुराधा में ज्येष्ठा देवी आवाहन।
11.**बुध**-राधाष्टमी व्रत, दूर्वाष्टमी पर्व, दुर्गाष्टमी व्रत।
12.**गुरु**-महानन्दा नवमी।
13.**शुक्र**-दशावतार व्रत, उ.फा. के सूर्य रा.1:0।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

बारह राशियों का वार्षिक राशिफल–सन् 2024 ई.

मेष–चु चे चो ला ली लू ले लो अ

मेष राशि वालों को यह वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा। सामाजिक कार्यों में भाग दौड़ ज्यादा होगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी आयेगी। हड्डियों एवं पेट, आँख से सम्बन्धित बीमारी हो सकती है। आर्थिक मामले में धन बचत की ओर ध्यान दें। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। सम्पत्ति क्रय विक्रय के लिये यह वर्ष शुभ है। कार्य क्षेत्र में परिश्रम के बावजूद उस अनुपात में फल प्राप्त नहीं होगा। सहयोगीजनों से मतभेद उभर सकते हैं। प्रेम सम्बन्ध में संलग्न व्यक्तियों को अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना होगा। पति-पत्नी के मध्य अधिकांशतः सुख सहयोग बना रहेगा। मानसिक उतार-चढ़ाव के कारण मन में दुविधा बनी रहेगी। व्यापार अच्छा रहेगा।

वृष–इ उ ए ओ वा वी वू वे वो

वृष राशि वालो के लिये यह वर्ष मिलाजुला रहेगा। आकस्मिक रूप से पारिवारिक समस्या आयेगी। दैनिक जीवन में भागदौड़ एवं व्यस्तता रहेगी। नौकरी पेशा वालों पर दायित्व बढ़ेगा। व्यापारियों के कारोबार में कुछ उलझनें आयेंगी। महिलाओं को संयम से काम लेना होगा। समाज में उच्च पद प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। व्यायाम में रुचि रखने से उत्तम स्वास्थ्य रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। वाहन-मकान आदि सम्पत्ति खरीदने की योजना बनेगी। प्रेम प्रसंगों में एक दूसरे की भावनाओं को समझने की कोशिश करें। पति-पत्नी के बीच मतभेद उभर सकते हैं। लड़ाई- झगड़े से बचें, चने की दाल एवं केले का दान करें।

मिथुन–का की कु घ ङ छ के को हा

मिथुन राशि वालों को यह वर्ष सकारात्मक रहेगा। रुके हुये कार्य बनने की संभावना है। शत्रुपक्ष हावी हो सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बढ़ सकती है। गला-कान से सम्बन्धित बीमारी हो सकती है। इष्ट-मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। इस वर्ष जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लें, नुकसान हो सकता है। धन का लेन देन सही ढंग से करें। शिक्षा में जुड़े लोगों की उन्नति का योग है। कृषि क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को लाभ की संभावना है। नौकरी पेशा वालो की उन्नति होगी। पति-पत्नी के बीच मनमुटाव हो सकता है। सन्तान के सफलता के योग हैं। माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

कर्क–ही हु हे हो डा डी डू डे डो

कर्क राशि वालों को शनि की ढैया चलेगी। इस वर्ष परिश्रम के अनुरूप फल नहीं मिलेगा। विरोधी हावी होंगे। परिवार में मतभेद, झगड़े-झंझट होंगे। रोजी-रोजगार में रुकावट आयेगी। स्थान परिवर्तन हो सकता है। शारीरिक कष्ट एवं अन्य परेशानी आ सकती है। मानसिक कष्ट होगा। कोई निकटस्थ व्यक्ति धोखा दे सकता है। वाहन से सावधान रहें। चोट-चपेट की संभावना है। जीवन साथी से मतभेद रहेगा। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। वयोवृद्ध महिलाओं का आशीर्वाद कवच रूप काम करेगा। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। सफेद वस्तु का दान करें।

सिंह–मा मी मू मे मो टा टी टू टे

यह वर्ष सिंह राशि वालो को अष्टमस्थ राहु स्वास्थ्य बाधा देगा। मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा होगी। मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। महिलाओं के कारण कष्ट एवं कलह की स्थिति बनेगी। व्यापार-कारोबार में अच्छी सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कोई भी कार्य सोच विचार कर करें। संतान पक्ष से खुशी मिलेगी। माता-पिता का भरपूर सहयोग मिलेगा। नौकरी पेशा वालों को पद वृद्धि का अवसर प्राप्त होगा। कृषि कार्य से जुड़े लोग अच्छी उन्नति करेंगे। विद्यार्थीगण अच्छी मेहनत करने पर सफल होंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रशासन से भय रहेगा। वर्ष के अन्त में किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा।

कन्या–टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

कन्या राशि वालों को इस वर्ष शुभ तथा अशुभ फलों का मिश्रित प्रभाव रहेगा। मान-सम्मान तथा धन की प्राप्ति होगी। विदेश यात्रा हो सकती है। किसी वांछित वस्तु का लाभ होगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। संतान के विषय में शुभ समाचार मिलेंगे। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। शुभ कार्यों में आवश्यकता से अधिक व्यय होगा। कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगेंगे। बन्धु-बान्धवों से विवाद हो सकता है। भोगोपभोग की वस्तुओं का लाभ होगा। प्रायः सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। कृषि कार्य से जुड़े लोगों को यह वर्ष अच्छा रहेगा। नौकरी वालों को शुभ संकेत मिलेंगे। शिक्षार्थीगण सफल होंगे।

तुला–रा री रू रे रो ता ती तू ते

इस वर्ष तुला राशि वाले महत्त्वपूर्ण व्यापारिक सौदों में सावधानी बनाये रखें। धन हानि के प्रति सावधान रहें। पारिवारिक समस्या बनेगी। किसी एजेन्ट के माध्यम से किये व्यवहार में हानि की संभावना है। यात्राओं में कष्ट होगा। रक्तचाप को अनदेखा न करें। सामान्य अवरोधों तथा अड़चनों के मध्य लाभ होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। रोजी-रोजगार में कठिन परिस्थिति उत्पन्न होगी। मन में असन्तोष रहेगा। व्यर्थ के वाद-विवाद में पद हानि का भय रहेगा। चोरी अथवा अग्नि काण्ड से धनहानि का भय रहेगा। मांगलिक कार्यों में देरी होगी। दाम्पत्य जीवन बाधित होगा। सन्तान को सफलता मिलेगी। उत्तरार्ध का समय अच्छा रहेगा। अब तक के रुके हुये कार्य पूरे होंगे।

वृश्चिक–तो ना नी नू ने नो या यी यू

वृश्चिक राशि वालों को इस वर्ष शनि की ढैया का प्रभाव रहेगा। मन अज्ञात कारणों से अथवा मिथ्या अपवाद के भय से आशंकित रहेगा। खान-पान बिगड़ेगा कार्यों में अवरोध बनेंगे। जीवन साथी रोग ग्रस्त रहेगा। पारिवारिक सदस्यों से मतभेद होगा। अपमान जनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति निर्बल होगी। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन के योग हैं। विरोधियों का वर्चस्व रहेगा। मानसिक शांति भंग होगी। दुर्घटनाओं के प्रति सावधान रहें। जीवन साथी तथा सन्तान के मतभेद से मन खिन्न रहेगा। बाहरी स्थानों की निरर्थक यात्रा होगी। भूमि-भवन के मामले सुलझने में समय लगेगा। जमीन का क्रय विक्रय हो सकता है। विद्यार्थीगण खूब मेहनत करें तभी सफलता मिलेगी।

धनु–ये यो भा भी भू ध फ ढ भे

धनु राशि वालों को इस वर्ष सन्तान के विषय में शुभ समाचार मिलेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। भू-सम्पत्ति के वाद-विवाद बढ़ेंगे। प्रारम्भ में रोजी-रोजगार में उतार-चढ़ाव रहेगा। सभी कार्य में असफलता होगी। सरकारी कार्यों में बाधा आयेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य खराब होगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। कृषिकार्य में जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। शिक्षार्थीगण कड़ी मेहनत से सफल होंगे। रोगों से छुटकारा मिलेगा। मैत्रीपूर्ण वातावरण भंग होगा। पत्नी को कष्ट होगा। दूरस्थ स्थानों की यात्रा होगी। षष्ठ गुरु, चतुर्थ राहु शत्रुता पैदा करेंगे। सुख क्षीण होगा। नौकरी वालों को किसी नये पद का कार्य भार सम्भालने का अवसर मिलेगा। परन्तु बाधा आ सकती है। उत्तरार्ध में जीवन साथी से मेल होगा।

मकर–भो जा जी खी खू खे खो गा गी

मकर राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। मानसिक तनाव रहेगा। हर कार्य में अवरोध रहेगा। कफ जनित कष्ट होगा। दाम्पत्य जीवन में तनाव रहेगा। अपमान जनक स्थिति बनेगी। उच्च रक्तचाप से पीड़ित होंगे। आर्थिक कठिनाइयाँ बनी रहेंगी। जीवन यापन के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। चोरी अथवा अग्निकाण्ड से धन की हानि होगी। मांगलिक कार्यों में देरी होगी। मिथ्या अपवाद के वातावरण से मन अशान्त रहेगा। वाहन की गति धीरे रखें, चोट चपेट की सम्भावना बनेगी। खान पान बिगड़ेगा। किसी अनुभवी बजुर्ग की सलाह महत्वपूर्ण होगी। उसे अनदेखा न करें। भगवान शिव की आराधना करते रहें। कोर्ट-कचहरी के मामले यथावत रहेंगे।

कुम्भ–गू गे गो सा सी सू से सो दा

कुम्भ राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव मध्यम रहेगा। सरकारी कार्यों में बाधा के बाद सफलता मिलेगी। अधिक भागदौड़ होगी तथा सामान्य सफलता मिलेगी। मतभेद एवं वाद-विवाद अधिक होंगे। जीवनसाथी तथा सन्तान के कारण कष्ट होगा। किसी अनजानी अनचाही विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। चोरों, तस्करों से हानि होगी। राजकीय भय बना रहेगा। उत्तरार्ध में कार्यों में सफलता मिलेगी। पदोन्नति हो सकती है। कारोबार में सफलता मिलेगी। भूमि-भवन के मामलों में मामूली सफलता मिलेगी। मन में आलस्य के कारण कई कार्य बिगड़ सकते हैं। विरोधियों का वर्चस्व बढ़ेगा। अज्ञात कारणों से भय बना रहेगा।

मीन–दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

इस वर्ष मीन राशि वालो को चढ़ती साढ़ेसाती का प्रभाव सामान्य रहेगा। घरेलू वातावरण में अजीब प्रकार की उदासीनता रहेगी। शासन-सत्ता का भय रहेगा। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। कारोबार में उतार-चढ़ाव के बाद सफलता मिलेगी। काम के बोझ से मानसिक तनाव रहेगा। अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होंगे। नेत्र तथा उदर रोग से पीड़ा होगी। वयोवृद्ध महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। नवीन योजनायें बनेंगी। मगर उचित निर्णय लें, अन्यथा कठिनाई बढ़ेगी। बहुमूल्य धातुओं के रख-रखाव में लापरवाही न करें। भूमि-भवन का क्रय-विक्रय होगा। वाहन का योग भी है। व्यर्थ के वाद-विवाद में समय व्यतीत न करें। कृषि क्षेत्र एवं शिक्षा में अच्छी सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ होता रहेगा।

•

शनि की साढ़ेसाती तथा ढैय्या

इस वर्ष शनि देव कुम्भ राशि में भ्रमण करेंगे। मकर, कुंभ, मीन राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। तथा कर्क, वृश्चिक राशि वालों के लिये ढैया चलेगी।

मीन राशि के शिर पर, कुंभ राशि के हृदय पर, मकर राशि के पैर पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

गोचर वश मेष से 11, वृष से 10, मिथुन से 9, कर्क से 8, सिंह से 7, कन्या से 6, तुला से 5, वृश्चिक से 4, धनु से 3, मकर से 2, कुंभ से 1, मीन से बारहवें स्थान में शनि देव भ्रमण करेंगे।

शनि शांति के लिए उपाय

शनि के साढ़ेसाती व ढैया वालों को शान्ति के लिये शनि का जप, दान करना तथा शनिस्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमानजी की आराधना दर्शन-पूजन, शनिवार को पीपल के मूल (जड़) में प्रातः काला तिल सहित जल देना चाहिए तथा सायं प्रदोष काल में दीपदान करना चाहिए। बन्दर को गुड़ चना देना चाहिए।

शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ तथा काले घोड़े के नाल या नाव के काँटे की अँगूठी मध्यमा अंगुली में धारण करें। काला तिल, अंजन, लोहा, सौंफ, धान का लावा को जल में डालकर स्नान करने से शनिदोष शांत होता है। •

सितम्बर का शेषांश व्रत-त्यौहार

ता.वार विवरण

14.शनि-पद्मा-कर्मा एकादशी व्रत, डोल ग्यारस, जलझूलनी एकादशी-राजस्थान।
15.रवि-प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी व्रत, श्रवण द्वादशी महारविवार व्रत।
17.मंगल-अनन्त चतुर्दशी व्रत, व्रत की पूर्णिमा, गणपति विसर्जन, विश्वकर्मा पूजा, कन्या संक्रान्ति दिन 11:8, नान्दी मातामह श्राद्ध।
18.बुध-स्नान-दान की पूर्णिमा, उमा महेश्वर व्रत, लोकपाल पूजा, आश्विन में दुध का त्याग, महालया-पितृपक्ष आर., प्रतिपदा श्राद्ध।
19.गुरु-फसली नववर्षारंभ असौज सन्1432 प्रारम्भ, अशून्यशयन व्रत, द्वितीया श्राद्ध।
20.शुक्र-तृतीया श्राद्ध।
21.शनि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 8:12, चतुर्थी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध।
22.रवि-पंचमी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत।
23.सोम-षष्ठी श्राद्ध।
24.मंगल-सप्तमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत चं.उ.रात 10:48।
25.बुध-जीवित्पुत्रिका (जीउतिया) व्रत, अष्टका श्राद्ध, अष्टमी श्राद्ध।
26.गुरु-मातृनवमी, मातामह श्राद्ध, नवमी श्राद्ध, जीउतिया व्रत पारण।
27.शुक्र-हस्त के सूर्य सा.4:24 दशमी श्राद्ध।
28.शनि-इन्दिरा एका.व्रत, एकादशी श्राद्ध।
29.रवि-यती-संन्यासी श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध एवं मघा श्राद्ध।
30.सोम-सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध।

सितम्बर जयन्ती

2.सोम-मु.शहादते इमाम हसन।
4.बुध-मु.आखिरी चहार शम्बा।
5.गुरु-वाराह प्राकट्योत्सव-मध्याह्न, शिक्षक दिवस, डॉ.राधाकृष्णन् जयन्ती, मदर टेरेसा पुण्य तिथि, शंकर देव तिथि-असम।
8.रवि-मेला पाट 3 दिन, विश्व साक्षरता दिवस।
11.बुध-संत विनोबा भावे जयन्ती।
12.गुरु-श्रीचन्द जयन्ती।
14.शनि-हिन्दी दिवस।
15.रवि-श्रीवामन प्राकट्योत्सव, इंजीनियर्स-डे।
16.सोम-मु.पर्व बारावफात।

ता.वार विवरण

17.मंगल-विश्वकर्माजी प्राकट्योत्सव।
21.शनि-मु.पर्व ईद मिलाद।
24.मंगल-विश्व हृदय दिवस।
30.सोम-बैंक अर्धवार्षिक लेखा बन्दी।

अक्टूबर व्रत-त्यौहार

1.मंगल-चतुर्दशी श्राद्ध, शस्त्रादि से मृतक का श्राद्ध।
2.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, पितृ-विसर्जन, महालया समाप्त।
3.गुरु-शारदीय नवरात्र आरम्भ, कलश स्थापन, दौहित्र द्वारा मातामह श्राद्ध।
4.शुक्र-चन्द्रदर्शन।
5.शनि-मु.म. रवि उस्सानी हि.1446।
6.रवि-वैना गणेश चतुर्थी व्रत, मान चतुर्थी।
7.सोम-उपांग ललिता व्रत।
8.मंगल-बिल्व आमन्त्रण।
9.बुध-सरस्वती आवाहन।
10.गुरु-महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रातः 7:30 से, चित्रा के सूर्य रात 3:54।
11.शुक्र-महाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रातः 6:52 तक, सरस्वती पूजा, महानवमी, दुर्गा नवमी व्रत।
12.शनि-विजयादशमी, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, शमीपूजन, दुर्गा देवी विसर्जन, शस्त्रपूजा, नवरात्र व्रत पारण।
13.रवि-पापांकुशा एकादशी व्रत-स्मार्त।
14.सोम-पापांकुशा एकादशी व्रत-वैष्णव, पद्मनाभ द्वादशी व्रत।
15.मंगल-भौम प्रदोष व्रत।
16.बुध-व्रत की पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, शरद् पूर्णिमा।
17.गुरु-स्नान-दान की पूर्णिमा, तुला संक्रान्ति रात 9:59।
18.शुक्र-कार्तिक मास का यम-नियम-व्रतारंभ, अशून्यशयन व्रत।
20.रवि-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत चं.उ. रात 7:39 पर, ललिता चतुर्थी, दशरथ चतुर्थी-बंगाल।
24.गुरु-अहोई अष्टमी व्रत चन्द्रोदय रात 11:38, राधाष्टमी व्रत, राधा कुण्ड स्नान पर्व, कराष्टमी-महाराष्ट्र, स्वाती के सूर्य दिन 2:35।
28.सोम-रम्भा एका.व्रत सबका, गोवत्स द्वादशी।

ता.वार विवरण

29.मंगल-भौम प्रदोष व्रत, धनतेरस।
30.बुध-नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, हनुमज्जन्म सायं।
31.गुरु-दीपावली, गणेश-लक्ष्मी-महाकाली पूजा, प्रातः हनुमद् दर्शन।

अक्टूबर जयन्ती

1.मंगल-रक्तदान दिवस।
2.बुध-गाँधी-शास्त्री जयन्ती, अहिंसा दिवस।
3.गुरु-श्रीशैलपुत्री देवी दर्शन, महाराज अग्रसेन जयंती।
4.शुक्र-श्रीब्रह्मचारिणी देवी दर्शन, राष्ट्रीय अखण्डता दिवस।
5.शनि-श्रीचित्रघण्टा देवी दर्शन, विश्व खाद्य दिवस।
6.रवि-श्रीकूष्माण्डा (दुर्गा) देवी दर्शन।
7.सोम-श्रीस्कन्दमाता देवी दर्शन।
8.मंगल-श्रीकात्यायनी देवी दर्शन, वायु सेना दिवस।
9.बुध-श्रीकालरात्रि देवी दर्शन, विश्व दृष्टि दिवस।
10.गुरु-चरखा जयन्ती, राष्ट्रीय डाक दिवस, श्रीमहागौरी देवी दर्शन।
11.शुक्र-श्री सिद्धिदात्री देवी दर्शन।
12.शनि-साईंबाबा पुण्यतिथि, माधवाचार्य जयंती, बौद्धावतार।
13.रवि-भरतमिलाप-नाटी इमली, वाराणसी।
15.मंगल-मु.पर्व ग्यारहवीं शरीफ।
17.गुरु-वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयन्ती।
20.रवि-नक्कटैया चेतगंज, वाराणसी, उर्स-हजरत निजामुद्दीन औलिया-दिल्ली।
21.सोम-पुलिस स्मृति दिवस।
24.गुरु-श्रीराधा प्राकट्योत्सव।
30.बुध-धन्वन्तरी प्राकट्योत्सव, श्रीकामेश्वरी देवी प्राकट्योत्सव, श्रीहनुमान प्राकट्योत्सव।
31.गुरु-सरदार वल्लभभाई पटेल जयन्ती, एकता दिवस।

नवम्बर व्रत त्यौहार

1.शुक्र-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, दीपावली सायं 5:14 तक।
2.शनि-अन्नकूट, गोवर्धन पूजा काशी से अन्यत्र, बलिपूजा, नेपाली नववर्ष संवत् 1145 आरम्भ।
3.रवि-गोवर्धन पूजा-काशी में, भैयादूज, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, दावात पूजा, चन्द्रदर्शन।

ता.वार विवरण

4.सोम-मु.म.जमादि उल अव्वल हि.1446।
5.मंगल-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी (डाला छठ) व्रत 3 दिन प्रारम्भ।
6.बुध-विशाखा के सूर्य रात 9:42, ज्ञान पंचमी-जैन।
7.गुरु-सूर्यषष्ठी (डालाछठ) व्रत सायं अर्घ्य।
8.शुक्र-डाला छठ प्रातः अर्घ्य, व्रत पारण।
9.शनि-गोपाष्टमी, गो पूजन।
10.रवि-अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आँवला नवमी, दुर्गा नवमी, जगद्धात्री पूजा-बंगाल।
12.मंगल-हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह, भीष्म पंचक प्रारम्भ।
13.बुध-प्रदोष व्रत, चातुर्मास व्रत समाप्त।
14.गुरु-वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस-जैन।
15.शुक्र-स्नान-दान की पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, रास पूर्णिमा, त्रिपुरोत्सव, देव दीपावली, श्रीकार्तिकेय दर्शन।
16.शनि-वृश्चिक संक्रान्ति रात 7:25।
19.मंगल-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 8:23, अनुराधा के सूर्य रात 2:37।
20.बुध-श्रीअन्नपूर्णा देवी व्रतारम्भ 16 दिना.।
21.गुरु-श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन।
23.शनि-भैरव अष्टमी व्रत, अष्टभैरव दर्शन, कालाष्टमी।
26.मंगल-उत्पन्ना एकादशी व्रत सबका।
28.गुरु-प्रदोष व्रत।
29.शुक्र-मासशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत।
30.शनि-श्राद्ध की अमावस्या।

नवम्बर जयन्ती

1.शुक्र-महावीर निर्वाण दिवस।
2.शनि-कालीदास जयन्ती।
10.रवि-अयोध्या-मथुरा परिक्रमा।
14.गुरु-बाल दिवस, पण्डित जवाहर लाल नेहरू जयन्ती।
15.शुक्र-गुरुनानक जयन्ती, पुष्कर मेला-अजमेर, हरिहर क्षेत्र मेला-सोनपुर, गढ़ मुक्तेश्वर-पुष्कर मेला, महावीर-रथोत्सव-जैन, भृगु आश्रम मेला-ददरी-बलिया।
21.गुरु-लोटा भंटा मेला-रामेश्वर, वाराणसी।
23.शनि-कालभैरव प्राकट्योत्सव।

दिसम्बर व्रत त्यौहार

1.रवि-स्नान-दान की अमावस्या, रुद्र व्रत-पीढ़िया (प्रदोष काल)।

ता.वार विवरण

2.सोम-ज्येष्ठा के सूर्य रा.शे.5:49, चन्द्रदर्शन।
3.मंगल-मु.म. जमादि उस्सानी हि.1446।
5.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।
6.शुक्र-द्वितीय नागपंचमी, श्रीपंचमी, श्रीराम विवाहोत्सव।
7.शनि-स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी-महाराष्ट्र, मूलकरूपिणी षष्ठी व्रत, गुहषष्ठी।
8.रवि-मित्र (सूर्य) सप्तमी व्रत।
9.सोम-महानन्दा नवमी, कल्पादि नवमी।
11.बुध-मोक्षदा एका.व्रत, मौनी एका.-जैन।
13.शुक्र-प्रदोष व्रत।
14.शनि-व्रत की पूर्णिमा, पिशाचमोचन श्राद्ध, कपर्दीश्वर महादेव दर्शन।
15.रवि-स्नान-दान पूर्णिमा।
16.सोम-मूल-धनु संक्रान्ति प्रातः 7:38, खरमास प्रारम्भ।
18.बुध-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ.रात 8:10।
23.सोम-कालाष्टमी।
25.बुध-बड़ा दिन, पौष दशमी-जैन।
26.गुरु-सफला एकादशी व्रत सबका।
28.शनि-शनि प्रदोष व्रत।
29.रवि-मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत, पू.षा. के सूर्य दिन 8:36।
30.सोम-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, सोमवती अमावस्या।

दिसम्बर जयन्ती

1.रवि-विश्व एड्स दिवस।
3.मंगल-डॉ.राजेन्द्र प्रसाद जयन्ती, किसान दिवस, भोपाल गैस त्रासदी दिवस।
4.बुध-नौसेना दिवस।
6.शुक्र-डॉ.भीमराव अम्बेडकर पुण्य तिथि, तेग बहादुर शहीद दिवस।
7.शनि-झण्डा दिवस।
10.मंगल-मानवाधिकार दिवस।
11.बुध-गीता जयंती।
14.शनि-श्रीदत्तात्रेय प्राकट्योत्सव, ऊर्जा बचत दिवस।
15.रवि-अन्तर्गृही यात्रा-काशी, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी देवी प्राकट्योत्सव।
25.बुध-ईसा मसीह जयंती, पं.मदनमोहन मालवीय जयंती (अंग्रेजी मत)।
31.मंगल-नववर्ष की पूर्व संध्या।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

जीवनोपयोगी कुछ आवश्यक बातें

1. देवपूजा पूरब या उत्तर मुख होकर और पितृपूजा दक्षिण मुख होकर करनी चाहिये।
2. ताँबा भगवत्स्वरूप, पवित्र एवं भगवान् को बहुत प्रिय है। ताँबे के पात्र में रखकर जो वस्तु भगवान् को अर्पण की जाती है, उससे भगवान् को बड़ी प्रसन्नता होती है। इसलिये भगवान् को जल आदि वस्तुएँ ताँबे के पात्र में रखकर अर्पण करनी चाहिये।
3. सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिये। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।
4. पूर्व की तरफ सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है। दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है। पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिन्ता होती है। उत्तर की तरफ सिर करके सोने से हानि तथा मृत्यु होती है अर्थात् आयु क्षीण होती है।
5. बाँस या पलाश की लकड़ी पर कभी नहीं सोना चाहिये।
6. दिन में और सूर्योदय के बाद सोना आयु को क्षीण करने वाला है। प्रातःकाल और रात्रि के आरम्भ में भी नहीं सोना चाहिये।
7. भोजन सदा पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके करना चाहिये।
8. परोसे हुए अन्न की निन्दा नहीं करनी चाहिये। वह स्वादिष्ट हो या न हो, प्रेम से भोजन कर लेना चाहिये। जिस अन्न की निन्दा की जाती है, उसे राक्षस खाते हैं।
9. भोजन करते समय मौन रहना चाहिये।
10. अधिक भोजन करना आरोग्य, आयु, स्वर्ग और पुण्य का नाश करने वाला तथा लोक में निन्दा कराने वाला है। इसलिये अति भोजन का परित्याग करना चाहिये।
11. थोड़ा भोजन करने वाले को छः गुण प्राप्त होते हैं—आरोग्य, आयु, बल और सुख तो मिलते ही हैं, उसकी सन्तान सुन्दर होती है तथा 'यह बहुत खाने वाला है' ऐसा कहकर लोग उसपर आक्षेप नहीं करते।
12. खड़े होकर जल नहीं पीना चाहिये।
13. जो एक हाथ से प्रणाम करता है, उसके जीवन भर का किया हुआ पुण्य निष्फल हो जाता है। पैर हमेशा दोनों हाथों से छूना चाहिये।
14. किसी भी प्राणी के ऊपर से लाँघकर नहीं जाना चाहिये।
15. किसी भी शुभ या अशुभ वस्तु को न तो लाँघे और न उस पर पैर ही रखे।
16. आचार्य, पिता, माता और बड़ा भाई—इनका दुःखी होकर भी कभी अपमान न करे। आचार्य परमात्मा की मूर्ति, पिता ब्रह्मा की मूर्ति, माता पृथ्वी की मूर्ति और भाई अपनी ही मूर्ति है।
17. जो स्त्रियाँ घर के बर्तनों को सुव्यवस्थित रूप से न रखकर इधर-उधर बिखेरे रहती हैं, सोच-समझकर काम नहीं करतीं, सदा अपने पति के प्रतिकूल ही बोलती हैं, दूसरों के घरों में घूमने-फिरने में रुचि रखती हैं और लज्जा को सर्वथा छोड़ देती हैं, उन्हें लक्ष्मी त्याग देती हैं।
18. विवाह और विवाद सदा समान व्यक्तियों से ही होना चाहिये।
19. स्त्री को चाहिये कि वह धोबिन, कुलटा, अधम और कलहप्रिय स्त्रियों को कभी अपनी सखी न बनाये।
20. स्त्रियों का अपने भाई-बन्धुओं के यहाँ अधिक दिनों तक रहना उनकी कीर्ति, शील तथा पातिव्रत्य-धर्म का नाश करने वाला होता है।
21. रात्रि में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिये।
22. कोई अतिथि घर पर आ जाय तो उसको प्रेमभरी दृष्टि से देखे। मन से उसका हित-चिन्तन करे। मीठी वाणी बोलकर उसे सन्तुष्ट करे। जब वह जाने लगे, तब कुछ दूर तक उसके पीछे जाय और जब तक वह रहे, तब तक उसके स्वागत-सत्कार में लगा रहे—ये पाँच काम करना गृहस्थ के लिये 'पञ्चदक्षिण-यज्ञ' कहलाता है।
23. अपनी ही वाणी से अपने गुणों का वर्णन करना अपने ही हाथों अपनी हत्या करने के समान है।
24. स्वजनों के साथ विरोध, बलवान् के साथ स्पर्धा और स्त्री, बालक, वृद्ध या मूर्ख के साथ विवाद कभी नहीं करना चाहिये।
25. शत्रु के भी गुणों को ग्रहण करना चाहिये और गुरु के भी दुर्गुणों का त्याग करना चाहिये।
26. स्त्री संग, भोजन और मल-मूत्र का त्याग सदा एकान्त में करना चाहिये।
27. छोटी-छोटी बात के लिये शपथ नहीं लेनी चाहिये। व्यर्थ शपथ लेने वाला मनुष्य इहलोक और परलोक में भी नष्ट होता है।
28. कुल्हड़ा काटने या फोड़ने वाली स्त्री और दीपक बुझाने वाला पुरुष कई जन्मों तक रोगी और दरिद्र होते हैं।
29. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अथवा नीच जाति में उत्पन्न हुए पुरुष से भी यदि ज्ञान मिलता हो तो उसे श्रद्धापूर्वक ग्रहण करना चाहिये।
30. कल किया जाने वाला काम आज और सायंकाल में किया जाने वाला काम प्रातःकाल में ही पूरा कर लेना चाहिये; क्योंकि मौत यह नहीं देखती कि इसका काम अभी पूरा हुआ है या नहीं?
31. अनेक कार्य उपस्थित होने पर बुद्धिमान् मनुष्य को आवश्यक कार्य पहले तथा शीघ्रता से करना चाहिये और न करने योग्य कार्य पीछे तथा देरी से करना चाहिये।
32. पत्र, पुष्प और फल को देवता पर उल्टा मुख करके नहीं चढ़ाना चाहिये। वे पत्र-पुष्पादि जिस रूप में उत्पन्न हों, उसी रूप में उन्हें देवता पर चढ़ाना चाहिये।
33. स्नान के बाद पुष्पवस्त्र न करे; क्योंकि से पुष्प देवता पर चढ़ाने योग्य नहीं माने गये हैं।
34. दूसरों से गाली सुनकर भी स्वयं उन्हें गाली नहीं देनी चाहिये। गाली को सहन करने वाले का रोका हुआ क्रोध ही गाली देने वाले को जला डालता है और उसके पुण्य को भी ले लेता है।
35. ये नौ बातें गोपनीय हैं, इन्हें प्रकट नहीं करना चाहिये—अपनी आयु, धन, घर का कोई भेद, मन्त्र, मैथुन, औषधि, तप, दान तथा अपमान।
36. अपनी स्त्री, भोजन और धन—इन तीनों में सन्तोष करना चाहिये, परन्तु अध्ययन (स्वाध्याय), तप (जप) और दान—इन तीनों में सन्तोष नहीं करना चाहिये।
37. मनुष्य को पाँच वर्ष तक पुत्र का प्यार से पालन करना चाहिये, दस वर्ष तक उसे अनुशासित रखना चाहिये और सोलह वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर उसके साथ मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिये।
38. घर में टूटी-फूटी अथवा अग्नि से जली हुई प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये। ऐसी मूर्ति की पूजा करने से गृहस्वामी के मन में उद्वेग या अनिष्ट होता है।
39. घर में प्रतिदिन पूजा के लिये वही प्रतिमा कल्याणदायिनी होती है, जो स्वर्ण आदि धातुओं की बनी हो तथा कम-से-कम अँगूठे के बराबर तथा अधिक-से-अधिक एक बित्ते की हो। जो टेढ़ी हो, जली हुई हो, खण्डित हो, जिसका मस्तक या आँख फूटी हुई हो अथवा जिसे चाण्डाल आदि अस्पृश्य मनुष्यों ने छू दिया हो, वैसी प्रतिमा की पूजा नहीं करनी चाहिये।
40. घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यप्रतिमा, तीन देवी-प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालग्राम का पूजन नहीं करना चाहिये। इनका पूजन करने से गृहस्वामी को दुःख, अशान्ति की प्राप्ति होती है।
41. विष्णु के मन्दिर की चार बार, शंकर के मन्दिर की आधी बार, देवी के मन्दिर की एक बार, सूर्य के मन्दिर की सात बार और गणेश के मन्दिर की तीन बार परिक्रमा करनी चाहिये।
42. घी का दीपक देवता के दायें भाग में और तेल का दीपक बायें भाग में रखना चाहिये।
43. कलह करने से आयु, धन, मित्र, यश तथा सुख का नाश होता है। अतः कलह कभी न करे।
44. विद्या चाहने वाले को क्षण का और धन चाहने वाले को कण का त्याग नहीं करना चाहिये, प्रत्युत क्षण-क्षण विद्या का अभ्यास और कण-कण धन का संग्रह करना चाहिये।
45. कभी भी छिपकर किसी की बातें नहीं सुननी चाहिये। दूसरों की गुप्त बातों को जानने की चेष्टा नहीं करनी चाहिये और जानने पर उन्हें छिपाना चाहिये।
46. अधिक साहस, अधिक शयन, अधिक जागरण, अधिक स्नान और अधिक भोजन न करे।
47. भगवान की आरती पंचदीप से करनी चाहिए।

निरोग रहने के दोहे

रक्तचाप बढ़ने लगे, तब मत सोचो भाय।
सौगंध राम की खाइ के, तुरंत छोड़ दो चाय॥
सुबह खाइये कुंवर सा, दोपहर यथा नरेश।
भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुरेश॥
घूँट-घूँट पानी पियो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी या मोटापा, होवें चकनाचूर॥
लौकी का रस पीजिये, चोकर युक्त पिसान।
तुलसी, गुड़, सेंधा नमक, हृदय रोग निदान॥
रोज मुलहठी चूसिये, कफ बाहर आ जाए।
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाए॥
भोजन करके खाइये, सौंफ, गुड़, अजवान।
पत्थर भी पच जाएगा, जानै सकल जहान॥
तुलसी का पत्ता करे, यदि हरदम उपयोग।
मिट जाते हैं हर उम्र में, शरीर के सारे रोग॥
जो नहावें गर्म जल से, तन मन हो कमजोर।
आँख ज्योति कमजोर हो, शक्ति घटे चहुँओर॥
ऊर्जा मिलती है बहुत, पियें गुनगुना नीर।
कब्ज खत्म हो पेट की, मिट जाए हर पीर॥
प्रातः काल पानी पियें, घूँट-घूँट कर आप।
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप॥
चैत्र माह में नीम की पत्ती हर दिन खावे।
ज्वर, डेंगू या मलेरिया, बारह मील भगावे॥
सौ वर्षों तक वह जिए, जो लेते नाक से सांस।
अल्पकाल जीये वह, जो मुंह से श्वासोच्छवास॥
भोजन करके रात में, घूमें कदम हजार।
डॉक्टर, ओझा, वैद्य का लुट जाए व्यापार॥
भोजन करें धरती पर, अल्थी-पल्थी मार।
चबा-चबा कर खाइये, वैद्य न झांकै द्वार॥
भोजन करके जोहिये, केवल घण्टा-डेढ़।
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड़॥
देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल।
अपच, आँख के रोग संग, तन भी रहे निढाल॥
फल या मीठा खाइके, तुरंत न पीजै नीर।
ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर॥
एल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग।
आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालीस रोग॥
अलसी, तिल, नारियल, घी, सरसों का तेल।
इसका सेवन आप करें, नहीं होगा हार्ट फेल॥

* रोज पका केला खाने से शारीरिक दुर्बलतारूपी ल्यूकोरिया रोग व पुरुषों के प्रजनन शुक्राणु व कैल्शियम संबंधी रोगों को दूर करता है।
* ज्यादा से ज्यादा मीठी नीम/करी पत्ती अपने सब्जियों में डालें, सभी का स्वास्थ्य ठीक करेगा।
* ज्यादा से ज्यादा चीजें लोहे की कड़ाई में ही बनाएँ, आयरन की कमी किसी को नहीं होगी।
* रिफाइंड तेल के बजाय केवल तिल, मूंगफली, सरसों और नारियल तेल का प्रयोग करें। रिफाइंड में बहुत केमिकल होते हैं।
* खाना खाने के बाद कुल्ला करके ही भोजन समाप्त करें, दाँत संबंधित रोग नहीं होंगे।
* लौकी, धनिया, पुदीना, शिमला मिर्च को पानी के साथ पीसकर रोज एक कप इसका रस बासी मुँह पियें इससे किडनी, फैटीलिवर, कील-मुँहासे एवं अन्य चर्म रोग की बिमारी से छुटकारा मिलेगा।

किस मास में क्या न खाएँ

चैते गुड़, वैशाखे तेल, जेठ के पंथ, अषाढ़े बेल।
सावन साग, भादो मही, कुवार करेला, कार्तिक दही॥
अगहन जीरा, पूसै धनिया, माघे मिश्री, फाल्गुन चना।
जो कोई इतने परिहरै, ता घर बैद पैर नहिं धरै॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा

भगवान् शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों का अपना अलग ही महत्व है, पुराणों और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन 12 स्थानों पर जो शिवलिंग मौजूद हैं उनमें ज्योति के रूप में स्वयं भगवान् शिव विराजमान हैं, यही कारण है कि इन्हें ज्योतिर्लिंग कहा जाता है, इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन मात्र से ही श्रद्धालुओं के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

1. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग (गुजरात)—गुजरात के सौराष्ट्र में अरब सागर के तट पर स्थित है, देश का पहला ज्योतिर्लिंग जिसे सोमनाथ के नाम से जाना जाता है, शिव पुराण के अनुसार जब चंद्रमा को प्रजापति दक्ष ने क्षय रोग का श्राप दिया था, तब इसी स्थान पर शिवजी की पूजा और तप करके चंद्रमा ने श्राप से मुक्ति पाई थी, ऐसी मान्यता है कि स्वयं चंद्रदेव ने इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की थी।

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग (आंध्र प्रदेश)—आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के किनारे श्रीशैल पर्वत पर स्थित है मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं और इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश)—मध्य प्रदेश उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर स्थित है महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग। ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है, जहाँ रोजाना होने वाली भस्म आरती विश्व भर में प्रसिद्ध है।

4. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग (मध्य प्रदेश)—ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है और नर्मदा नदी के किनारे पर्वत पर स्थित है, मान्यता है कि तीर्थ यात्री सभी तीर्थों का जल लाकर ओंकारेश्वर में अर्पित करते हैं तभी उनके सारे तीर्थ पूरे माने जाते हैं।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग (उत्तराखण्ड)—केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में अलखनंदा और मंदाकिनी नदियों के तट पर केदार नाम की चोटी पर स्थित है, यहाँ से पूर्वी दिशा में श्री बद्री विशाल का बद्रीनाथधाम मंदिर है, मान्यता है कि भगवान केदारनाथ के दर्शन किए बिना बद्रीनाथ की यात्रा अधूरी और निष्फल है।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, महाराष्ट्र में पुणे से करीब 100 किलोमीटर दूर डाकिनी में स्थित है, यहाँ स्थित शिवलिंग काफी मोटा है, इसलिए इसे मोटेश्वर महादेव भी कहा जाता है।

7. विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग (उत्तर प्रदेश)—उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर जिसे धर्म नगरी काशी के नाम से जाना जाता है, यहाँ पर गंगा नदी के तट पर स्थित है बाबा विश्वनाथ का मंदिर। जिसे विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है, ऐसी मान्यता है कि कैलाश छोड़कर भगवान् शिव ने यहीं अपना स्थाई निवास बनाया था।

8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के नासिक से 30 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है, गोदावरी नदी के किनारे यह मंदिर काले पत्थरों से बना है, शिवपुराण में वर्णन है कि गौतम ऋषि और गोदावरी की प्रार्थना पर भगवान् शिव ने इस स्थान पर निवास करने का निश्चय किया और त्र्यंबकेश्वर नाम से विख्यात हुए।

9. वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग (झारखंड)—वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग झारखंड के देवघर में स्थित है, यहाँ के मंदिर को वैद्यनाथधाम के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि एक बार रावण ने तप के बल से शिवजी को लंका ले जाने की कोशिश की, लेकिन रास्ते में व्यवधान आ जाने से शर्त के अनुसार शिवजी यहीं स्थापित हो गए।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग (गुजरात)—नागेश्वर मंदिर गुजरात में बड़ौदा क्षेत्र में गोमती-द्वारका के करीब स्थित है, धार्मिक पुराणों में भगवान् शिव को नागों का देवता बताया गया है और नागेश्वर का अर्थ होता है नागों का ईश्वर। कहते हैं कि भगवान् शिव की इच्छा अनुसार ही इस ज्योतिर्लिंग का नामकरण किया गया है।

11. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग (तमिलनाडु)—भगवान् शिव का 11 वां ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान में है। ऐसी मान्यता है कि रावण की लंका पर चढ़ाई से पहले भगवान् राम ने जिस शिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेश्वर के नाम से विश्व विख्यात हुआ।

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग (महाराष्ट्र)—घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास स्थित है। भगवान् शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग को घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

Click Here to Download Full PDF:
https://thakurprasadpanchang.com/

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार–

भारत का भविष्यफल सन् 2024 ई.

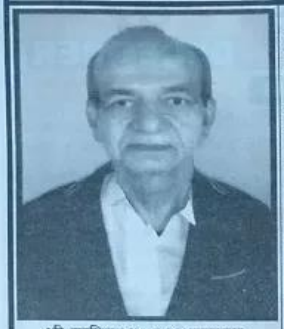

श्री द्वारिका प्रसाद अग्रवाल
पुत्र- स्व. ठाकुर प्रसाद गुप्त

भोजन द्वारा रोगों का उपचार

डाईबिटीज का घरेलू उपचार– 1. एक चम्मच मेथी या दो आम की पत्ती, आधा गिलास पानी में रात को भिगोकर सुबह खाली पेट पीयें। 2. दालचीनी, सेब व जामुन का सिरका, जामुन व जामुन के बीज का चूर्ण। 3. **फल-** सन्तरा, अमरूद, आँवला, आड़ू, चकोतरा। 4. **सब्जी-** करेला, नींबू, भिण्डी, प्याज, खीरा, टमाटर व अन्य हरी सब्जी खायें। 5. चावल- ब्राउन राइस, कुट्टू का चावल व सभी छिलके वाली दालों का प्रयोग करें।

कंधा, पीठ एवं जोड़ों के दर्द का घरेलू उपचार–ये रोग विटामिन-D एवं कैल्शियम की कमी से होता है। सुबह की धूप, काली तिल, मशरूम, दही, सन्तरा, शकरकन्द, कीवी, शिमला मिर्च। काडलीवर आयल (दवा की दुकान पर मिलता है), अण्डा, मछली (सैलमन, मैक्रिल, सारडीन, टूना) (कूलर एवं AC के सामने न सोयें, ठण्डी चीजों का सेवन न करें)।

कोलेस्ट्राल कन्ट्रोल हार्ट की बीमारी को दूर रखे– अखरोट, बादाम, अलसी (तीसी), दालचीनी, ग्रीन टी, काली तिल, लहसुन, सेब, तरबूज, केला, सन्तरा, कीवी, अवेकाडो, गाजर, टमाटर, पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, खीरा, लालमिर्च, हरी मटर, बीन्स ये सभी चीजें मोटाई व चिकनाई को काटती हैं। (बिस्कुट, नमकीन, कोल्डड्रिंक्स एवं तली हुई चीजों का परहेज करें।) सभी सब्जियों का कच्चा सलाद खाना ज्यादा फायदेमन्द है।

हाई-बी.पी. के लिए घरेलू उपचार–तीसी (अलसी), मेथी या अड़हुल का फूल पानी में रात को भिगोकर सुबह पीयें, नारियल का पानी, दही, लहसुन, किशमिश, अमरूद, केला, तरबूज, सन्तरा, नींबू, आँवला, अवेकाडो, प्याज, टमाटर, कीवी, शकरकन्द, ब्रोकली, करेला, सहजन। (कच्चा नमक एवं तली चीजें न खाएँ। अलग से नमक भी न खाएँ।) **नोट-** धूम्रपान, शराब, पान-मसाला न खायें क्योंकि इन सबसे बी.पी. बढ़ता है।

दिमागी ताकत के लिए–अखरोट, बादाम, अनार, सफेद तिल, कद्दू का बीज, दही, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, काली तिल। (रात में बरफ व ठंडी चीजें न पीये। जिनको नींद की शिकायत हो)।

अनिद्रा के लिए–मछली, अलसी (तीसी), कद्दू का बीज, दही, शहद, बादाम।

थाइराइड के लिए–नारियल, काडलीवर आयल, (अश्वगन्धा जड़ी का प्रयोग दस दिन से ज्यादा न करें)। पत्तागोभी, हरी गोभी (ब्रोकली) कच्चा न खायें।

पैरालाइसिस (लकवा)–लहसुन, काली तिल, बैंगन, मूली। (किसी एक्सपर्ट की राय से नियमित व्यायाम करें)।

स्त्री रोग–सन्तरा, नींबू, करौंदा, अमरख व अन्य सभी खट्टे फल तथा ठंडई-खरबूजा के बीज-100 ग्राम, तरबूजा के बीज-100 ग्राम, छोटी इलायची व गोल मिर्च स्वादानुसार, मोटी सौंफ-100 ग्राम, पोस्ता दाना-100 ग्राम, गुलाब की पत्ती-50 ग्राम।

चर्म रोगों के लिए घरेलू उपचार–ये रोग विटामिन-C की कमी से होता है। सन्तरा, शिमला मिर्च, दही, अखरोट, नीम की पत्ती, कीवी, शकर-कन्द, नींबू व सभी खट्टे फल जैसे- मुँहासे व अन्य सभी चर्म रोग में लाभदायक है। **न खाएँ-**कच्चा नमक, चाय, चाकलेट, कोल्ड्रिंक, तली चीजें, मलाई, खोवा, अजनाइन एवं मांस इत्यादि। **पानी ज्यादा पियें।**

शरीर के विकार को दूर करने वाले भोजन–सभी खट्टे फल जैसे- नींबू, संतरा इत्यादि, शैलजम, शिमला मिर्च, अखरोट, हल्दी, काली मिर्च, लहसुन, खीरा, हरी गोभी (ब्रोकली), छिलके वाली दाल, गेहूँ की दलिया।

शरीर को ठंडा रखने वाले फल एवं सब्जियाँ– नारियल, खरबूजा, तरबूजा, संतरा, नींबू, आम, कीवी, सेब, खीरा, टमाटर, पत्तागोभी, ब्रोकली, कटहल, गेहूँ के ज्वार इत्यादि।

ऊपर लिखी चीजों को नित्य भोजन में शामिल कर बदल-बदल कर लेने से रोग जल्द ही दूर हो जायेंगे।

विक्रम संवत् 2081 का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 9 अप्रैल, मंगलवार, सन् 2024 ई. से हो रहा है। इस वर्ष में 'पिंगल' नामक संवत्सर होगा, नित्य संकल्प विनियोगादि में 'पिंगल' नामक संवत्सर का ही प्रयोग होगा।

राजा के महत्वपूर्ण पद पर धरती के पुत्र "मंगल" को अधिकार मिला है। तथा मंत्री का महत्वपूर्ण पद सूर्य पुत्र शनिदेव को मिला है। दोनों महत्वपूर्ण पद क्रूर ग्रहों के पास है। फलस्वरूप मनुष्यों को अग्निभय, चोरों का उत्पात, राजाओं में विग्रह होगा, मंत्री पद पर आसीन शनिदेव के कारण राजा लोग विनय रहित, जनता को दु:ख देने वाले, वर्षा की कमी से जनता को कष्ट, लोगों को धन सम्बन्धी सुख बहुत कम मिलेगा। विश्व में रोग वृद्धि होगी। अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में जन उपद्रव, अराजकता व गृह कलह उभरने के योग हैं। पश्चिमी प्रान्तों में साम्प्रदायिक अनेक आन्दोलन से शासन सत्ता में चिन्ता होगी। देश के अधिकतर भागों में रोगोपद्रव महामारी बढ़ने के कारक हैं। देश के अनेक भागों में धार्मिक व साम्प्रदायिक उपद्रवों से आतंक वृद्धि होगी। शासकों में आपसी कलह होकर मंत्रिमंडल में विवाद व हंगामों का वातावरण बार-बार होगा। जिससे विकास जन्य कामों में रुकावट रहेगी। उत्तरी पूर्वी प्रान्तों में तेज हवा के साथ हिमपात तथा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में कहीं वर्षा होगी। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिल में सामान्य वर्षा होगी। शीत का प्रकोप रहेगा। पश्चिमी राष्ट्रों में कहीं भयंकर अशांति का वातावरण रहेगा। किसानों के लिये परेशानी का कारण बनेगा। खड़ी फसलें खराब होंगी, पूर्वी प्रान्तों में भूकम्प अथवा तूफानादि एवं दक्षिणी प्रदेशों में अग्नि काण्ड, बारूद विस्फोट आदि गतिविधि रहेगी। विश्व के पश्चिम भूभाग में रोग वृद्धि एवं प्रकृति से प्रजा में भय रहेगा। केन्द्र में शासक नीति की सफलता का देश में सम्मान बढ़ेगा। समुद्र तट के क्षेत्रों में तूफान, चक्रवात का उत्पात होगा। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश पूर्वोत्तर, राजस्थान में सामान्य ओस की धुन्ध का वातावरण रहेगा। हिमपात, ओला, ठिठुरन तेज होगी। नेताओं में आपसी तनाव होकर अनेक आन्दोलन विग्रह तथा तोड़फोड़ व हानिकारक घटनाओं से जनता में आक्रोश व भयवृद्धि होगी। देश की कई प्रान्तीय सत्तारूढ़ पार्टी में विघटन हो सकता है। पूर्व व दक्षिण के प्रान्तों की चिन्ता बढ़ेगी। राजनैतिक दलों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। बम विस्फोट, यान दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि के संकेत हैं। विभिन्न देशों में राजनैतिक सम्बन्ध अकस्मात बिगड़ सकते हैं। कहीं घोर दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, भूटान के क्षेत्रों में हिमपात व वर्षा होगी, शीतलहर चलेगी। मौसम परिवर्तन के लक्षण उभरेंगे। पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात तथा तूफानी हवाओं से रोग होगा। आकाशीय स्थिति प्राय: धूमिल रहेगी। यूरोप के कुछ देशों में अशान्ति, युद्ध, आर्थिक उलझनों का लम्बे समय तक सामना करना पड़ेगा। यूरोप के प्रमुख देशों में अर्थ व्यवस्था की चर्चा विशेष बनेगी। राजनीतिक व्यक्तियों के लिये समय भयावह रहेगा। कहीं हत्याकाण्ड, कहीं गृह युद्ध से अशान्ति होगी। भारत में नई-नई प्रगतिप्रद योजनाओं का निर्माण होगा। भारत की शिक्षा पद्धति को नई दिशा मिलेगी। गोचर ग्रह स्थिति के अनुसार राष्ट्रपति पद की गरिमा बढ़ेगी। देश की सीमाओं पर शान्ति को भंग करने वाले देश से भारत को स्वयं निपटना होगा। प्रधान शासक की गरिमा (प्रतिष्ठा) बढ़ेगी। एवं भारतीय जनता पार्टी का पड़ला भारी रहेगा। तापमान में तेजी आयेगी। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक के कुछ स्थानों में वर्षा होगी। बिहार, उत्तर प्रदेश में बादल व बूंदाबाँदी हो सकती है।

शक्तिशाली राष्ट्रों रूस, चीन, अमेरिका तथा ईराक, ब्रिटेन में आतंकवाद का भय, शासकों में आपसी मतभेद उभरेगा। संवेदन शील क्षेत्रों में तथा सीमा प्रान्तों पर सैन्यबल तैनात करना पड़ेगा। पूर्वी एवं पश्चिमी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। नेपाल में माओवादियों व आई एस आई के बढ़ते सहयोग से भारत के सीमा प्रान्त प्रभावित होंगे। चीन, बंगला देश, पाकिस्तान की गतिविध पर ध्यान रखना पड़ेगा। कुछ मुश्किल राष्ट्र पर भयंकर युद्ध के समाचार मिलेंगे। किसी भी देश में युद्ध अवश्य होगा। लू व गर्मी का प्रकोप बहुत ज्यादा रहेगा। आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब के क्षेत्रों में ज्यादा गर्म रहेगा। उत्तरार्ध में सामान्य वर्षा के योग हैं। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से जनजीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। कहीं यान दुर्घटना, भूचाल से हानि, कहीं ज्वालामुखी विस्फोट किसी प्रभावी देश के विरुद्ध सोमालिया, चीन, फिलिस्तीन एवं रूस के किसी एक वर्ग द्वारा विरोध होगा। अर्थ व्यवस्था की धीमी विकास दर से बेरोजगारी को लेकर मजदूर वर्ग एवं किसानों को सरकार संघर्ष से रोक नहीं सकेगी। कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा की ग्रहस्थिति है। पूर्वी गोलार्ध में युद्ध का भय बनेगा। रूस, जापान, चीन, वर्मा, पूर्वी भारत एवं आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में तूफान, भूकम्प, भूस्खलन एवं हिमपात से जन-धन की हानि होगी। बादल चाल रहकर भी वर्षा नहीं होगी। तापमान अधिक रहेगा, महाराष्ट्र, उड़ीसा के पूर्वी क्षेत्र, बंगाल व असम में वर्षा तथा हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश में वर्षा अवरोध रहेगा। दक्षिण प्रान्तों में एवं उत्तर प्रान्त में प्रलयकारी वर्षा के योग हैं पाश्चात्य राष्ट्रों में आतंकवादी हरकतों से हानि व भय व्याप्त होगा। यूरोप के कई देशों में भी जनाक्रोश बढ़ेगा। केन्द्र स्थल व उत्तर प्रदेश, बिहार के क्षेत्रों में जनाक्रोश बढ़ेगा। अग्निकाण्ड से हानि, उग्रवादी ताकतों का दुष्प्रभाव बढ़कर शासकों को चिन्ता का कारण बनेगी। चीन, जापान, रूस, तिब्बत, वर्मा आदि राष्ट्रों से भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन धन की हानि होगी। विश्व के किसी राष्ट्र में प्राकृतिक आपदा जैसे भूकम्प, समुद्री तूफान आदि से भारी जन-धन की हानि हो सकती है। पर्वतीय क्षेत्र में भयंकर आपदा आ सकती है। एवं विकृति जन्य अनेक प्रकार के रोगों से जनता परेशान होगी। चीन में बाढ़, तूफान से विशेष हानि हो सकती है। दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश में वर्षा सामान्य होगी। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश में वायु के साथ अच्छी वर्षा होगी। असम, बंगाल, बिहार, कर्नाटक में अतिवृष्टि से लोग परेशान होंगे। काश्मीर में या हिमाचल में बादल फटने जैसी घटना हो सकती है। किसी भी क्षेत्र में अतिवृष्टि, प्राकृतिक आपदा विशेष होगी। देश के राजनेताओं में पद लोलुपता बढ़कर जनता को साम्प्रदायिक धार्मिक उद्वेगल हेतु प्रोत्साहित कर स्वकीय स्वार्थ की पूर्ति करेंगे। अरब, ईरान, ईराक तथा पाकिस्तान, अफगानिस्तान में शासकों को आपसी मतान्तर बनकर विग्रह होगा। पश्चिमोत्तर प्रांतों में नवीन क्रान्ति का उदय होकर जन उपद्रव से शासकों में भय की वृद्धि होगी। विपक्ष बल सबल होगा। पर्वतीय प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि होगी। बिहार में भयंकर बाढ़ की स्थिति एवं भारत के कुछ प्रान्तों में सूखा रहेगा। कृषकों के लिये कठिन परिस्थिति हो सकती है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश में आकाश साफ रहेगा। बंगाल, बिहार, मणिपुर, असम, अरुणाचल में भारी तूफान आने की संभावना है। दक्षिण पश्चिम के प्रान्तों में जोरदार वर्षा हो सकती है। बाढ़ से लोग परेशान हो जायेंगे। देश के महान पुरुषों या प्रधान शासकों के लिये कष्टप्रद रहेगा। शक्तिशाली राष्ट्र रूस, चीन, अमेरिका तथा ईराक, ब्रिटेन में आतंकवाद का भय रहेगा। अमेरिका और इग्लैण्ड की अन्य महाशक्ति के साथ मतभेद गहरा सकते हैं। खाड़ी देशों में तनाव होगा। अलकायदा समर्पित आतंकवाद दक्षिण पूर्व एशिया में जड़े मजबूत करने को उद्धत होगा। भारत नये-नये कायदे कानून बनाने की प्रेरणा देगा। देश में औद्योगिक प्रगति विशेष होगी। विश्व व्यापार जन्य कुप्रभावों का उपाकरण जनहितार्थ उपायों से पुन: चेतना प्राप्त करेगी। कहीं-कहीं वर्षा सामान्य होगी। वायुवेग का प्रकोप रहेगा। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर व बिहार के क्षेत्रों में वर्षा होगी। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, उत्तर प्रदेश में खण्ड वृष्टि के योग हैं। तापमान में गिरावट के साथ मौसम परिवर्तन हो सकता है।

पश्चिमी राष्ट्रों अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, ग्रीनलैण्ड आदि राष्ट्रों में युद्धोन्माद एवं शासकों में तनाव बढ़ेगा। मुस्लिम राष्ट्र एवं उत्तरी प्रान्तों में, पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। नेताओं में आपसी तनाव होकर अनेक आन्दोलन विग्रह तथा तोड़फोड़ व हानि कारक घटनाओं से जनता में आक्रोश व भय की वृद्धि होगी। देश के दक्षिण पूर्व राज्यों में पुन: सत्तारूढ़ पार्टी में मन मुटाव अथवा विघटन हो सकता है। केन्द्र सरकार के अथक प्रयासोपरान्त भी निर्वाचन जन्य स्थिति उभरेगी। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। पूर्वी प्रान्तों बंगाल, असम, बिहार, अरुणाचल, मेघालय आदि में तथा समुद्र तटीय नगरों में तूफान के साथ वर्षा होगी। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में खण्ड वर्षा होगी। उत्तरी क्षेत्रों में तापमान में गिरावट आयेगी। बादल चाल के साथ शीत वायु का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात अथवा ओला वृष्टि हो सकती है। मध्य भारत में वायु वेग रहेगा। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में वर्षा हो सकती है। आकाशीय बिजली से जन-धन हानि होगी। पाकिस्तान, ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैण्ड, अमेरिका, हालैण्ड, भारत आदि देश में महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में कमी नहीं होगी। एवं तलाकों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। किसी बड़े सैनिक टकराव या किसी राष्ट्र के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही का संकेत है। देश की शिक्षा व व्यावसायिक स्थितियों में नवीन परिवर्तन से दृढ़ता बढ़ेगी। आयात निर्यात के नये परिवर्तन से दृढ़ता बनेगी। आयात निर्यात के नये कानूनों में जनता को श्रेष्ठ लाभ होगा। शासकीय कर्मचारियों के लिये अच्छी खबर आयेगी। बादल चाल के साथ शीत वायु का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात अथवा ओला वृष्टि हो सकती है। मध्य भारत में वायु वेग रहेगा। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में वर्षा हो सकती है। विश्व के राजनैतिक स्तर में विशेष उतार-चढ़ाव रहेगा। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस आदि शक्तिशाली राष्ट्र में आपसी खिंचाव बनेगा। दक्षिण प्रान्तों के शासकों में आपसी मतभेद बढ़कर जनतंत्र में आक्रोश, विश्व में अघटित घटना किसी राष्ट्र विशेष में भूकम्प, जलप्लाव आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि होगी। बड़े देशों में एवं मुस्लिम राष्ट्रों की कुनीति से परोक्ष, युद्ध अप्रत्यक्ष युद्ध विकट रूप धारण करेगा। जिससे शांति भंग होगी। उत्तर में खड़ी फसलों को हानि, राजनीति के नये नये समीकरण बनेंगे। भारत की सेना का मनोबल बढ़ेगा। आसमान में धुन्ध हो सकती है। कई जगहों पर वर्षा भी हो सकती है। राजस्थान, गुजरात, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में लगातार बादल दिखाई देंगे। खण्ड वर्षा के साथ शीत प्रकोप बढ़ेगा।

शनि का वक्री होना दक्षिण पश्चिम के देशों में संक्रामक रोग फैलने की आशंका है। तथा मध्य भारत के कुछ क्षेत्रों में सूखा पड़ेगा। शनिवारी मिथुन की संक्रान्ति तथा शनि के वक्री होने के फलस्वरूप जून महीने में भीषण गर्मी पड़ेगी। हैदराबाद, औरंगाबाद के कुछ क्षेत्रों में अशांति की स्थिति होगी। किसी विशेष व्यक्ति के निधन का योग है। दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों में अग्नि तथा उपघात से जनधन की हानि होगी। विदेशी जासूसी सम्बन्धी कोई विशेष घटना सामने आयेगी। पश्चिमोत्तर प्रांत की जनता प्राकृतिक प्रकोप तथा राजनैतिक उपद्रव से त्रस्त रहेगी। उत्तरार्ध में कोई समुद्री दुर्घटना सम्भव है।

पृथ्वी पर पापियों का बोझ बढ़ता जा रहा है। एक दिन इन पापियों का सामूहिक दुर्भाग्य सभी को ले डूबेगा। विश्व के हर देश में धर्मात्मा सज्जन पूजा-पाठ में जुटे हैं। बस एक ही प्रार्थना सबके हृदय में है कि हे ईश्वर संसार का कल्याण करें, क्या उनकी प्रार्थना स्वीकार होगी या हम नंगी आँखों से मौत का ताण्डव देखेंगे।

—संपादक

ग्रहण विवरण

संवत् 2081, शाके 1946, सन् 2024 में कुल 3 ग्रहण लग रहे हैं। जिसमें 2 सूर्यग्रहण तथा 1 चन्द्रग्रहण है। भारत में कोई ग्रहण दृश्य नहीं होगा।

1. **खग्रास सूर्यग्रहण**—दिनांक 8 अप्रैल 2024 ई. सोमवार को लग रहा है, यह **सूर्यग्रहण भारत दृश्य नहीं है।** यह खण्ड सूर्य ग्रहण के रूप में अमेरिकी महाद्वीप तथा पश्चिम यूरोप, पैसफिक क्षेत्र, आर्कटिक, अन्टार्कटिका में दृश्य होगा तथा **खग्रास सूर्यग्रहण** के रूप में मेक्सिको, अमेरिका में दृश्य होगा। **खण्ड सूर्य ग्रहण** का प्रारंभ यूनिवर्सल समयानुसार (UT) **घं. 15 मि.42** पर होगा तथा इसका मोक्ष घं.20 मि.52 पर होगा। खग्राससूर्यग्रहण का प्रारंभ घं.16 मि.38 पर होगा तथा इसका मोक्ष घं.19 मि.56 पर होगा। इस ग्रहण का मध्य घं.18 मि.17 पर होगा। इसका ग्रासमान 1.36 होगा।

2. **खण्ड चन्द्रग्रहण**—दिनांक 17/18 सितम्बर 2024 ई. का **चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य नहीं है।** यूरोप अधिकांश मध्य एशिया, अफ्रीका, उत्तर व दक्षिण अमेरिका, अटलांटिक समुद्री क्षेत्र, हिन्दमहासागर, आर्कटिक तथा अन्टार्कटिका में दृश्य होगा। यह खण्डचन्द्रग्रहण चन्द्रास्त के समय मध्य एशिया से इसका प्रारंभ घं.2 मि.12 पर होगा तथा कनाडा के सुदूर पश्चिम क्षेत्र में चन्द्रोदय के समय इसका मोक्ष घं.3 मि.15 पर होगा। ग्रहण का मध्य घं.2 मि.45 पर होगा। इसका ग्रासमान 0.0848 होगा।

3. **कंकड़ाकृत सूर्यग्रहण**—दिनांक 2 अक्टूबर 2024 ई. का **सूर्यग्रहण भारत में दृश्य नहीं है।** यह ग्रहण अधिकांश दक्षिण व उत्तरी अमेरिका, पैसफिक क्षेत्र, अटलांटिक क्षेत्र, आर्कटिक क्षेत्र, अन्टार्कटिका में दृश्य होगा। खण्डसूर्यग्रहण के रूप में इसका प्रारंभ घं.15 मि.42 से सुदूर अमेरिका के पश्चिम समुद्री क्षेत्र से होगा तथा इसका मोक्ष घं.21 मि.47 पर होगा। सूर्यग्रहण का प्रारंभ घं.16 मि.50 पर होगा तथा इसका मोक्ष घं.20 मि.39 पर होगा। ग्रहण का मध्य घं.18 मि.44 पर होगा। इसका ग्रासमान 0.9326 होगा।

प्रयाग कुम्भ महापर्व

प्रयागराज में महाकुम्भ पर्व 12 वर्ष के अन्तराल पर होता है, '**मेषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभाकरौ। अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यः तीर्थनायकी॥ मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च बृहस्पती। कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः॥**' गुरु मेषराशि तथा सूर्य-चन्द्र के मकरराशि में होने पर ऐसा योग माघकृष्ण अमावस्या को होता है। उस समय प्रयाग में त्रिवेणी के संगम तट पर अमृत कणों की वर्षा होती है। किन्तु इस सन्दर्भ में एक अन्य श्लोक भी प्राप्त होता है। '**वृषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्या तदा योगः कुम्भाख्यः तीर्थनायकी॥ मकरे च दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ। प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुक्षये॥**' इसके अनुसार वृषराशि में गुरु और मकरराशि में सूर्य-चन्द्रमा के आने पर माघकृष्ण अमावस्या को प्रयागराज में महाकुम्भ पर्व होता है।

प्रयागराज में कुम्भ के तीन प्रमुख स्नान होते हैं—

1. प्रथम स्नान **मकर संक्रान्ति** (मेष या वृष में गुरु माघ माह में होने पर) 14 जनवरी, मंगलवार 2025।
2. द्वितीय स्नान **माघकृष्ण अमावस्या** (मुख्य स्नान, **मौनी अमावस्या**) 29 जनवरी, बुधवार 2025।
3. तृतीय स्नान **माघ शुक्ल पंचमी (बसन्त पंचमी)** 3 फरवरी, सोमवार 2025।

ज्योतिषकर्ता :
पं. श्री श्रीकान्त तिवारी
सामने घाट, वाराणसी
पं. श्री विशाल उपाध्याय
भदैनी, वाराणसी
पं. श्री पुनीत मिश्र
भरत नगर कालोनी, मौजा हाल, पंचक्रोशी मार्ग, पाण्डेयपुर, वाराणसी-7
श्री छेदीराम (ज्योतिर्विद)
भोजूबीर, सदर तहसील, वाराणसी
प्रकाशक :
रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-1
फोन-0542-2392543, 2392471
E-Mail : rupeshpanchang@gmail.com
मुद्रक : **भारत प्रेस**, कचौड़ीगली, वाराणसी-1

हर प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशक, मुद्रक एवं थोक विक्रेता—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी-1